Machine Translated by Google

khallaas

an a to Z guide to the underworld

j. dey

खल्लास

a glimpse into the world of dons, gangsters and cops

JAICO

Machine Translated by Google

खल्लास

अंडरवर्ल्ड के लिए एक ए से

जेड गाइड

Machine Translated by Google

खल्लास

अंडरवर्ल्ड के लिए एक ए से जेड गाइड

डॉन, गैंगस्टर और पुलिस की दुनिया पर एक नज़र

जे. डे

जैको पब्लिशिंग हाउस

अहमदाबाद बैंगलोर भोपाल भुवनेश्वर चेन्नई

Machine Translated by Google

दिल्ली हैदराबाद कोलकाता लखनऊ मुंबई

Machine Translated by Google

जैको पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित ए-2 जश चैम्बर्स,
7-ए सर फिरोजशाह मेहता रोड फोर्ट, मुंबई - 400 001
jaicopub@jaicobooks.com
www.jaicobooks.com

© जे. डे

खल्लास:
अंडरवर्ल्ड के लिए A से Z तक की गाइड
आईएसबीएन 978-81-7992-850-9

जैको का पहला प्रभाव: 2008
पांचवां जैको इंप्रेशन: 2011

प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी
रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक सहित
फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा
पुनरुत्पादित या उपयोग नहीं किया जा सकता है।

रिप्रो इंडिया
लिमिटेड प्लॉट नं. 50/2,
टीटीसी एमआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र महापे, नवी मुंबई - 400 710
द्वारा मुद्रित।

Machine Translated by Google

अंतर्वस्तु

परिचय

स्वीकृतियाँ

ए

बी

सी

डी

इ

एफ

जी

एच

मैं

जे

क

एल

एम

एन

Machine Translated by Google

पी

क्यू

आर

एस

टी

यू

वी

डब्ल्यू

एक्स, वाई और जेड

Machine Translated by Google

एक पुरानी कहावत को दोहराते हुए, मुंबई हर मिनट एक सपना पैदा करती है। सतह पर और उसके बाहर। पाइधोनी और डोंगरी की घुमावदार गलियों और मोहल्लों में, उन सपनों की अपनी भाषा और चरित्र है। अंधकारमय, निर्दयी और बेहद रोमांचक।

यहाँ कोई भी व्यक्ति तब भौंहें नहीं चढ़ाता जब पुलिस कांस्टेबल का बेटा 'भाई' बन जाता है, या कोई छोटा-मोटा चायवाला अपने मोहल्ले में हुकूमत चलाने लगता है। उनकी ज़िंदगी की कहानियों में एक ही धागा है: बिग डैडी बनने की शक्ति और महत्वाकांक्षा। गॉडफ़ादर।

बुरे लोगों की कहानियां फिल्मों में भी दिखाई गई हैं और देश की कल्पना को जगाया है। करीम लाला और हाजी मस्तान से लेकर माया डोलस और दाऊद इब्राहिम तक, लगभग हर कोई इसके नायकों की बदनामी और धन में जबरदस्त वृद्धि को देखकर आश्चर्यचकित है।

अपराध क्षेत्र में काम करने वाले पत्रकार के रूप में, मेरा कानून के रखवालों और अंडरबेली में रहने वालों के साथ लंबे समय से जुड़ाव रहा है। मैंने वर्दीधारी लोगों, अंडरवर्ल्ड में रहने वालों और ग्रे जोन में रहने वालों से बात करने में लंबे समय बिताए हैं - जो लोग पुलिस के मुखबिर के रूप में काम करते हैं।

मुंबई में अपराध की रिपोर्टिंग के एक दशक से ज़्यादा समय में मैंने जो कुछ देखा, सुना और महसूस किया, उसमें से बहुत कुछ छपा है। लेकिन कई वजहों से बहुत कुछ ऐसा भी था जो अनकहा रह गया। अक्सर, जब मैं अपने दोस्तों को ऐसी कहानियाँ सुनाता था जो पहले कभी नहीं सुनी गई होती थीं, तो वे खुशी से झूम उठते थे।

यह विरोधाभास जैसा लग सकता है, लेकिन अंडरवर्ल्ड में हमारे जैसे ही लोग रहते हैं, सिवाय इसके कि वे ज़्यादा किनारे पर रहते हैं। यह एक ऐसी दुनिया है जिसने अपनी खुद की भाषा भी बना ली है - कई ऐसी भाषाएँ जो प्रेरणा से उभरी हैं।

Machine Translated by Google

इस प्रकार, पुलिस, प्रतिद्वंद्वियों, जबरन वसूली, पुरस्कार और यहां तक कि बड़े मालिकों का वर्णन करने के लिए अंडरवर्ल्ड द्वारा उपयोग किए जाने वाले अद्वितीय व्युत्पन्न शब्द हैं, जिनमें से अधिकांश का उद्देश्य पुलिस या किसी विरोधी को बेवजह परेशान करना होता है।

यह एक ऐसी दुनिया है जो उद्यम की भावना पर भी फलती-फूलती है। यहां 'धंधे' के नियम समान रूप से लागू होते हैं - जोखिम, लाभ और प्रतिस्पर्धा इसके मूल में हैं। एक मुखबिर अपने प्रतिद्वंद्वी के बारे में अपनी कीमती जानकारी पुलिस को बेचने में कोई संकोच नहीं करेगा, अगर इससे उसे कुछ अच्छे पैसे या साख मिल सकती है। यहां नियम सीधे हैं और नैतिकता पवित्र है। उद्यमशीलता और सिस्टम को मात देने के नए तरीके ऐसे कौशल हैं जिन्हें वर्षों से पूर्णता तक निखारा जाता है।

अंडरवर्ल्ड भी सक्रिय रूप से खतरे और मौत को आमंत्रित करता है। कई मायनों में, इसने उस डर पर विजय प्राप्त की है जिसका सामना हम में से कई साधारण लोग करते हैं - इस पुस्तक को लिखने के दौरान, अंडरवर्ल्ड में मेरे चार सूत्र मारे गए - कुछ पुलिस की गोलियों से, अन्य अंतर-गिरोह प्रतिद्वंद्विता में।

आगे के पन्नों में मैं आपके साथ कुछ कहानियाँ साझा करूँगी जो आपको इस ब्रह्मांड से परिचित कराती हैं - जीवंत, गतिशील और हाँ, खतरनाक।

Machine Translated by Google

ये कहानियां और शब्द पिछले कई वर्षों में अंडरवर्ल्ड के हाशिये पर रहे सैकड़ों लोगों के साथ मेरी बातचीत से एकत्रित हुए हैं।

डी. शिवानंदन, जो उस समय केंद्रीय जांच ब्यूरो के संयुक्त निदेशक थे, ने मुझे महत्वपूर्ण आंकड़े उपलब्ध कराए। उन्हें मुझ पर भरोसा था और उन्होंने कई घंटे बिताकर मुझे अंडरवर्ल्ड के बारे में जानकारी दी।

मैं मुंबई में इंडियन एक्सप्रेस के स्थानीय संपादक उन्नी राजेन शंकर का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे अखबार में लगभग तीन वर्षों तक 'नोट्स फ्रॉम द अंडरवर्ल्ड' कॉलम लिखने के लिए प्रेरित किया।

मेरे वर्तमान नियोक्ता मिड डे ने मेरे साथ धैर्य रखा और मुझे पुस्तक को पूरा करने के कार्य पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति दी।

मैं मिनी पंत जकारिया, स्वेता रामानुजम दीक्षित, निकिल दीक्षित, मोहन भानुशाली, सतीश पुरोहित और मेरी पत्नी शुभा का ऋणी हूँ। उनके बिना, यह पुस्तक कभी पूरी नहीं हो पाती। मेरी माँ और बहन ने भी पूरे कमरे में बिखरे हुए ढेरों पाठों को धार्मिकता से व्यवस्थित किया।

स्वर्गीय श्रीमती कोरेया इतनी दयालु थीं कि उन्होंने बांद्रा में अपने गंदे घर को अंडरवर्ल्ड के कुछ लोगों के लिए मीटिंग स्थल के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति दी थी। मैंने मारे गए अमजद खान के कार्यालय को पुलिसकर्मियों के लिए मीटिंग स्थल के रूप में बदल दिया था। ज़िशान, योगेश और दिलीपभाई ने रिकॉर्ड बनाए रखने में मेरी मदद करने के लिए अपना पूरा प्रयास किया।

युवा प्रकाशक आकाश शाह और मुख्य संपादक रायसम शर्मा शुरू में अंडरवर्ल्ड विषय पर काम करने को लेकर सशंकित थे और नहीं चाहते थे कि गैंगस्टर उनके दफ़्तर में आएं। लेकिन उन्होंने इसे अपनाने का फ़ैसला किया।

Machine Translated by Google

डॉ. सत्यपाल सिंह, राकेश मारिया, परमबीर सिंह और प्रदीप सावंत जैसे अधिकारियों ने मुझे यह पुस्तक पूरी करने के लिए प्रेरित किया।

Machine Translated by Google

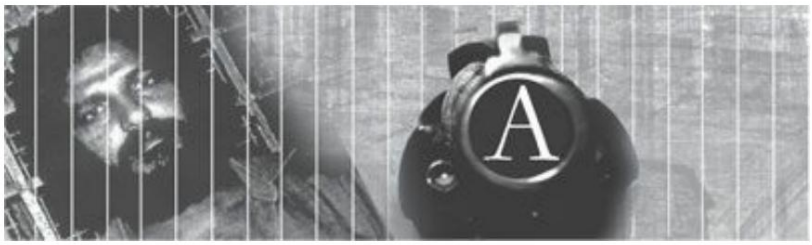

अंडे का फंडा

मुंबई की आर्थर रोड जेल का कड़ा सुरक्षा घेरा वाला खंड अंडा सेल, जो देश के सबसे खूंखार बदमाशों, मनोरोगियों और आर्थिक अपराधियों का घर है, सैकड़ों कहानियां समेटे हुए है।

इस सेल की उदास दीवारों में अबू सलेम, दाऊद इब्राहिम के भाई इकबाल, छोटा राजन के गुर्गे डीके राव, विक्की मल्होत्रा और फरीद तानाशाह जैसे गिरोह के बड़े लोग छिपे हुए थे। सेल की चार दीवारों के भीतर सैकड़ों भयावह साजिशें रची गईं और मुंबई की सड़कों पर किराए के लोगों द्वारा उन्हें अंजाम दिया गया।

यह डार्क सेल अंडे के आकार की बैरक में सिर्फ़ नौ खाली कमरे हैं, जिसकी वजह से इसका नाम अंडा पड़ा है। मूल रूप से 1926 में एकांत कारावास क्षेत्र के रूप में निर्मित, प्रत्येक सेल में अब दो कैदी रहते हैं। प्रत्येक सेल में एक टेबल पंखा और एक बिस्तर है। हाई-प्रोफाइल गैंगस्टर मोबाइल फोन और महंगे म्यूजिक सिस्टम जैसी सुविधाओं का भी लाभ उठाते हैं। अधिकतम सुरक्षा वाले क्षेत्र में आंतरिक और बाहरी बाड़ों पर गार्ड तैनात रहते हैं।

अंदर साबुन लगाओ

साबुन ने ओ.पी. को कैसे मार डाला

छोटा राजन के पूर्व सहयोगी ओम प्रकाश सिंह उर्फ ओपी उर्फ विल्सन ने एक ऐसा काम किया जिसे अपराधी एक घातक पाप मानते हैं - उसने अपने दो सहयोगियों को अपने चेहरे पर साबुन लगाने की अनुमति दी।

Machine Translated by Google

24 नवंबर 2002 की बात है। ओ.पी. नासिक जेल में रविवार की दोपहर स्नान का आनंद ले रहे थे। दो सहयोगियों ने उन्हें साबुन लगाया और नहलाया।

जल्द ही कुछ लोगों ने ओपी को शौचालय क्षेत्र में फर्श पर दबा दिया, जहां एक ने फंदा तब तक कस रखा जब तक उसकी मौत नहीं हो गई।

जेल के अंदर किसी साथी की हत्या करने के लिए बस कुछ सौ रुपए की जरूरत होती है।

जेल अधिकारियों ने मौत का कारण दिल का दौरा पड़ने को बताया। उन्होंने नासिक जेल के अंदर नायलॉन की रस्सी, क्रिकेट के सामान और कुछ हथियारों की तस्करी को छिपाने की कोशिश की।

अब्दुल कयूम करीम शेख

दाऊद इब्राहिम गिरोह का प्रमुख सदस्य जिसे 2006 के अंत में दुबई से भारत निर्वासित किया गया था।

केंद्रीय जांच ब्यूरो के पास उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार, शेख ही वह व्यक्ति था जिसने 9 एमएम कैलिबर की पिस्तौल पहुंचाई थी, जो 1993 में बॉलीवुड अभिनेता संजय दत्त के पास से मिली थी। यह पिस्तौल वास्तव में गैंगस्टर अबू सलेम ने संजय दत्त को पहुंचाई थी, जो 1993 के बम विस्फोट का भी आरोपी है।

माना जाता है कि शेख दुबई में अपने कार्यकाल के दौरान डी-कंपनी की गतिविधियों को संभाल रहा था। यह भी माना जाता है कि शो के लिए रेगिस्तानी राजधानी में आने वाली कई बॉलीवुड अभिनेत्रियों के साथ उसके संबंध थे।

दुर्घटना/स्वीकार (पुलिस द्वारा पीछा किया गया और गिरफ्तार किया गया)

जब कोई गैंगस्टर गिरफ्तार होने वाला होता है तो वह अपने साथियों को यह कहकर चेतावनी देता है कि 'एक्सीडेंट हो गया '। अगर उसे गिरफ्तार कर लिया जाता है तो वह कहता है 'एडमिट हो गया' ।

ये कोडित संदेश उसके साथियों को चेतावनी देने के लिए पर्याप्त हैं कि पुलिस उन्हें पकड़ लेगी।

Machine Translated by Google

जल्द ही उनका पता लगाया जाएगा। इस संकेत का मतलब अक्सर यह होता है कि अभी तक गिरफ्तार नहीं किए गए साथी अपने मोबाइल फोन त्याग देते हैं और किसी अन्य ठिकाने पर छिप जाते हैं ताकि ऐसी ही कोई 'दुर्घटना' या 'स्वीकृति' न हो।

आफताब अंसारी (फरहान भाई)

आफताब अंसारी अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम के लिए खतरा बनता जा रहा था।

दाऊद की तरह ही कोलकाता के अंसारी उर्फ फरहान भाई ने भी तीन साल के छोटे से अंतराल में मुंबई से काठमांडू और यहां तक कि दुबई तक अपना साम्राज्य फैला लिया। उसके साथियों को युद्धग्रस्त अफगानिस्तान में लश्कर-ए-तैयबा जैसे समूहों के साथ गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया था।

अंसारी, अपने गुरु बबलू श्रीवास्तव की तरह ही अपहरण में माहिर था। कोलकाता में शहर के दो शेयर दलालों, निरंजन शाह और खादिम समूह के मालिक पार्थो रॉय बर्मन का अपहरण, उसके कुछ 'सफल काम' थे। 2003 में दुबई में उसकी गिरफ्तारी के साथ ही उसकी नाटकीय वृद्धि पर काफी पहले ही रोक लग गई थी। उसी साल उसे भारत निर्वासित कर दिया गया था।

अली बुदेश (एनआरआई गैंगस्टर)

सड़क के गुंडे से डॉन तक, बहरीन स्थित गैंगस्टर अली बुदेश का उदय बहुत तेजी से हुआ।

भारतीय मां और अरब पिता की संतान बुधेश सत्तर के दशक के अंत में घाटकोपर में पंकेशाह बाबा दरगाह के पास एक जाना-पहचाना नाम था, जहाँ वह देश में अपने प्रवास के दौरान रहता था। अली, जैसा कि वह तब जाना जाता था, अक्सर विक्रोली पार्क साइट में कैरम क्लबों में विंटेज नॉर्टन मोटरसाइकिल चलाते हुए देखा जाता था। वह नियमित रूप से वहाँ सभी खिलाड़ियों के लिए सॉफ्ट ड्रिंक प्रायोजित करता था। स्थानीय लोगों का मानना था कि वह छुट्टी पर बहरीन से आया एक कस्टम अधिकारी था। लेकिन उसकी शानदार जीवनशैली ने जल्द ही उसे 1978 और 1980 के बीच इलाके के बदमाशों और जेबकतरों के बीच लोकप्रिय बना दिया। इन यात्राओं के दौरान ही बुधेश ने स्थानीय गुंडों के साथ संपर्क बनाए, जिनमें से कई नए-नए बने दाऊद इब्राहिम गिरोह से जुड़े थे।

Machine Translated by Google

बुदेश ने जल्द ही बड़े दांव लगाने शुरू कर दिए और अपने गुरु दाऊद इब्राहिम की तरह जबरन वसूली का धंधा करने लगा। इस धंधे में सुभाष सिंह ठाकुर और श्यामकिशोर गरिगापट्टी जैसे जाने-माने नाम उसके करीबी सहयोगी थे।

बुदेश के गिरोह को तब बड़ा झटका लगा जब उसका खास सहयोगी रफीक डब्बावाला मुठभेड़ में मारा गया। अरब से उसके संबंधों ने उसे बहरीन में सुरक्षित पनाहगाह पाने में मदद की।

अमीरजादा (अमीरजादा नवाब खान)

सईद बटला से हाथ मिलाने से पहले उसने मुंबई के रेड लाइट इलाकों में जेबकतरे के तौर पर काम करना शुरू किया था। जब पठान आलमजेब, जंजरेज खान और जाफर जमाल सिद्दीकी जैसे अन्य लोगों ने भी दाऊद के गिरोह के खिलाफ़ हाथ मिलाया, तो गिरोह और मजबूत हो गया, जिसे अक्सर कोंकणी कहा जाता है। दाऊद से भिड़ने से पहले पक्तूनी पठानों ने नागपाड़ा और आस-पास के इलाकों पर कब्ज़ा कर रखा था। अमीरजादा दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में मुख्य शूटर था।

प्राचीन औषधि मार्ग

सरगना नारी खान पहला व्यक्ति था जिसने मुम्बई में मादक पदार्थों की तस्करी के नए रास्ते खोलने के लिए सक्रिय रूप से अंडरवर्ल्ड का समर्थन मांगा था।

पाकिस्तान में जन्मे नूर मोहम्मद पठान उर्फ नारी खान का कारोबार मध्यम स्तर का था, जिसमें करीम लाला, इकबाल मिर्ची, मिनी मस्तान, लाल खान, मुबारक खान और माजिद जैसे दिग्गज शामिल थे, जो सभी अपनी हिस्सेदारी के लिए संघर्ष कर रहे थे। सीमा पार से ड्रग बाजार में हेरोइन और ब्राउन शुगर की बाढ़ आ गई थी। सबसे लोकप्रिय ब्रांड 777, 999 और बिच्छू (बिच्छू) थे।

कुछ ही समय बाद खान ने अपने मशहूर 555 ब्रांड की ब्राउन शुगर को बाज़ार में उतारा। यह बहुत हिट रही और पठान की किस्मत चमक उठी। 1990 में तस्करी के दौरान खान को मादक पदार्थ विरोधी जांचकर्ताओं ने गिरफ़्तार कर लिया और आर्थर रोड जेल भेज दिया। सलाखों के पीछे उसका समय एक भाग्यशाली मौका साबित हुआ क्योंकि वह अमर नाइक गिरोह के कुछ सदस्यों के संपर्क में आया।

Machine Translated by Google

गिरोह के नेता अमर नाइक उर्फ रावण के साथ खान के सहयोग ने उसे प्रतिद्वंद्वी तस्करों से खतरों को बेअसर करने के लिए आवश्यक ताकत प्रदान की, जिनमें से कई शहर के कई अंडरवर्ल्ड संगठनों में से एक से जुड़े थे।

नई-नई दोस्ती के कारण खान का कारोबार शहर में फैल गया। उन्होंने और अमर नाइक ने श्रीलंका और कनाडा में अपने संपर्कों का फायदा उठाकर मुंबई के लिए रास्ते खोले। 1990 के दशक के मध्य तक खान ने कोलाबा में एक ऑफिस भी खोल लिया था, जिसके संचालन प्रमुख ए. पटेल थे। अबू हमजा और हाजी पप्पू मुंबई के उत्तर-पश्चिमी उपनगरों में कारोबार की देखरेख करते थे।

इस बीच, खान ने अपना ज़्यादातर समय दक्षिण मुंबई के आलीशान होटलों में बिताया और उसकी जेबें सूखे मेवों से भरी रहीं। 11 अगस्त 1996 को विक्रोली के पास एक मुठभेड़ में उसे मार गिराया गया। उसके ठीक एक दिन बाद, उसके साथी अमर मारुति नाइक को एक अन्य मुठभेड़ में मार गिराया गया।

अमर नाइक

दो ग्लॉक पिस्तौल की कुंजी

यह 1995 के अंत की बात है। अपराध शाखा के अधिकारियों ने पूछताछ के लिए एक संदिग्ध को उठाया था और पूछताछ के दौरान, संदिग्ध से एक चाबी बरामद हुई, जो अब पुलिस का मुखबिर था।

संदिग्ध टूट गया और उसने कबूल किया कि चाबी खूंखार गैंगस्टर अमर नाइक की थी, जिसका गोरेगांव के बांगुर नगर में एक अपार्टमेंट था।

तत्कालीन पुलिस उपायुक्त (अपराध) राकेश मारिया ने बताया कि वह महज एक देखभालकर्ता थे।

संदिग्ध ने जांचकर्ताओं को बताया कि घर की एकमात्र अन्य चाबी नाइक के पास थी। दो लोगों के अलावा, किसी को भी उस गुप्त अपार्टमेंट के बारे में पता नहीं था, जहां नाइक सप्ताह में एक बार आता था। नाइक आखिरी बार तीन दिन पहले फ्लैट में आया था।

रात के 11.15 बजे थे। मारिया ने समय बरबाद नहीं किया। उसने दो पुलिस अधिकारियों को गुप्त रूप से अपार्टमेंट में घुसने और नाइक का इंतज़ार करने के लिए नियुक्त किया। रात 1.15 बजे तक दोनों अधिकारी अपार्टमेंट में थे। वे कुछ प्रावधान साथ लेकर आए थे क्योंकि उन्हें वहाँ कुछ दिन बिताने थे।

Machine Translated by Google

सुबह 7.30 बजे मारिया को एक फोन आया जिसमें बताया गया कि नाइक भाग गया है।

नाइक फ्लैट में घुसा था और जब उसने अपने फ्लैट में एक अजनबी को पाया तो वह हैरान रह गया, जैसा कि पुलिस अधिकारी ने किया, जिसे नाइक के इतनी जल्दी आने की उम्मीद नहीं थी। दोनों एक पल के लिए स्तब्ध रह गए। नाइक ने अपने दाहिने कंधे पर टंगे सूती स्लिंग बैग में अपना दाहिना हाथ डालने की बेतहाशा कोशिश की। लुंगी पहने अधिकारी उसे ऐसा करने से रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था। गैंगस्टर ने अचानक बैग छोड़ दिया और सीढ़ियों से नीचे भाग गया। पुलिस अधिकारी अपनी लुंगी की वजह से मुश्किल में पड़ गया। बैग में दो अत्याधुनिक ग्लॉक पिस्तौल, तीन पासपोर्ट और कुछ बैंक पासबुक थे।

जांचकर्ताओं को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि नाइक ने अमेरिका, कनाडा, नीदरलैंड, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका की यात्रा की थी। उसके पांच लाख रुपये से अधिक जमा वाले बैंक खाते भी फ्रीज कर दिए गए थे।

महज आठ महीने बाद, 10 अगस्त 1996 को, विदेश भागने से पहले ही नाइक एक मुठभेड़ में मारा गया।

अनार (ग्रेनेड)

अनार या अनार का मतलब अंडरवर्ल्ड में बम होता है। ये दोनों एक जैसे दिखते हैं, लेकिन मुंबई में इनका इस्तेमाल बहुत कम होता है। गैंगस्टर अशोक जोशी ने 1988 में कंजुरमार्ग पुलिस द्वारा धोखा दिए जाने और गिरफ्तार किए जाने के बाद चिल्लाते हुए कहा था, " अनार फोड़ दूंगा" ।

अनिल परब (रोबिन)

परब का ऑटोरिक्शा चालक से शीर्ष रैंकिंग शूटर में परिवर्तन अभूतपूर्व था। 1984 और 1987 के बीच, परब चार गोलीबारी में शामिल था, जिसने सुप्त कंजूर गांव को हत्या के मैदान में बदल दिया। वह न केवल अशोक जोशी का भरोसेमंद लेफ्टिनेंट बन गया, बल्कि खुद को कॉन्ट्रैक्ट किलर के एक खूंखार समूह के साथ पाया, जिसमें सदा पावले, केशव उत्चिल, विनय करंजेकर, पांडुरंग माडवी, योगेश पराडकर और किरण शामिल थे।

Machine Translated by Google

वालावलकर.

लेकिन 1987 में यह गैंगलैंड दोस्ती तब खत्म हो गई जब अशोक जोशी ने परब पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया। हालांकि हमले के समय उसके गिरोह के सदस्य मौजूद थे, लेकिन कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया। गिरोह के सदस्यों द्वारा निराश किए जाने के अपमान ने परब को छोटा राजन की बाहों में धकेल दिया, जो उस समय दाऊद का एक प्रमुख सहयोगी था। परब ने न केवल पक्ष बदला, बल्कि 4 दिसंबर, 1988 को पनवेल के पास कालोके गांव में अशोक जोशी की हत्या में शामिल शूटरों की एक टीम में शामिल होकर जवाबी हमला भी किया। गोलीबारी के बाद उसके पास दुबई भागने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।

1993 में जब राजन दाऊद से अलग हो गया, तो परब ने राजन को छोड़ दिया। 1995 में परब पर अपनी पत्नी नेहा की हत्या की साजिश रचने का आरोप लगा, जब वह 1995 में दुबई से लौटी थी। परब को शक था कि उसकी पत्नी का दाऊद इब्राहिम के साथ विवाहेतर संबंध है।

परब जल्द ही डी-कंपनी में अपनी उपयोगिता से बाहर हो गया और उसे 21 अप्रैल, 2003 को भारत निर्वासित कर दिया गया। वह 6 जून, 1984 को जोशी के इशारे पर एक व्यवसायी हंसराज शाह पर गोली चलाने के लिए आजीवन कारावास की सजा काट रहा है।

अन्ना (शरद शेट्टी)

शरद राजन्ना शेट्टी डी-कंपनी के वित्तीय सलाहकार और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट सट्टेबाजी सिंडिकेट के लिए अंडरवर्ल्ड के प्रमुख लिंक थे। अन्ना डी-कंपनी के उन चंद लोगों में से एक थे जो दाऊद से दोस्त की तरह बात कर सकते थे या उसे उसके नाम से बुला सकते थे।

शेट्टी उर्फ अन्ना, जैसा कि वह मुंबई और मैंगलोर के होटल व्यवसायियों के बीच जाना जाता था, माफिया डॉन दाऊद इब्राहिम को क्रिकेट सट्टेबाजी के बारे में सलाह देने वाला प्रमुख व्यक्ति था।

पिछले कुछ सालों में दाऊद-शेट्टी की साझेदारी के कारण कई लोगों की मौत हो चुकी है। शेट्टी उस साजिश में शामिल था जिसके चलते 16 सितंबर 2000 को बैंकॉक में उसके प्रतिद्वंद्वी डॉन छोटा राजन पर हमला हुआ था।

1986 में होटल व्यवसाय को चलाने को लेकर हुई दुश्मनी के बाद शेट्टी ने

Machine Translated by Google

जयंत शेट्टी और अरविंद ढोलकिया ने सेंट्रल मुंबई में पुलिस लॉकअप में पूर्व डॉन बाबू रेशिम की हत्या के लिए एक छोटे गुंडे विजय कंजरी को काम पर रखा था। ऐसा माना जाता है कि शेट्टी पाकिस्तान में भट्टी बंधुओं की हत्या में भी शामिल था, जिनकी हत्या दाऊद को अंडरवर्ल्ड की आय में से अपना हिस्सा दिलाने के लिए की गई थी।

इन मामलों के अलावा, पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि शेट्टी का नाम कम से कम तीन अन्य हत्याओं में भी शामिल है। इनमें से सबसे प्रमुख है 1997 में कांदिवली में होटल व्यवसायी रामनाथ पयार्दे की हत्या। उसके कुछ अन्य लक्ष्यों में पश्चिमी उपनगरों का एक व्यक्ति लक्ष्मण और जौहरी प्रभाकर आचार्य शामिल हैं।

शेट्टी के पास जोगेश्वरी में एक शॉपिंग सेंटर और दुबई में एक होटल भी था। 19 जनवरी 2002 को दुबई में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन के गुर्गों ने उसे गोली मार दी थी।

अनवर यूसुफ शेख (मामाजी/अन्नू/बादशाह)

1996 में उसे उसके बहनोई मोहम्मद अली कंजरी उर्फ विक्रम परमार, जो माफिया नेता छोटा शकील का विश्वासपात्र साथी था, ने अपराध जगत में शामिल किया।

इस मायावी गैंगस्टर ने जल्द ही खुद को नीलेश कोकम और चांद मस्तान उर्फ कंजरी जैसे कुछ शीर्ष हिटमैन के साथ गठबंधन में पाया। जब छोटा शकील शहर में राजनेताओं के बीच आतंक फैलाना चाहता था, तो खूंखार गैंगस्टर तुरंत पसंद किया जाता था। 16 जुलाई, 2000 को प्रफुल भोसले के नेतृत्व वाली एक टीम ने मुठभेड़ में बादशाह को मार गिराया।

कलाकार (निशानेबाज)

पेंट और ब्रश के बारे में सोचना छोड़ दें। अंडरवर्ल्ड में एक कलाकार, काम पूरा करने के लिए बंदूक चलाता है और अपने हुनर के लिए कीमत वसूल सकता है, जैसा कि फिरोज कोंकणी ने किया। सबसे ज़्यादा भुगतान पाने वाले कलाकार कोंकणी को एक काम के लिए 50,000 रुपये मिलते थे, जबकि आम शूटरों को एक काम के लिए सिर्फ़ 5,000 रुपये मिलते थे।

एक अनुबंध हत्या के लिए उसे जो भारी कीमत मिली थी, उसके अलावा फिरोज

Machine Translated by Google

कोंकणी को अंधेरी में वर्सोवा के पास एक कार और फ्लैट भी दिया गया था। अपराध जगत में उसका उदय 1998 में उसके लापता होने जितना ही रहस्यमय था। ऐसा माना जाता है कि उसे उसके पूर्व गुरु छोटा शकील के कहने पर मारा गया था। एक स्थानीय गुंडे से, वह 1990 के दशक के मध्य में 18 से अधिक हत्याओं में नामजद हुआ, जिससे वह छोटा शकील गिरोह में सबसे अधिक भुगतान पाने वाले कलाकारों में से एक बन गया। शहर भर में डकैती, छुरा घोंपने और गोलीबारी के 30 मामलों में भी उसका नाम है।

तीन भाइयों और एक बहन के परिवार में तीसरे नंबर के कोंकणी ने 1988 में नौवीं कक्षा में पढ़ते समय वडाला में शेख मिस्त्री दरगाह के पास म्युनिसिपल स्कूल की पढ़ाई छोड़ दी थी। स्कूल छोड़ने के बाद वह डोंगरी की सड़कों पर एक लड़के के रूप में काम करते हुए सादगी से रहता था। वडाला के शेख मिस्त्री रोड के इस 16 वर्षीय लड़के को डोंगरी के निशांतपाड़ा रोड पर एक शराब तस्कर को चाकू मारने के बाद लगभग रातोंरात फिरोज दादा का दर्जा मिल गया। यह दुस्साहस किसी की नजर में नहीं आया। उसकी क्षमता को पहचानते हुए, गैंगस्टर छोटा शकील ने फिरोज को अपने गिरोह में भर्ती करने में कोई समय बर्बाद नहीं किया। उसने जल्द ही पुलिस के मुखबिर सनी मनन को मार डाला। इसके बाद 1993 के दंगों के दौरान डोंगरी में एक मथाडी कार्यकर्ता की हत्या कर दी गई। लेकिन उसका सबसे बड़ा कारनामा तब हुआ जब उसने 1994 में भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामदास नायक को बांद्रा में गिरा दिया। अचानक, वह मुंबई के अंडरवर्ल्ड के दिग्गजों में एक जाना-माना नाम बन गया। वह 6 मई 1998 को जेजे अस्पताल से भाग गया।

अरविंद ढोलकिया की हत्या

ढोलकिया भाइयों के पास खार में सीजर पैलेस होटल था। इसकी सजावट बहुत ही शानदार थी और यह किसी सेट डिजाइनर के लिए सपना हो सकता था। यह वेश्याओं के साथ खुलकर बातचीत करने या उनके साथ नाचने के लिए एक सुरक्षित ठिकाना था, अर्ध-अंधेरे हॉल में तेज संगीत के साथ पत्नी को पता चले बिना - यह सब करते समय बाउंसर किसी भी संदिग्ध चीज पर नजर रखते थे।

बॉस महेश ढोलकिया खुद अक्सर बंदूकधारी गुर्गों के साथ घूमता रहता था। लेकिन उसके छोटे भाई अरविंद को उसके भाई महेश की मौत के दो महीने बाद ही अंडरवर्ल्ड के नाटकीय अंदाज में गोलियों से भून दिया गया।

यह अत्यंत पेशेवर हत्या रात 8 बजे के आसपास की गई, जबकि सीज़र पैलेस में अनैतिक व्यापार अपने चरम पर था।

Machine Translated by Google

दो बंदूकधारी एक मारुति कार से उतरे और काउंटर पर ढोलकिया से मिले।
दोनों से बातचीत करने के बाद, सरगना हमलावरों के साथ अपने केबिन में चला गया और अंगरक्षकों को वहीं छोड़ दिया।

कुछ ही मिनटों में केबिन से गोलियों की आवाजें गूंजने लगीं, जिससे बार में बैठे ग्राहक और आस-पास के कमरों में बैठे जोड़े भाग खड़े हुए। अंगरक्षक मौके पर पहुंचे, लेकिन हमलावर भाग चुके थे और अरविंद ढोलकिया की मौत हो चुकी थी। तारीख थी 1 दिसंबर, 1987।

ढोलकिया ने चंदनवाड़ी श्मशान घाट पर चिता जलाते समय घोषणा की थी कि वह अपने भाई महेश की हत्या में शामिल सभी लोगों को खत्म कर देगा। दूसरी थ्योरी यह थी कि उसने बांद्रा में रामा शेट्टी नामक व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज कराने के बाद उसके बार पर कब्जा कर लिया था। नतीजतन, बार मालिक सड़कों पर आ गया और उसने अपमान का बदला लेने की कसम खाई।

अशर्फीबी (अंतिम जुआ)

मारे गए पठान गिरोह के लेफ्टिनेंट महमूद कालिया की खूबसूरत विधवा अशर्फीबी (जिन्हें सपना दीदी के नाम से भी जाना जाता है) ने दाऊद से मिलने की उम्मीद तब छोड़ दी थी, जब 22 फरवरी, 1990 को अरुण गवली के छोटे भाई किशोर गवली उर्फ पापा की दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

उसे यकीन था कि उसके पति की हत्या में दाऊद का हाथ है। पापा के साथ साजिश बुरी तरह से गलत साबित हुई थी। अपने पति की मौत का बदला लेने के लिए अशरफीबी का संकल्प तब और मजबूत हुआ जब उसकी मुलाकात शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ उस्तारा (हिंदी में उस्तरा) से हुई।

हुसैन स्वाभाविक सहयोगी थे, क्योंकि 1995 में उनका भी दाऊद से टकराव हुआ था।

हुसैन ने अगले छह महीने अशरफीबी को अपने गुप्त ठिकाने, पाइधोनी के तहखाने में प्रशिक्षण देने में बिताए। यह सुंदरी जल्द ही किसी भी हथियार का इस्तेमाल कर सकती थी - मौसर से लेकर एके 47 असॉल्ट राइफल तक - एक तथ्य जिसकी पुष्टि बाद में गैंगस्टर ने खुद की थी।

अशरफीबी ने एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान दाऊद को आश्चर्यचकित करने की साजिश रची

Machine Translated by Google

संयुक्त अरब अमीरात के शारजाह में क्रिकेट मैच। हुसैन ने अपने विदेशी संपर्कों का उपयोग करते हुए पुष्टि की कि दाऊद और उसके निहत्थे साथी रेगिस्तानी शहर में क्रिकेट मैचों के नियमित दर्शक थे। जब वह और उसके साथी खेल में डूबे होते तो डॉन को चाकू मारना आसान होता।

मजबूत कद-काठी वाले अशरफीबी ने इस काम को अंजाम देने के लिए खुद को तैयार कर लिया। हुसैन के ठिकाने पर शारजाह स्टेडियम का एक प्रोटोटाइप बनाया गया। हुसैन और उसके आदमियों ने दाऊद को आश्चर्यचकित करने के लिए बारीक-बारीक योजना बनाई। लेकिन दाऊद को जल्द ही योजना का पता चल गया। छोटा शकील को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया कि अशरफीबी मारा जाए।

अशोक जोशी

अशोक जोशी की कहानी मध्य मुंबई के डॉन रामा नाइक की मौत से शुरू होती है, जिसके बाद दाऊद इब्राहिम जोशी को अपना नया दुश्मन मानने लगा।

लंबे, दुबले गैंगस्टर ने टेम्कर मोहल्ला की 'यंग कंपनी' के सदस्यों को खत्म करने की कसम खाई थी और उसने सबसे पहले दाऊद के सहयोगी सतीश राजे की दिनदहाड़े हत्या कर दी।

जल्द ही जोशी ने विचित्र कंजूर गांव को एक बड़े हत्याकांड के मैदान में बदल दिया, जहां दो साल से भी कम समय में 20 से अधिक हत्याएं हुईं। किंवदंती है कि 1980 के दशक में, पूर्व पूर्वी भारतीय बस्ती में कॉलेजों की तुलना में अधिक किशोर अंडरवर्ल्ड में शामिल हो रहे थे। उनका प्रभाव ऐसा था कि दो साल के भीतर जोशी के पास युवाओं की एक सेना थी जो उनके लिए अपनी जान कुर्बान करने को तैयार थी, जिसमें केशव उचिल उर्फ अन्ना, योगेश पराडकर, अनिल परब उर्फ रॉबिन, विनय करंजीकर, किरण वालावलकर, पांडुरंग माडवी और सुधीर सुर्वे शामिल थे।

जोशी कंजुर मार्ग के अपराधियों का बड़ा पिता क्यों बन गया, यह समझना मुश्किल नहीं है। वह अपनी लूट का माल आपस में बाँटता था और बहुत ही सादा जीवन जीता था। जैसे-जैसे जोशी की ताकत बढ़ती गई, कंजुर के मछली पकड़ने वाले गाँव के अपराधी मध्य मुंबई के दगड़ी चाल के उत्तरी विस्तार में बदल गए। मौत के वारंट पर मनमाने ढंग से हस्ताक्षर किए जाते थे और हत्याएँ आम बात थीं। दाऊद के गुर्गों ने, जिनमें से लगभग दो दर्जन के पास उतनी ही बंदूकें थीं, जोशी को 4 दिसंबर, 1988 को पनवेल के पास पुराने मुंबई-पुणे राजमार्ग पर कालोके गाँव में मारुति वैन में घेर लिया। बाद में उनके चार साथियों के साथ गोलियों से छलनी उनकी लाश मिली।

Machine Translated by Google

राजमार्ग पर।

अथैस (28)

अट्ठाईस अंडरवर्ल्ड में शराबियों के लिए एक संक्षिप्त नाम है। यह शराब से भी जुड़ा हुआ है। यह शब्द, जो ज़्यादातर दक्षिण मुंबई के डोंगरी और भिंडी बाज़ार इलाकों में इस्तेमाल किया जाता है, 1950 के दशक के आखिर में चाइना पेटी नामक शब्दों के खेल के दौरान पैदा हुआ था।

Machine Translated by Google

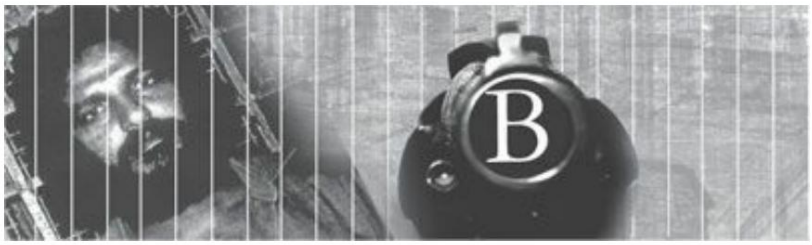

बबलू श्रीवास्तव (मुंबई में एक असफलता)

ओम प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ बबलू मुंबई के अंडरवर्ल्ड में कुछ खास नाम नहीं बना सका। शहर की अनोखी भौगोलिक स्थिति उसके और उसके गिरोह के लिए बहुत उलझन भरी थी।

उन्होंने 1992 में दक्षिण मुंबई के गामदेवी से व्यवसायी दिलीप जैन के अपहरण की साजिश रची थी। पीड़ित को चेंबूर में छोड़े जाने से पहले उपनगरीय जुहू के पास एक ठिकाने पर ले जाया गया था।

श्रीवास्तव ने अपने प्रमुख सहयोगियों संजय खन्ना और विक्रम तिवारी के साथ मिलकर इस ऑपरेशन की योजना बनाई थी, जो जल्द ही मध्य मुंबई में एक मुठभेड़ में मारा गया।
मुंबई के अंडरवर्ल्ड में पैठ बनाने का उनका अंतिम प्रयास तब विफल हो गया जब 18 अगस्त 1997 को उनके सहयोगी शाहिद और दिनेश की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

विक्रम वाही, मन मोहन सहगल और स्वेता के गिरोह ने 21 जून 1994 को नरीमन पॉइंट में एयर इंडिया बिल्डिंग के पास व्यवसायी विश्वनाथ मित्तल का अपहरण करने की कोशिश की। यह मिशन फिर से विफल हो गया क्योंकि मुंबई में गिरोह के संपर्क अमित कटियार और अशोक तिवारी ने गलती की थी। पुलिस ने कुछ ही घंटों में बदमाशों को पास के एक होटल से पकड़ लिया।

बाबा रेड्डी

छोटा राजन और नाना कंपनी को पहली बार वेंकटेश बुग्गा रेड्डी उर्फ बाबा रेड्डी उर्फ मोहम्मद भाई में संभावनाएं दिखीं, जब उसे 1997 में गिरफ्तार किया गया था।

Machine Translated by Google

यह सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था की गई कि रेड्डी देश से भाग जाए और राजन के लेफ्टिनेंट संतोष शेट्टी से हाथ मिला ले।

रेड्डी - जो मुक्केबाजी चैंपियन माइक टायसन जैसा दिखता था, जिसकी छाती 46 इंच और कमर 36 इंच थी - जल्द ही खुद को मलेशिया के एक खूबसूरत द्वीप पर रहने वाले 'क्लिंटन' या नकली डॉलर के कारोबार में पाया और मुंबई में अपने पुराने लक्ष्यों को फोन करना शुरू कर दिया।

राजन उर्फ सेठ को उस समय बहुत गुस्सा आया जब मुंबई में उसके साथियों ने उसे बताया कि
रेड्डी का 'दुष्कर्म'

रेड्डी जल्द ही शेट्टी से अलग हो गए। लेकिन इससे पहले उन्होंने मलेशियाई द्वीप पर शेट्टी के बंगले को तहस-नहस कर दिया था।

लेकिन गैंगस्टर बूढ़े कुत्तों की तरह होते हैं जिन्हें नई तरकीबें नहीं सिखाई जा सकतीं। रेड्डी जल्द ही फिर से जबरन वसूली के अपने पसंदीदा काम में लग गया।

उन्हें आंध्र प्रदेश के हैदराबाद में गिरफ्तार किया गया था। उनके पास से 14 से ज़्यादा अत्याधुनिक हथियार बरामद किए गए थे। उन्हें 28 सितंबर 2007 को ज़मानत पर रिहा कर दिया गया था।

बाबू रेशिम (बाइकुला कंपनी के वास्तुकार)

बाबू रेशिम शहर में संगठित माफिया सिंडिकेट्स की आधारशिला रखने के लिए जिम्मेदार थे।

1975 में मज़गांव स्थित जहाज निर्माण कार्यशाला में एक साधारण कैंटीन कर्मचारी से लेकर, अपराध की दुनिया में रेशिम का उदय बहुत स्थिर रहा।

दुबई स्थित गैंगस्टर शरद शेट्टी, अप्पू शेट्टी और महेश ढोलकिया ने प्रतिद्वंद्वियों पर जवाबी हमले की योजना बनाने के लिए विक्रम कंजरी को काम पर रखा था। रेशिम भाग्यशाली था कि 1987 में बायकुला के एक्स-लेन में उसकी हत्या की कोशिश की गई, जिससे वह बच गया।

उसी साल विजय कंजरी, राजू भैया, महेश मस्कर और अप्पू शेट्टी ने हथगोले और आग्नेयास्त्रों के साथ सात रास्ता या जैकब सर्किल स्थित पुलिस लॉकअप पर हमला कर दिया था, जिसके बाद उनकी हत्या कर दी गई थी। हालांकि शरद शेट्टी एक करीबी व्यक्ति थे।

Machine Translated by Google

दाऊद इब्राहिम के सहयोगी के रूप में, वह मध्य मुंबई में रामा नाइक और रेशिम के प्रभाव से ईर्ष्या करता था, जिसके परिणामस्वरूप 5 मार्च 1987 को उनकी हत्या कर दी गई।

बड़ा काला कोट

बड़ा काला कोट अक्सर अंडरवर्ल्ड की भाषा में जज को संदर्भित करता है। बड़ा (बड़ा) जज की स्थिति को दर्शाता है।

बड़ा रुपैया

इसका मतलब खोका (एक करोड़) हो सकता है। गैंगलैंड की शब्दावली आमतौर पर गिरोह के सदस्य और वह किससे बात कर रहा है, इस पर निर्भर करती है। अगर उत्तर प्रदेश का कोई गैंगस्टर दक्षिण महाराष्ट्र के कोंकण के किसी गैंगस्टर से बात कर रहा है, तो भाषा अलग होगी। गैंगस्टर छोटा राजन को हमेशा खोका शब्द का इस्तेमाल करते सुना जाता है। अबू सलेम गिरोह के सदस्य बड़ा रुपैया कहते थे।

बाजा (संगीत वाद्ययंत्र)

बाजा या संगीत वाद्ययंत्र का इस्तेमाल अक्सर हैंडगन के लिए किया जाता है। यह नाम इस तथ्य से लिया गया है कि जब बंदूक चलाई जाती है तो आवाज़ आती है, ठीक वैसे ही जैसे स्विच ऑन करने पर संगीत वाद्ययंत्र आवाज़ करता है।

बकरी (बकरी)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में बकरी का अर्थ है हत्या के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कार या कोई भी चार पहिया वाहन।

बकरी डब्बा

किसी गैंगस्टर की गिरफ़्तारी को बकरी डब्बा कहते हैं। अगर आप शब्दों को अलग-अलग करें तो

Machine Translated by Google

इससे स्पष्ट हो जाता है कि क्यों: बकरी का अर्थ है बलि का बकरा और डब्बा का अर्थ है पिंजरा।
जब किसी गैंगस्टर को गिरफ्तार कर पुलिस वैन में ले जाया जाता है तो ऐसा लगता है जैसे पिंजरे में बंद बकरी हो।

बाली का बकरा

29 जून, 1998. सौम्य संयुक्त पुलिस आयुक्त डी. शिवानंदन, अपराध शाखा कार्यालय के ग्रेनाइट गलियारे में कार्यभार संभालने के लिए दाखिल हुए ही थे कि उनका मोबाइल फोन बज उठा।

भारतीय पुलिस सेवा के 1976 बैच के अधिकारी के लिए यह बुरी खबर थी।

इससे कुछ मिनट पहले, छोटा राजन के आदमियों ने 1993 के मुंबई बम विस्फोट के आरोपी मोहम्मद जिंद्रन और उसके दोस्त कृष्ण पांडे की खार में गोली मारकर हत्या कर दी थी।

"बलि का बकरा तो नहीं बन गया हूं मैं?" शिवानंदन ने तर्क दिया, जिन्हें लगता था कि इन गोलीबारी से उनका करियर बर्बाद हो जाएगा।

बदलाव की शुरुआत 11 नवंबर 1998 को दादर के पास छोटा राजन के चार गुंडों को मार गिराने से हुई। शिवानंदन याद करते हैं, "वाकई यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था।" बाद में, शिवानंदन के आदमियों ने 1998 से 2000 के बीच उनके कार्यकाल के दौरान 204 गुंडों को मार गिराया। अब कोई पूछ सकता है, "बकरा कौन?" (पीड़ित कौन है?)

बापट

अमर नाइक कुख्यात बापट गिरोह का नेता था जिसे सीताराम दादा ने 1970 के दशक में शुरू किया था और दादर इलाके में इसका दबदबा था। दादर के थोक सब्जी बाजार में बापट आज भी एक अनौपचारिक मुद्रा है।

70 के दशक में दादर की सब्जी मंडी और भीड़-भाड़ वाली सड़कें वलगी-पालगी और गोल्डन गैंग के बीच नियमित लड़ाई का स्थल बन गईं।

वलगी-पालजी गिरोह का नेतृत्व दिलीप रामजी बोरिचा उर्फ वलगी कर रहा था।
चंद्रकांत कोपड़े उर्फ बाब्या द्वारा गोल्डन गैंग, जिसे आशीर्वाद प्राप्त था

Machine Translated by Google

वर्धराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई.

वाल्गी ने 1972 में पूर्व नेता सीताराम दादा से बागडोर संभाली थी।
अमर नाइक ने वाल्गी से पदभार संभाला।

गोल्डन गैंग का उदय इस बात की ओर इशारा करता है कि अंडरवर्ल्ड अपने इलाकों पर कितना अविश्वसनीय रूप से कब्ज़ा जमाए हुए था। चंद्रकांत खोपड़े कहते हैं, ''हर गिरोह माफिया के संरक्षण के पैसे का बड़ा हिस्सा व्यापारियों और मटका संचालकों से मांग रहा था।''

नाइक 10 अगस्त 1996 को एक मुठभेड़ में मारा गया और उसके बाद उसके छोटे भाई अश्विन ने अभियान की कमान संभाली।

1983 बैच

पिछले कई वर्षों से मुंबई में अंडरवर्ल्ड की बढ़ती लहर को रोकने का अभियान 'एनकाउंटर स्पेशलिस्ट' के एक समूह द्वारा चलाया जा रहा है, और संयोग से ये सभी पुलिस भर्ती के एक ही वर्ग से हैं।

पिछले कुछ सालों में मुंबई में अलग-अलग मुठभेड़ों में मारे गए 600 से ज़्यादा खूंखार बदमाशों का इतिहास देखिए। यह लगभग तय है कि हर बार गैंगस्टर को 1983 बैच के पुलिस सब-इंस्पेक्टरों की टीम ने ही ढेर किया था।

अरुण गवली के शीर्ष सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा का मामला लें। मामा को 1983 बैच के विजय सालस्कर ने गोली मार दी थी। छोटा राजन के खास गुर्गे विनोद मटकर को उसके बैचमेट प्रदीप शर्मा ने गोली मार दी थी।

गैंगस्टर छोटा शकील के प्रमुख सहयोगी अनवर बादशाह की हत्या 1983 बैच के ही प्रफुल्ल भोसले ने की थी।

इसी तरह, शशिकांत सागवेकर उर्फ चिकना बाबू को रवींद्रनाथ आंग्रे ने, मंगेश शिंदे को अरुण बोरुडे ने और डीके राव को राजन घुले ने निशाना बनाया था, ये तीनों एक ही उम्र के पुलिसकर्मी थे।

पिछले कुछ वर्षों में अनंत केंजाले, राजन पिल्लई और पूर्व पुलिसकर्मी असलम मोमिन जैसे अन्य नाम भी अंडरवर्ल्ड के सदस्यों के लिए संकटमोचक साबित हुए हैं।

Machine Translated by Google

बटला

अंडरवर्ल्ड की भाषा में बटला का मतलब होता है छोटा कद वाला व्यक्ति।

सरगना हाजी मस्तान ने कारनैक बंदर स्थित अपने कार्यालय का दरवाजा खोला ही था कि पुष्ट शरीर वाला बटला कार्यालय में घुसा, एक कुर्सी पर बैठ गया, अपने पैर मेज पर फैला दिए और डॉन की आंखों में देखने लगा।

"बटला किसी का गुलाम नहीं है कि तुम उसके गले में पट्टा डाल दो।" छोटे कद के गैंगस्टर ने कमरे से बाहर निकलने से पहले टिप्पणी की।

मस्तान को हाजीभाई के नाम से जाना जाता था, उसने बटला के साहसिक कारनामों के बारे में सुना था और चाहता था कि बटला उसके लिए काम करे। हाथ मिलाने का मतलब था इलाके में डॉन के व्यापारिक हितों की रक्षा करना।

मस्तान का कारोबार पिछले कुछ सालों में काफी बढ़ गया था। उसे किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो उसके प्रतिबंधित माल को घाट से लेकर उसके अंतिम गंतव्य तक सुरक्षित रख सके।

सईद लतीफ काजी के नाम से मशहूर बटला (छोटे कद के कारण उसे यह उपनाम मिला था) डोंगरी में कुख्यात था। उसने एक अन्य स्थानीय गुंडे अयूब लाला के साथ मिलकर एक ख़तरनाक गठबंधन बनाया था।

बटला का नाम पहले से ही कुछ डकैतियों और जबरन वसूली के मामलों में था। डोंगरी में दगली मिल्स के पास अपने अड्डे से वह एक ताकतवर शख्स था, ऐसा उसके पूर्व सहयोगी इकबाल येडा ने बताया।

बख्शीश (सौभाग्य)

पाकमोडिया हाउस ने दाऊद इब्राहिम गिरोह का उदय देखा लेकिन परिवार ने कुछ बुरे दिन भी देखे।

पुलिस में जमादार इब्राहिम कासकर सीनियर को 11 लोगों का पेट पालना था और उनके पास कभी भी पर्याप्त धन नहीं होता था।

Machine Translated by Google

कभी-कभी, सीनियर कासकर अपने पुराने दोस्त हाजी मस्तान से कुछ 'गुड लक' के लिए मदद मांगते थे, जिसका उन दिनों मतलब 'बख्शीश' होता था। 'गुड लक' से लैस खुश युवा कासकर डिनर के लिए सामान खरीदने निकल पड़ते थे, दाऊद के पालक भाई हनीफ सावेन याद करते हैं।

बंदिया आदिलकर (द मैन हू चैलेंज्ड द गोल्डन गैंग)

कबड्डी संतोष आदिलकर का पहला प्यार था। इतना कि बाद में उन्होंने खेल के नियमों को बदलने के लिए बाहुबल का इस्तेमाल करने की कोशिश की और अपने दोस्तों को भी कबड्डी में शामिल कर लिया।
राज्य टीम.

जिम में वर्कआउट और कबड्डी के मैदानों पर अभ्यास सत्रों के बीच, आदिलकर उर्फ़ बंद्या, बेबी खोपड़े की अगुआई वाले गोल्डन गैंग के लिए एक एरंड बॉय के रूप में काम करता था। वह गिरोह के सदस्यों के बीच लोकप्रिय था, उन्हें कुछ जेब खर्च के लिए नियमित रूप से सिगरेट और शराब की आपूर्ति करता था, यही वजह है कि गिरोह के वरिष्ठ सदस्यों के बीच उसे 'बंद्या' के नाम से जाना जाता था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन सन मिल कंपाउंड के पास छेड़छाड़ की घटना के बाद खोपड़े ने बंद्या की पिटाई कर दी। यह गिरोह 1990 तक इसी जगह पर रहता था। यह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इसके बाद, उसने अपमान का बदला लेने की कसम खाकर अरुण गवली के लिए काम करना शुरू कर दिया।

1992 तक, बंड्या गवली के काफी करीब पहुंच चुका था और लगातार गैंगलैंड में ऊपर चढ़ता जा रहा था। उसने खोपड़े के भरोसेमंद रतीश भाइयों को खत्म करके खोपड़े गिरोह के सदस्यों के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया था।

हत्याओं का असर इतना गहरा था कि खोपड़े बायकुला पश्चिम स्थित सन मिल्स कम्पाउंड के आसपास से भाग गए और बोरीवली में सुरक्षित पनाह लेने लगे।

इसके तुरंत बाद, उनका नाम कम से कम चार हत्याओं में आया, जिनमें 1997 और 1998 के बीच गामदेवी में केबल नेटवर्क अधिकारी राम पंजाबी और बिल्डर मनीष शाह की हत्या भी शामिल थी।

पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि वह कबड्डी कोचों को आतंकित करने में शामिल था।

Machine Translated by Google

उन्होंने अपनी टीम के लिए कई मैच खेले, ताकि उनके दोस्त राज्य चैंपियनशिप के लिए चयनित हो सकें।
15 जनवरी 2000 को एक मुठभेड़ में बांड्या मारा गया।

बंदी

बंदी का मतलब है जेल में बैरकों को बंद करना। रात के लिए मुख्य दरवाज़ा बंद करने से पहले आम तौर पर कैदियों की गिनती की जाती है।

बंगड़ी (चूड़ी)

बंगड़ी का मतलब आमतौर पर हथकड़ी होता है। यह शब्द मुंबई में पुलिसवालों और गैंगस्टरों द्वारा अक्सर इस्तेमाल किया जाता है।

बीटा (पुत्र)

आम तौर पर जब गिरोह का दूसरा कमांडर उसे 'बेटा' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके सम्मानपूर्वक संबोधित करता है, तो एक नया भर्ती व्यक्ति बहक जाता है। वह जल्द ही गिरोह के लिए काम करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

छोटा शकील अक्सर अपने साथियों से कहा करता था, "बेटा, तुम क्या सोचते हो कि मैं इन सारे पैसों का क्या करूंगा? ये हम सबके लिए हैं। मुंबई में कुछ अच्छा काम करो और दुबई या कराची चले जाओ।"

इसे युवाओं की वफादारी और विश्वास हासिल करने के लिए चापलूसी और भावनात्मक रणनीति के रूप में देखा जाता है।

बेटा पैसा जमा नहीं करवाया? (पैसा नहीं गया है

(अभी तक जमा किया गया?)

यह शब्द आम तौर पर दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों द्वारा किसी लक्ष्य को जबरन वसूली की रकम चुकाने की याद दिलाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस विनम्र अनुरोध के बाद अक्सर जान से मारने की धमकियाँ दी जाती हैं।

Machine Translated by Google

भाई

डी-कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को सिर्फ़ भाई कहा जाता है। सालों के इस्तेमाल के बाद, यह न सिर्फ़ अंडरवर्ल्ड डॉन के लिए बल्कि इस पद के लिए इच्छुक अन्य लोगों के लिए भी छद्म नाम बन गया है; दाऊद इब्राहिम असली भाई है, जिस तरह से उससे पहले कोई डॉन नहीं था।

भाई कासले

1960 के दशक के अंत में भाई कासले मध्य मुंबई के परेल की सड़कों पर राज करते थे।
उसका अधिकांश पैसा अवैध शराब और मटका (सट्टेबाजी) के अड्डों से आता था। उसका समकालीन गैंगस्टर राम तलवार था। (हथियार चलाने में महारत के कारण उसे तलवार उपनाम मिला।)

भट्टा (कैदियों का भोजन)

मुंबई की जेलों में दिए जाने वाले भोजन में तीन सूखी चपातियां, एक कप पतली दाल और एक कटोरी चावल शामिल होता है, जिसका वजन लगभग 500 ग्राम होता है।

बिल लीना (जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए)

बिल लेना, एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल आम तौर पर तब किया जाता है जब कोई गैंगस्टर किसी हत्या की जिम्मेदारी लेता है। अक्सर, यह एक सोचा-समझा जोखिम होता है जो वह अंडरवर्ल्ड के उच्च स्तर पर खुद को स्थापित करने के लिए उठाता है।

नीला (100 रु.)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'ब्लू' का मतलब 100 रुपये होता है। 'हाफ ब्लू' का मतलब 50 रुपये होता है। इन शब्दों की उत्पत्ति 1950 के दशक में हुई थी। ये डोंगरी और उसके आस-पास के इलाकों में लोकप्रिय हैं।

Machine Translated by Google

बोस्की

मुंबई के अंडरवर्ल्ड के शुरुआती विकास का पता 1970 के दशक के मध्य में बोस्की कपड़े की तस्करी से लगाया जा सकता है। लेकिन जब गिरोहों ने महत्व प्राप्त कर लिया तो तस्करी ने जल्द ही वसूली या 'वसूली' का रास्ता अपना लिया।

महेश और अरविंद ढोलकिया जैसे व्यापारियों ने अपना बकाया वसूलने के लिए शब्बीर कासकर और उसके छोटे भाई दाऊद इब्राहिम को काम पर रखा था। अमीरजादा और आलमजेब की पठान जोड़ी ने हाजी मस्तान के साथ वसूली एजेंट के तौर पर काम किया।

बोस्की कपड़े की तस्करी गुजरात के सिंडिकेट से शुरू हुई, जिसमें ज़्यादातर मछुआरे थे जो जल्दी से जल्दी पैसा कमाना चाहते थे। इसके अलावा लौंग, दालचीनी, लाइटर स्टोन, ट्रांजिस्टर और सिगरेट जैसे दूसरे उत्पाद भी थे।

उस समय इसे खुदरा व्यापार कहा जाता था और 1960 के दशक के अंत में लगभग सारा प्रतिबंधित सामान दुबई से तस्करी करके लाया जाता था।

हारून तालाब का कच्छ तट पर दबदबा था। सूरत के पास तटीय क्षेत्र रतिलाल नाविक के अधीन था। बाना खलप और लालू जोगी दमन तट पर सक्रिय थे। सुकुर नारायण भाकिया एक साधारण मछली पकड़ने वाले ट्रॉलर के मालिक से उठकर पूर्व पुर्तगाली उपनिवेश के सबसे बड़े तस्करों में से एक बन गए।

जल्द ही तस्करों ने सूची में सोना, 80-20 केटी स्ट्रेचलॉन ट्राउजर कपड़ा, 66/67 केटी, टैन टन स्ट्रेच, 1470 स्ट्रेचलॉन ट्राउजर कपड़ा और 644 साड़ियाँ जैसी अन्य वस्तुएँ भी जोड़ दीं। दमन में लगभग 225 रुपये में मिलने वाला बोस्की कपड़े का 25 मीटर का रोल मुंबई में दोगुनी कीमत पर बेचा गया।

महेश और अरविंद ढोलकिया जैसे तस्करों ने मुंबई से करीब 200 किलोमीटर दूर दमन केंद्र शासित प्रदेश से तस्करी के लिए वाहनों का एक बेड़ा किराए पर लिया। कभी-कभी कोयले के इंजन में छेद करके कपड़ों की तस्करी की जाती थी।

अज़ीज़ कोंकणी अपना माल कोंकण तट से तस्करी करके लाता था और उसका अधिकांश माल दक्षिण मुंबई के मनीष मार्केट में बेचा जाता था।

Machine Translated by Google

जल्द ही, कुछ खुदरा विक्रेताओं ने लागत में कटौती के उपाय के रूप में दुबई के व्यापारियों के साथ सीधे संपर्क स्थापित कर लिया। मुसाफिरखाना, मनीष मार्केट और माटुंगा के गांधी मार्केट में दुकानों को सामान की आपूर्ति की जाती थी। शाम को नकदी इकट्ठा करने का काम गिरोहों को दिया जाता था जो अंडरवर्ल्ड की आय के बड़े हिस्से के लिए आपस में लड़ते थे।

बोचकिया (हिरमन कोटेकर)

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, बोचकिया एक अकेला ऑपरेटर बन गया, जो वर्ली और उसके आस-पास की ज़मीनों पर कब्ज़ा करने से पहले बड़ी संख्या में डकैतियों और जबरन वसूली में शामिल था। वह 1998 से 2001 के बीच दादर-प्रभादेवी इलाके की झुग्गियों में बलात्कार के कई मामलों में भी शामिल था। कई अन्य मामलों में शक की सुई बोचकिया की ओर मुड़ी।

27 अक्टूबर 2002 को प्रभादेवी के निकट उसे देखकर अपराध शाखा के एक अधिकारी महेश देसाई ने उस पर आक्रमण कर दिया। पुलिस के अनुसार, मुठभेड़ में वह मारा गया।

भूरा

'ब्राउन' शब्द 'ब्राउन शुगर' या 'पुड' का संक्षिप्त रूप है, जो मुंबई की सड़कों पर मिलने वाला स्मैक का एक छोटा पैकेट है। यह हेरोइन का घटिया संस्करण है और ज़्यादातर कूड़ा बीनने वाले लोग इसका सेवन करते हैं। इसकी बिक्री कीमत 3 लाख रुपये प्रति किलोग्राम है।

बायकुला और डी-कंपनी में टकराव

1989 में बायकुला के दगड़ी चॉल के गैंगस्टरों ने दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी और फाइनेंसर महेंद्र चोरडिया का अपहरण कर लिया। इस खबर से डॉन को उम्मीद के मुताबिक गुस्सा आ गया।

दाऊद ने अरुण गवली से संपर्क करने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह दूर था।
दाऊद को रामा नाइक से नियमित मुलाकात के कारण दगडी चॉल की जानकारी थी

Machine Translated by Google

और बाबू रेशिम अतीत में।

दाऊद ने किशोर गवली उर्फ पापा को समझाने की कोशिश की, लेकिन वे असफल रहे। गवली भाई ने समझदारी भरा रास्ता अपनाने से इनकार कर दिया।

चोरडिया को दगडी चाल में निर्माणाधीन इमारत में तीन दिनों तक प्रताड़ित किया गया। गिरोह के सदस्यों ने बचाव प्रयास की आशंका में अपने प्रतिद्वंद्वियों को बंदी की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने दाऊद को चोरडिया की चीखें टेलीफोन पर सुनने को भी दी। व्यवसायी एक 'धनवान' था और डी-कंपनी के निवेश के बारे में सब कुछ जानता था।

तीन दिन बाद चोरडिया प्रतिशोध की भावना से हत्या का शिकार हो गया। उसे मारने से पहले गिरोह को पैसे का लालच दिया गया था। उसका क्षत-विक्षत शव दगडी चाल के बाहर मिला। बायकुला कंपनी को पैसे का लालच दिया गया, जिसे उसने ठुकरा दिया।

दाऊद के आदमियों ने माहिम में पापा की हत्या करके बदला लिया। इसके अलावा आठ अन्य हत्याएं भी हुईं। अब यह दोनों गिरोहों के बीच एक पूर्ण युद्ध बन गया था।

बुलेट-प्रूफ ग्लास (इतना सुरक्षित नहीं)

1987 में बायकुला के एक व्यस्त यातायात जंक्शन पर दिनदहाड़े सतीश राजे की गोली मारकर हत्या इस बात की याद दिलाती है कि सबसे मजबूत सुरक्षा व्यवस्था कितनी कमजोर हो सकती है। यह पहली बार था जब किसी हत्यारे ने कार की विंडस्क्रीन को हथौड़े से तोड़कर एकदम नजदीक से गोली चलाई थी।

दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी सतीश राजे को 1988 में उसकी हत्या की साजिश के बारे में सूचना मिली थी। जब से गैंगस्टरों ने प्रतिद्वंद्वी गिरोहों के वित्त नियंत्रकों पर हमला करना शुरू किया था, तब से वह मुख्य लक्ष्य बन गया था।

दाऊद के छोटे भाई नूरा ने राजे को एक नई मर्सिडीज भेंट की। यह एक निर्माण कंपनी को गिरोह की धन उगाही गतिविधियों के लिए एक मुखौटा के रूप में संभालने के लिए एक प्रोत्साहन था।

राजे ने चेतावनियों को खारिज कर दिया। उन्होंने तर्क दिया; क्या आयातित बुलेटप्रूफ कार को निशाना बनाया जा सकता है? उनका मानना था कि शीशे इतने मोटे थे कि गोलियां आसानी से उछलकर बाहर आ जाएंगी।

Machine Translated by Google

प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर अशोक जोशी राजे पर निशाना साध रहा था, जिसे काफी आसान लक्ष्य माना जाता था। जोशी के गुरु रामा नाइक की मौत का बदला लेने की मंशा थी।

इसने एक घातक पैटर्न स्थापित कर दिया। यही तरीका तब भी अपनाया गया जब अमर नाइक के आदमियों ने 1994 में महालक्ष्मी में खटाऊ मिल के मालिक सुनीत खटाऊ की हत्या कर दी। ट्रैफिक चौराहे पर खटाऊ की कार के शीशे को तोड़ने के लिए हथौड़े का इस्तेमाल किया गया। इसके बाद उनके शरीर को गोलियों से छलनी कर दिया गया।

1995 में, छोटा राजन के पूर्व सहयोगी गुरु साटम और एक अन्य हिटमैन जो डिसूजा ने बांद्रा में मर्सिडीज की विंडस्क्रीन तोड़ दी, जिसमें ईस्ट वेस्ट एयरलाइंस के निदेशक मोहम्मद तक्किउद्दीन यात्रा कर रहे थे।

कई गोलियां लगने से तक्किउद्दीन की कुछ ही मिनटों में मौत हो गई।

1998 में फिर से इस तरीके का इस्तेमाल किया गया, जब छोटा शकील के सहयोगी शौकत सरकार को निशाना बनाया गया। सरकार, जो तेज गति वाली आयातित कारों के प्रति अपने आकर्षण के लिए जाने जाते थे, का भी दृढ़ विश्वास था कि बुलेट-प्रूफ ग्लास उन्हें घात लगाकर किए गए हमले से बचा सकते हैं। वह, दूसरों की तरह, गलत साबित हुए।

Machine Translated by Google

कैमरा (हथियार)

जब सरगना कलाकार को कैमरा लाने के लिए कहता है, तो वास्तव में इसका मतलब होता है कि शूटर हथियार लेकर आए और कैमरा लेकर आए, निशाना साधे और एकदम सही तस्वीर खींचे।

कैप्सूल (बुलेट)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में कैप्सूल को बुलेट भी कहा जाता है। यह शब्द इसलिए बना क्योंकि दोनों एक जैसे दिखते हैं।

कैसेट (पत्रिका)

9 एमएम कैलिबर की स्टार पिस्तौल में इस्तेमाल की जाने वाली मैगज़ीन को अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'कैसेट' कहा जाता है। इस हथियार का इस्तेमाल ज़्यादातर दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्य करते हैं।

चीन में बनी स्टार पिस्तौल, जिसमें नौ राउंड वाली कैसेट होती है, किसी भी अवैध हथियार डीलर से 20,000 से 60,000 रुपये के बीच में खरीदी जा सकती है। कुछ गिरोह अपनी आपूर्ति सीमा पार से प्राप्त करते हैं।

बिल्ली

Machine Translated by Google

अंडरवर्ल्ड में कैट का मतलब 10,000 रुपये होता है। कैट आमतौर पर ताश के पत्तों के एक पैकेट का संक्षिप्त रूप है। जब कोई गैंगस्टर अपने साथी को ताश के पत्तों का एक पैकेट लाने के लिए कहता है, तो अंडरवर्ल्ड की भाषा में इसका मतलब वास्तव में 10,000 रुपये होता है।

चब्बीस (26)

छब्बीस शब्द का इस्तेमाल एक युवा, कामुक लड़की के लिए किया जाता है। अंडरवर्ल्ड की भाषा में इसका मतलब 'आइटम गर्ल' होता है। इस शब्द की उत्पत्ति बहुत पतली कमर से हुई होगी।

चाड जना

चड़ जाना या चाडा एक शब्द है जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है जब पुलिस दस्ता या प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर किसी गुंडे की जांच करने, उसे गिरफ्तार करने या धमकाने के लिए किसी परिसर में प्रवेश करता है। इसे अपमान माना जाता है।

चाई पाउ

अंडरवर्ल्ड की भाषा में, चाय पाउ वह व्यक्ति होता है जो बॉस के बहुत करीब होता है; इतना करीब कि वे साथ में बैठकर खाना खा सकें।

चक्री (रिवॉल्वर का चैंबर और बालू डोकरे)

दक्षिण मुंबई में पेडर रोड से सटे समुद्र तट पर एक 16 वर्षीय किशोर एक कुशल फुटबॉल खिलाड़ी की तरह भीड़ के बीच से निकल रहा है, जबकि पुलिस उसका पीछा कर रही है।

अचानक, दुबला-पतला युवक अपनी रिवॉल्वर से 'चकरी' निकालता है और उसे समुद्र में फेंक देता है। कुछ सेकंड बाद, उसे पुलिस द्वारा पकड़ लिया जाता है।

शूटर और उसके दो साथी, भारकियाभाई और अंड्याभाई, एक संक्षिप्त सुनवाई के बाद बरी हो गए। पुलिस मजिस्ट्रेट को यह नहीं समझा पाई कि बिना चैम्बर वाली हैंडगन से गोली कैसे चलाई जा सकती है।

Machine Translated by Google

सत्रह साल बाद, कोल्हापुर के पास चांदगढ़ का यह बदमाश मुंबई के सबसे खतरनाक कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक बन गया - किरण केशव डोकरे उर्फ बालूभाई - गैंगस्टर छोटा राजन का मुख्य सहयोगी। 22 मई, 2005 को मलेशिया के कौला लंपुर के पास उसकी हत्या कर दी गई।

चालू बैंक

बायकुला कंपनी ने 30 लाख रुपए की राशि अलग रखी थी जिसे आकस्मिक निधि कहा जा सकता है। इस पैसे का इस्तेमाल गिरोह के भीतर किसी आपातकालीन स्थिति में ही किया जाना था। इस फंड का प्रबंधन शरद बंदवे द्वारा किया जाता था जब तक कि वह मुठभेड़ में मारा नहीं गया।

चमडा (स्त्रियों पर मोहित पुरुष)

चमडा एक संदिग्ध उपनाम है जो उन गुंडों के लिए प्रयोग किया जाता है जो महिलाओं के प्रति आसक्त होते हैं।
अधिकतर इसका तात्पर्य बार और रेड-लाइट इलाकों में या त्वरित सेक्स के लिए लड़कियों को लुभाने से है।

यह शब्द ज़्यादातर सेंट्रल मुंबई की पिछली गलियों में इस्तेमाल किया जाता है। हिंदी में चमड़ा का मतलब चमड़ा और देह व्यापार भी होता है।

चंदा (दान)

गैंगस्टर फजुल-उर-रहमान को अक्सर टारगेट से पैसे देने के लिए तर्क करते हुए सुना जाता था। "हम पैसे कहां मांगते हैं। हम तो सिर्फ चंदा मांगते हैं।" (मैं फिरौती नहीं मांग रहा हूं। मैं सिर्फ चंदा मांग रहा हूं), वह फोन पर अपने टारगेट से तर्क करता था। वह अपने साथियों को यह भी तर्क देता था कि भगवान ने कुछ लोगों को बहुत ज्यादा पैसे दिए हैं और उनसे कहता था, "भगवान ने हमें अधिशेष लेने के लिए कहा है। बिंदास आम" (बिना किसी हिचकिचाहट के पूछें)।

चप्पल

Machine Translated by Google

अंडरवर्ल्ड की भाषा में चप्पल एक हथियार के लिए इस्तेमाल होने वाला दूसरा शब्द है। 'एक जोड़ी 9 नंबर की चप्पल भेज रहा हूं' का खतरनाक मतलब है: 'मैं 9 एमएम कैलिबर की पिस्तौल भेज रहा हूं।'

चप्पल की जोड़ी ले कर आना

'चप्पल की जोड़ी ले कर आना' का मतलब है, हथियार लेकर मौके पर आना। 'जोड़ी' या जोड़ा शब्द रिवॉल्वर में 'चकरी' या घूमने वाले चैंबर से बना है।

चार तांग पार (वाहन में भागना)

रमेश सुर्वे उर्फ रम्या बटलर, विनोद मटकर और संजय घाटे नेपाली सांसद मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या करने के लिए नेपाल में थे। नेपाली गैंगस्टर करण सिंह मानसिंह को बालू डोकरे द्वारा मारे गए मौत के दस्ते में शामिल किया गया था।

छोटा राजन का सबसे भरोसेमंद साथी बालू डोकरे 1990 के दशक में 50 हाई प्रोफाइल हत्याओं के पीछे था। वह शांत स्वभाव का था, लेकिन उसे हमेशा काम करने वाला माना जाता था।

16 नवम्बर 1998 की ठण्डी दोपहर थी। बेग अपनी एसयूवी की पिछली सीट पर बैठे थे और काठमांडू के निकट भक्तवा की ओर जा रहे थे, ताकि अपनी पत्नी से मिल सकें, जिनसे उन्होंने गुप्त रूप से विवाह किया था।

बेग को खत्म करने के लिए जाल बिछाया गया था। करीब 15 मिनट तक पीछा करने के बाद शूटर बेग की गाड़ी को रोकने में कामयाब हो गए, जो उनके बंगले के प्रवेश द्वार से बमुश्किल 50 मीटर की दूरी पर थी। शुरुआत में, उन्हें एसयूवी के अंदर ही मार डालने की योजना थी।

बेग किसी तरह गाड़ी से बाहर निकलकर अपनी हवेली के गेट की ओर भागा। कुछ सेकंड बाद, डोकरे ने अपनी 9 एमएम की बंदूक निकाली और उसे लक्ष्य पर लॉक कर दिया। अगले ही पल, गोली बेग के सिर के पिछले हिस्से में लगी और उसके माथे से बाहर निकल गई।

बेग जब सड़क पर लड़खड़ाते हुए पहुंचा, तो डोकरे ने उसे पकड़ लिया। वह निर्दयी शूटर उसके शरीर के पास बैठा और सुरक्षित बचने के लिए दो और गोलियां दाग दीं।
उपाय।

Machine Translated by Google

इस बीच, बेग के ड्राइवर या रक्षक को घाटे ने नजदीक से गोली मार दी, जब वह गाड़ी से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था। हथियारों की गड़गड़ाहट ही ठिकाने के अंदर बेग के गार्डों को सचेत करने के लिए काफी थी। मुसीबत को भांपते हुए, मुंबई के गैंगस्टर भागने की गाड़ी में चढ़ गए। डोकरे चिल्लाया, "चार टांग पे बाघो।" वे भागने की गाड़ी में चढ़ गए और भाग निकले।

चार्ली

'चार्ली' का मतलब मुंबई के अंडरवर्ल्ड और अफ्रीकी तस्करों के लिए कोकीन है।

प्रति ग्राम बाजार मूल्य लगभग 3000 रुपये है, तथा माल का वित्तपोषण करने वाले व्यक्ति के लिए यह 10,000 अमेरिकी डॉलर प्रति किलोग्राम से अधिक है।

चैटिस (36)

'चाटिस का अकड़ा' या संख्या 36 का मतलब है किसी के साथ अच्छे संबंध न होना। यह शब्द भी चाइना पेटी खेल से आया है।

चौबीस (24)

चौबीस या 24 अंडरवर्ल्ड की भाषा में एक सुंदर लड़की के लिए होता है। इस शब्द की उत्पत्ति 24 इंच की पतली कमर से हुई है। यह गैंगस्टरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला अपमानजनक शब्द है।

चीता

चीता या पेटी का मतलब वास्तव में एक लाख रुपये होता है। इस बोलचाल के शब्द का इस्तेमाल सट्टेबाजों के बीच पुलिस और अंडरवर्ल्ड के सदस्यों को गुमराह करने के लिए किया जाता है, जो उनसे सुरक्षा राशि की मांग करते हैं।

Machine Translated by Google

छमिया (दाऊद-पठान युद्ध शुरू करने वाली युवती)

कांग्रेस हाउस, अंडरवर्ल्ड के लोगों का एक प्रसिद्ध अड्डा था, जहां लड़कियों को 'लतक जातक' कहा जाता था, जो मुंबई के रेड-लाइट इलाकों में एक आम बात है।
12 फरवरी, 1981. आधी रात हो चुकी थी और मुंबई सेंट्रल के एक आलीशान डांसिंग जॉइंट कांग्रेस हाउस में लड़कियों ने अपना नियमित मुजरा खत्म कर लिया था. दाऊद के बड़े भाई शब्बीर उर्फ अरब को एक डांसर चित्रा से प्यार हो गया था. वह बेहद खूबसूरत थी और प्रतिद्वंद्वी ने उसे अपने जाल में फंसाने की सोची.

चित्रा चाहती थी कि शब्बीर उसे मुजरा हॉल से बाहर ले जाए और नाइटलाइफ़ का अनुभव कराए। शब्बीर ने चित्रा को साथ लेकर बांद्रा की ओर चल दिया, इस बात से अनजान कि प्रतिद्वंद्वी पठान गिरोह के सदस्य एक सफ़ेद एंबेसडर कार में अपनी फ़िएट के पीछे चल रहे थे।

वास्तव में पीछा करना हाजी अली से शुरू हुआ और जैसे ही फिएट कार प्रभादेवी में सिद्धि विनायक मंदिर के सामने एक पेट्रोल पंप पर रुकी, पठान गिरोह ने उस पर हमला कर दिया।

रात के करीब डेढ़ बजे थे और शब्बीर अमीरजादा, आलमजेब और जाफर जमाल सिद्दीकी तथा दो अन्य को देखकर हैरान रह गया। चित्रा कार से उतरी और अंधेरी रात में गायब हो गई।

शब्बीर अभी अपने आश्चर्य से उबर ही पाया था कि तीनों ने अपने लक्ष्य पर पांच गोलियां दाग दीं और वह कार में ही बेजान होकर गिर पड़ा।

हमलावर एंबेसडर में सवार होकर पाकमोडिया स्ट्रीट की ओर भागे, जो कासकर का घर है। योजना यह थी कि दाऊद को उसके बड़े भाई की खबर पहुंचने से पहले ही चौंका दिया जाए।

इससे एक युद्ध की शुरुआत हुई जिसके परिणामस्वरूप अगले दस वर्षों में 50 से अधिक गैंगस्टरों, जिनमें उनके रिश्तेदार भी शामिल थे, का सफाया हो गया।

चेरा (चेहरा)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'चेरा' का अर्थ है पुलिस को वांछित व्यक्ति की पहचान में मदद करना।

Machine Translated by Google

सईद टोपी की हत्या वास्तव में इसलिए की गई क्योंकि उसने पुलिस के 'चेरा' यानी गैंगस्टर छोटा शकील के साले आरिफ अबू बकर शेख उर्फ भाईजान की मदद की थी।

सईद टोपी को इस बात की जानकारी नहीं थी कि पुलिस अधिकारी छोटा शकील का करीबी है। पुलिस अधिकारी के साथ बातचीत को रिकॉर्ड किया गया और दाऊद इब्राहिम के सामने फिर से चलाया गया। सईद की हत्या उसी अधिकारी ने की, जिसकी मदद से उसने भाईजान की पहचान कराई थी।

छत्री (वित्तपोषक एवं समर्थक)

ढोलकिया बंधुओं की कहानी कुछ ऐसी है जिस पर इन दिनों बॉलीवुड में फिल्में बन रही हैं।

गुजराती जोड़ी अरविंद और महेश ने सेंट्रल मुंबई के नल बाज़ार में एक छोटे से कपड़ा व्यापारी के बेटे के रूप में जीवन शुरू किया। पिता ने जल्दी पैसे कमाने के लिए कपड़ा व्यवसाय में प्रवेश किया था और जब बेटों की हत्या हुई, तब तक वे मुंबई में अंडरवर्ल्ड की सीढ़ी के शीर्ष पायदान से बस कुछ ही दूरी पर थे।

13 अक्टूबर 1987 को, अच्छी तरह से तैयार महेश ढोलकिया अपने पेडर रोड स्थित आवास से बाहर निकले, तभी प्रतिद्वंद्वी शूटर हाजी अली जंक्शन के पास आ गए।

करीब 30 राउंड गोलियां चलाई गईं, जिससे महेश की मौके पर ही मौत हो गई। भाईलैंड के दलदली पानी में घुसने के बाद ये व्यवसायी यह नहीं समझ पाए कि आगे क्या होने वाला है। वे ट्रेंड-सेटिंग 'सेठों' में से थे जिन्होंने अंडरवर्ल्ड के संचालन को वित्तपोषित करना शुरू किया।

ढोलकिया परिवार, जो मुम्बई में दो टाकी (दो तालाबों) के पास कपड़ा दुकानों के मालिक थे, दाऊद के संपर्क में आने से पहले दक्षिण मुम्बई में खेतवाड़ी की संकरी गलियों में पले-बढ़े थे, जिसे बाद में बड़े भाई महेश ढोलकिया ने वित्तीय मदद दी थी।

अरविंद और महेश ने मध्य मुंबई में अपने कारोबार को चलाने के लिए येडा गोपाल जैसे स्थानीय गुंडे के बल का इस्तेमाल करते हुए कपड़ा तस्करी का काम शुरू कर दिया।

Machine Translated by Google

ढोलकिया भाइयों ने पहली गलती तब की जब उन्होंने राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की हत्या के लिए चंद्रशेखर सफालिका को पैसे दिए। बाकी सब बॉलीवुड की ब्लॉकबस्टर फिल्मों की तरह ही चलता रहा। इसका नतीजा ताड़देव के पास हुई घातक गोलीबारी थी। एक साल बाद, अरविंद को भी सीजर पैलेस में अंडरवर्ल्ड के नाटकीय अंदाज में गोली मार दी गई।

बाद में पुलिस ने जगजीत सिंह, दिलीप कुलकर्णी और मतीक नामक एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया, जो सभी कथित तौर पर दाऊद के गुर्गे हैं।

छोटा बाबू का डबल क्रॉस

अशोक चौधरी उर्फ छोटा बाबू का सम्मान सिर्फ़ इसलिए नहीं था कि वह गिरोह का सबसे पुराना सदस्य था या गैंगस्टर से नेता बने अरुण गवली के गुरु रामा नाइक का करीबी दोस्त था। वह गिरोह का 'पैसे का सौदागर' भी था, जो गिरोह के लिए 'हजता' इकट्ठा करता था।

सब कुछ तब तक ठीक था जब तक गवली गिरोह के कुछ वरिष्ठ सदस्यों को यह पता नहीं चला कि दाऊद इब्राहिम के समर्थक, गवली गिरोह द्वारा निशाना बनाए जाने पर अक्सर समझौता करने के लिए छोटा बाबू से संपर्क करते थे।

गवली के खास सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा को हर बार छोटा बाबू के हस्तक्षेप पर फिरौती की रकम में लगभग 50 प्रतिशत की कमी करनी पड़ती थी। यह उनके मन में संदेह पैदा करने के लिए काफी था। निगरानी का असर हुआ और कुछ ही समय बाद पावले ने दाऊद इब्राहिम से संबंध रखने वाले बांद्रा के एक बिल्डर को निशाना बनाया और उससे एक करोड़ रुपये की सुरक्षा राशि मांगी। जैसी कि उम्मीद थी, पीड़ित ने छोटा बाबू से संपर्क किया और फिरौती की रकम 20 लाख रुपये तय हुई।

छोटा बाबू को इस बात का अंदाजा नहीं था कि उसके साथी उस पर जासूसी कर रहे हैं। कुछ महीने बाद पावले ने उसी बिल्डर को फोन किया और हफ्ता के तौर पर 5 लाख रुपए की किश्त मांगी। उसे तब आश्चर्य नहीं हुआ जब लक्ष्य ने उसे बताया कि उसने अभी-अभी छोटा बाबू को 20 लाख रुपए दिए हैं, जो कि पहले फिरौती की मांग को पूरा करने के लिए दिए गए 20 लाख रुपए के अतिरिक्त थे।

बाबू ने डॉन के साथ विश्वासघात किया था और उसकी जानकारी के बिना 20 लाख रुपए वसूल लिए थे। उन्हें यह भी संदेह था कि वह पुलिस के लिए काम कर रहा है।

Machine Translated by Google

उनका मुखबिर.

रहस्य तब उजागर हुआ जब अपराध शाखा ने भुकरी हत्याकांड के सिलसिले में राजू सिरसट, मनोज राघवन, राहुल पोल और विजय नरसाले को गिरफ्तार किया: गिरोह को संदेह होने लगा कि बाबू ने पुलिस को मुखबिरी की होगी।

उनका संदेह तब और मजबूत हो गया जब बदमाशों को पता चला कि पुलिस हत्या के संबंध में सभी सही सवाल पूछ रही है।

मारे गए गैंगस्टर विजय शिरोडकर उर्फ सादे टीन को बाबू की हत्या के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। इस मामले में नामजद अन्य लोगों में गणेश भोसले उर्फ वकील और पावले शामिल थे, जिन्हें बाद में मुठभेड़ में मार गिराया गया।

छोटा गन्या

गणेश सालवी उर्फ छोटा गन्या को गणेश सावंत उर्फ गन्या सावंत ने 1993 के आसपास अपराध की दुनिया में उतारा था। उसके पांच फीट के छोटे कद के कारण उसका उपनाम 'छोटा गन्या' पड़ा। 1997 में लूट के माल को लेकर हुए विवाद के बाद प्रशिक्षु हत्यारे ने सावंत से नाता तोड़ लिया और दोनों ने एक-दूसरे को जान से मारने की कसम खा ली। 1998 में जेल में रहने के दौरान सुनील मडगांवकर ने गन्या को छोटा राजन गिरोह में शामिल किया था। रोहित वर्मा और जग्गू शेट्टी जैसे प्रमुख गुर्गों से दोस्ती करने के बाद वह गिरोह में ऊपर चढ़ता गया। 4 अप्रैल, 2002 को रवींद्र आंग्रे के नेतृत्व वाली एक टीम ने ठाणे में एक मुठभेड़ में गैंगस्टर को मार गिराया था।

छोटा कासु (दाऊद को चुनौती देने वाला)

दाऊद इब्राहिम अपनी भाग्यशाली सिल्वर टोयोटा कार 'ट्रिपल एक्का' में था, जब उसकी कार माहिम चर्च के पास एक ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी।

एक सफ़ेद रंग की एम्बेसडर गाड़ी आकर रुकी। कुछ देर की बातचीत के बाद, उसमें से एक व्यक्ति उतरा और टोयोटा की ओर बढ़ गया।

"कल तक अमीन पे रेंगते फिर थे कौन; पर निकल आये तो परवाना बने।"

Machine Translated by Google

(कल तक तो तुम कीड़े की तरह रेंग रहे थे। अब जब तुम्हारे पंख उग आए हैं, तो तुम्हें लगता है कि तुम पतंगे बन गए हो) यह चोर से ड्रग तस्कर बने छोटा कासू द्वारा स्पष्ट शब्दों में दी गई चुनौती थी।

टोयोटा में बैठे अन्य लोग लंबू शकील और हनीफ कुत्ता इस अपमान के गवाह थे। लेकिन दाऊद ने इस प्रलोभन में आने से इनकार कर दिया। उसने बस लंबू शकील से कहा कि वह अपना रास्ता बदल ले और आगे बढ़ जाए। विजयी कासू अपने दो साथियों के साथ दक्षिण मुंबई के नल बाजार के पास अपने गढ़ की ओर चल पड़ा।

मुंबई के कुख्यात अंडरवर्ल्ड में भी बहुत कम लोग दाऊद इब्राहिम को सार्वजनिक रूप से चुनौती देने की हिम्मत रखते। लेकिन छोटा कासू 1970 में अपने चरम पर था, जब दाऊद खेल के नियम सीख रहा था - कैसे धैर्य रखना है और सही मौके का इंतजार करना है।

छोटा राजन (नाना का जय हिंद)

राजेंद्र सदाशिव निकालजे के नाम से जन्मे छोटा राजन ने उत्तरी मुंबई के उस समय के निर्विवाद अंडरवर्ल्ड किंग राजन नायर के अंडरस्टडी के रूप में शुरुआत की थी। नए भर्ती और उसके मालिक के बीच अंतर करने के लिए, उनके आगे क्रमशः छोटा और बड़ा शब्द जोड़ दिए गए थे। 15 सितंबर, 1983 को दक्षिण मुंबई में एस्प्लेनेड कोर्ट ले जाते समय बड़ा राजन की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

यह तब की बात है जब मारे गए राजन के मुख्य सरगना छोटा राजन ने गिरोह की बागडोर संभाली। बाद में, 1987 में, छोटा राजन दुबई भाग गया और दाऊद इब्राहिम का दूसरा सबसे बड़ा नेता बन गया, छह साल बाद डी-कंपनी से अलग हो गया। माना जाता है कि वह दक्षिण पूर्व एशिया में छिपा हुआ है, उसे 'हिंदू डॉन' के नाम से जाना जाता है। उसे एक भारतीय केंद्रीय खुफिया एजेंसी के कुछ अधिकारियों का करीबी भी माना जाता है।

छोटा रुपैया

छोटा रुपैया का मतलब एक लाख हो सकता है। यह बहुत आम शब्दावली नहीं है, लेकिन मुंबई में सक्रिय उत्तर प्रदेश के कुछ गैंगस्टर इसका इस्तेमाल करते हैं।

Machine Translated by Google

छोटा शकील

अपने करियर के शुरुआती दिनों में, मुंबई के अंडरवर्ल्ड में कई शकील सक्रिय थे। इनमें से एक शकील शेख लंबा और तगड़ा था और इसलिए स्वाभाविक रूप से उसका नाम लंबू शकील रखा गया। इसलिए, जब शकील मोहिउद्दीन बाबू शेख ने अपराध की दुनिया में प्रवेश किया और पाँच फीट से सिर्फ़ एक या दो इंच लंबा था, तो स्वाभाविक रूप से उसे छोटा शकील उपनाम मिला। आज, वह गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम का दाहिना हाथ है।

शकील ने टेम्कर स्ट्रीट पर अपने गंदे परिसर में एक छोटे से एयर कंडीशनर की मरम्मत करने वाले तकनीशियन के रूप में काम करना शुरू किया, उसके बाद दाऊद इब्राहिम से हाथ मिलाया। वह क्रिकेट का शौकीन था और दुबई और बाद में पाकिस्तान भागने से पहले मध्य मुंबई की संकरी गलियों में मैच खेलता था। छोटा राजन के कट्टर प्रतिद्वंद्वी, जिसे उसने डी-कंपनी से अलग होने के बाद बदल दिया था, उसे 'पाऊ टकला' के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि अब वह गंजा हो गया है। संयुक्त पुलिस आयुक्त राकेश मारिया ने बताया कि शकील मुंबई में एक दर्जन से अधिक हाई-प्रोफाइल मामलों के सिलसिले में वांछित है और अब उसका झुकाव मुस्लिम कट्टरपंथ की ओर है।

चिड़िया (पक्षी/पेजर)

मुंबई में गैंगस्टर छोटा शकील का मुख्य शूटर सादिक इस्माइल जालवार उर्फ सादिक कालिया बहुत ही शातिर था। वह 1990 के दशक के मध्य में प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन गिरोह के सदस्यों के बीच आतंक फैलाने वाले सबसे खूंखार कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक था।

क्राइम ब्रांच की आपराधिक जांच इकाई को आखिरकार सादिक के पेजर नंबर का पता चल गया। इसे निगरानी में रखा गया।

लेकिन पेजर या चिड़िया जल्द ही बंद हो गई। जाहिर है कि क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी ने छोटा शकील को इसकी जानकारी दी थी, जिसने अपने भरोसेमंद साथी को इस उपकरण की टैपिंग के बारे में सचेत किया।

आम तौर पर, रास्ता सूख जाता। लेकिन जासूसों ने 1,250 रुपये का भुगतान किया।

Machine Translated by Google

पेजर सेवा को सक्रिय रखने के लिए बकाया राशि का भुगतान करना होगा।

दो महीने बाद, ग्राहक को एक संदेश मिला कि उसे 15 दिन की मुफ्त सेवा और बकाया राशि का भुगतान करके अनुबंध को नवीनीकृत करने का प्रस्ताव दिया जा रहा है। ग्राहक को इस बात का बिल्कुल भी अहसास नहीं था कि यह उसे पकड़ने की एक चाल थी।

पेजर अचानक फिर से सक्रिय हो गया। लेकिन एक समस्या थी। पेजर सादिक कालिया के पास नहीं था, बल्कि उसके प्रमुख सहयोगी सलीम चिकना के पास था।

पुलिस को जानकारी मिली थी कि सलीम चिकना और कालिया मुंबई और ठाणे में हुई करीब दस हत्याओं में शामिल थे। जानकारी के मुताबिक चिकना मोटरसाइकिल से भाग गया था, जबकि कालिया ने गोली चलाई थी।

क्राइम ब्रांच के अधिकारियों के लिए यह एक कठिन काम था क्योंकि कालिया चिकना से जवाब पाने के लिए सार्वजनिक टेलीफोन बूथ पर पांच मिनट से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करता था। चिकना को पूरे शहर से संदेश भेजे जा रहे थे, जिससे उसकी स्थिति का पता लगाना मुश्किल हो गया था।

अपराध शाखा के अधिकारी पूरे शहर में फैले हुए थे लेकिन कालिया हमेशा एक कदम आगे रहता था।

आखिरकार चिकना को एक संदेश मिला जिसमें लिखा था, 'शाम 7 बजे सेंट्रल मुंबई के एलेक्जेंडर सिनेमा में पहुंचें।' नवनियुक्त पुलिस सब-इंस्पेक्टर दया नायक, जो दस्ते के सदस्य थे, सेंट्रल मुंबई में थे, इसलिए उन्होंने जोखिम उठाने का फैसला किया।

नायक मारुति ज़ेन में अपने शिकार का इंतज़ार कर रहा था। कुछ मिनट बाद, एक यामाहा मोटरसाइकिल जीर्ण-शीर्ण सिनेमा हॉल के बाहर आकर रुकी।

बेचैन सवार इंतजार कर रहा था, उसे पता नहीं था कि पुलिस की एक टीम उस पर कड़ी नज़र रख रही है। कुछ मिनट बाद, जब उसने अपनी बाइक स्टार्ट करने की कोशिश की, तो चिकना नायक को पीछे बैठा देखकर दंग रह गया। चिकना, जिसने शुरू में सोचा कि यह उसका साथी है, एक अपरिचित चेहरा देखकर थोड़ा चौंक गया।

युवा पुलिस अधिकारी फुसफुसाया, "मैं दया नायक हूं।" "मेरे पास हथियार हैं। गाड़ी के अंदर आ जाओ।" चिकना के पास आदेश का पालन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

हालांकि कालिया मुलाकात वाली जगह पर नहीं दिखा, लेकिन पुलिस के पास अब एक ऐसा जाल था जो उन्हें उस तक पहुंचने में मदद कर सकता था।

Machine Translated by Google

पूर्व अतिरिक्त पुलिस आयुक्त डॉ. सत्य पाल सिंह।

चिकना (सुन्दर)

चिकना के नाम से मशहूर नितेश कसारे की स्त्रीवत रहस्यमयी छवि कई गंभीर अपराधों की कुंजी थी। 5 फीट 2 इंच से थोड़े ज़्यादा लंबे और आकर्षक चेहरे वाले कसारे पंजाबी युवती की तरह कपड़े पहनकर आवासीय परिसरों और शॉपिंग क्षेत्रों की सावधानीपूर्वक जांच करते थे, ताकि किसी को शक न हो। वह महिलाओं की तरह चलता था, उनके हाव-भाव की नकल करता था और उसका साफ-सुथरा और चिकना रूप उसके भेष बदलने में मदद करता था।

मूल रूप से रायगढ़ जिले के श्रीवर्धन का रहने वाला कसारे पहली बार 1998 में खार में एक सड़क पर हुई लड़ाई में शामिल था। लुटेरों के एक गिरोह में शामिल होने से पहले वह जेबकतरी करता था। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, कसारे अपने प्रमुख सहयोगियों राम बोराडे और अक्कपाड़ा के साथ मिलकर 1994 से 1996 के बीच मध्य मुंबई में ज्वैलर्स से 20 किलोग्राम से अधिक सोना और 103 किलोग्राम चांदी चुराने में शामिल था, जिसकी कीमत 1 करोड़ रुपये से अधिक थी।

छोटा राजन ने अपने कारनामों की खबर अफवाहों के ज़रिए फैलने के बाद कसारे को काम पर रखा था। 30 से ज़्यादा गंभीर अपराधों में नाम आने के बाद, कसारे ने अप्रैल 2000 में पूर्व भारतीय क्रिकेट कप्तान मोहम्मद अज़रुद्दीन के दोस्त और व्यवसायी अशरफ़ पटेल को गोली मारकर अचानक राजन गिरोह में अपना कद बढ़ा लिया। बाद वाले को प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम के गिरोह के साथ कथित संबंधों के लिए निशाना बनाया गया था। कसारे की हत्या 15 जून, 2000 को हुई थी।

चिंदिस (लुटेरे)

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में लुटेरों को आमतौर पर चिंदी या रैग्स कहा जाता है।

अपराध शाखा अधिकारी प्रदीप शर्मा बताते हैं कि चिंदी मूलतः लुटेरे होते हैं, जिन्हें गैंगस्टर शूटर के रूप में नियुक्त करते हैं।

यह एक अपेक्षाकृत नया पेशा है, लेकिन इसकी मांग 1995 में तब बढ़ गई जब चिंदी जग्गू शेट्टी उर्फ फकीरा और उसके साथियों रोहित वर्मा, डीके राव और विनोद मटकर को ठाणे में एक बैंक से 66 लाख रुपये लूटने के आरोप में गिरफ्तार किया गया।

Machine Translated by Google

गुरु साटम से संपर्क किया, जिन्होंने उसकी जमानत का प्रबंध किया। इस बीच वर्मा की मुलाकात छोटा राजन उर्फ नाना से हुई। बाद में राव और शेट्टी भी 'नाना कंपनी' में शामिल हो गए।

जल्द ही, लुटेरों ने कॉन्ट्रैक्ट किलिंग को एक वैकल्पिक पेशे के रूप में अपना लिया, जिसका एक बहुत अच्छा कारण था। अगर कोई लुटेरा गिरफ्तार हो जाता है, तो आमतौर पर पूरा गिरोह बहुत जल्द ही पकड़ा जाता है। इससे उनके पास अपनी जमानत का प्रबंध करने या जेल में डब्बा (घर का बना खाना) उपलब्ध कराने का कोई अच्छा स्रोत नहीं बचता।

इन चिंदियों को अपनी जमानत का प्रबंध करने तथा रिहाई के बाद 'नौकरी' उपलब्ध कराने के लिए प्रभावशाली डॉन और गिरोहों की जरूरत पड़ती है।

चिंदियों को अक्सर बोझ भी माना जाता है, क्योंकि अगर उन्हें गिरफ्तार किया जाता है, तो वे पूरे गिरोह की योजनाओं का खुलासा कर देते हैं। कमियों के बावजूद, हाल के दिनों में छोटा राजन, अश्विन नाइक और रवि पुजारी जैसे गैंगस्टरों द्वारा कई चिंदियों को फ्रंटलाइन शूटर के रूप में पदोन्नत किया गया है।

चोर पाक्या

प्रकाश सकपाल उर्फ पाक्या का सांपों के प्रति लगाव तब विकसित हुआ जब बचपन में उन्हें सतारा के पास अपने पैतृक गांव में सांपों को संभालना सिखाया गया था। विले पार्ले के पास उनके घर में सांपों का एक बड़ा संग्रह था। सूत्रों का कहना है कि कुछ जानलेवा दिखने वाले सरीसृप शहर में आने वाले सपेरे लोगों से खरीदे गए थे।

शुरुआत में, पाक्या ने सहार-विले पार्ले इलाके में एक छोटे-मोटे डाकू के रूप में काम करना शुरू किया। उसके ज़्यादातर निशाने पर होटल व्यवसायी थे। पाक्या की कार्यप्रणाली यह थी कि जब उसके शिकार पैसे गिनने में व्यस्त होते थे, तो वह उन पर साँप फेंककर उन्हें डरा देता था। इससे पहले कि डरे हुए शिकार समझ पाते कि उन्हें क्या मारा गया है, छोटे कद का लेकिन हट्टा-कट्टा डाकू लूट के माल के साथ-साथ साँप को भी लेकर गायब हो जाता था, जिसे वह एक छोटे सूती बैग में रखता था।

घेरा

आर्थर रोड जेल में उन लोगों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द जो गिरोहों से संबद्ध नहीं हैं,

Machine Translated by Google

'सर्कल' शब्द की उत्पत्ति इस तथ्य से हुई होगी कि जेल के आंतरिक घेरे में आम कैदियों को रखा जाता है। उन्हें थोड़े अतिरिक्त भोजन के लिए छोटे-मोटे काम करने पड़ते हैं।

क्लिंटन (नकली अमेरिकी डॉलर के नोट)

नकली अमेरिकी डॉलर के नोटों के प्रमुख आरोपियों में से एक की पहचान संतोष शेट्टी के रूप में हुई है, जो छोटा राजन गिरोह का पूर्व सदस्य है।

पुलिस जांच से पता चला है कि शेट्टी चीन में एक संदिग्ध ऑपरेटर से नकली नोटों के लिए कागज खरीद रहा था। इस कागज का इस्तेमाल नकली डॉलर छापने में किया जाता है, जिसे अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'क्लिंटन' के नाम से जाना जाता है।

मुंबई पुलिस को माइकल फर्नांडीज नाम के एक व्यक्ति का नाम पता चला है, जिस पर भी नकली नोटों के गिरोह से जुड़े होने का संदेह है। उसे नोटों और कच्चे माल के परिवहन के लिए एक संदिग्ध शिपिंग फर्म का इस्तेमाल करते देखा गया है।

इस सिंडिकेट के पास इंडोनेशिया के जकार्ता के पास केबायोरन बारू में एक होटल भी है। इसका इस्तेमाल नकली मुद्रा के कारोबार के लिए एक मुख्य केंद्र के रूप में किया जा रहा है।

शेट्टी ने 1996 में नासिक जेल से रिहा होने के बाद राजेश मदन शर्मा नाम अपना लिया था, तथा 16 सितम्बर 2000 को बैंकाक में अपने साथी रोहित वर्मा की हत्या के बाद गिरोह में ऊपर की ओर बढ़ता गया।

कमांडर (उनके बिना मुठभेड़ नहीं जीती जा सकती)

वह आपका समझदार पड़ोसी हो सकता है, सोने की चेन दिखाने वाला कोई सफल व्यवसायी या मोबाइल से जुड़ा कोई शेयर ब्रोकर। वह निश्चित रूप से पांडु या छद्म पुलिसवाला नहीं है... या, एक मिनट रुकिए, क्या वह ऐसा हो सकता है? अगर वह दया मोहिते है, तो उसका टैग हेड कांस्टेबल या 'कमांडर' होगा, जैसा कि मुंबई पुलिस में उन्हें प्यार से पुकारा जाता है। या वह तेजतर्रार अल्लाद गायकवाड़ हो सकता है, एक और हेड कांस्टेबल जो अंडरवर्ल्ड को अच्छी तरह जानता है।

Machine Translated by Google

विजय अम्बेकर, अशोक पलांडे, प्रभु बेलकर, हरीश नाटू, कृष्ण जाधव, संतोष साठे और विनोद हतिस्कर उन 60 अन्य कांस्टेबलों में शामिल हैं जो उन दस्तों का हिस्सा हैं जो हाई-प्रोफाइल ऑपरेशनों के दौरान बदमाशों को रोकते हैं और उन्हें मार गिराते हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारी या जिन्हें 'एनकाउंटर स्पेशलिस्ट' कहा जाता है, ऑपरेशन में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं, लेकिन कांस्टेबल या कमांडर ही कठिन जमीनी कार्य करते हैं। उनके असंख्य कर्तव्यों में वाहन चलाना, घायल बदमाशों को अस्पताल पहुंचाना, संदिग्धों से जूझना, उनके बयान दर्ज करना, बदमाशों के रिकॉर्ड का व्यवस्थित रखरखाव और तलाशी अभियान शामिल हैं।

इनमें से अधिकांश कांस्टेबल, पुलिस बल में सबसे निचले पायदान पर होने के बावजूद, एक सम्मानजनक स्थिति का आनंद लेते हैं तथा इन कांस्टेबलों को खाकी वर्दी में शायद ही कभी देखा जाता है।
वे अच्छे कपड़े पहनते हैं -कभी-कभी उनका पहनावा भी हैरान कर सकता है- जबकि अन्य कैजुअल और जींस पसंद करते हैं। सेलफोन उनके लिए जरूरी है, क्योंकि नेटवर्किंग उनकी सफलता की कुंजी है।

कंपनी

आर्थर रोड जेल में बंद विचाराधीन कैदियों के लिए जीवन इतना कठिन नहीं है। उन्हें 'कंपनी' कहा जाता है, जिसका जेल की भाषा में मतलब अतिरिक्त आराम होता है।

और 'कंपनी' और एक साधारण कैदी के बीच जमीन आसमान का अंतर होता है। कंपनी के साथ बेहतर व्यवहार किया जाता है।

गैंगस्टरलैंड में क्रिकेट

जब दाऊद इब्राहिम के एक सरगना को बताया जाता है कि उसे एक 'सीजन बैट' भेजा जा रहा है, तो वह समझ जाता है कि उसे जल्द ही एक महत्वपूर्ण लक्ष्य पर हमला करने के लिए कलासनिकोव जैसा एक अत्याधुनिक स्वचालित हथियार मिलेगा।

इसी तरह, ' समाल के खेलना' (सावधानी से खेलना) का मतलब है कि पुलिस से सावधान रहना चाहिए। अंडरवर्ल्ड की भाषा में अंपायर को पुलिसवाला कहा जाता है। जब कोई गैंगस्टर कहता है 'अंपायर से बचो' तो इसका मतलब है कि पुलिस से सावधान रहना चाहिए।

Machine Translated by Google

कटिंग (टिप-ऑफ/सूचना)

दाऊद इब्राहिम अपने बहनोई इब्राहिम पारकर की हत्या का बदला लेने के लिए बेताब था, जिसकी 27 जुलाई 1992 को नागपाड़ा में हत्या कर दी गई थी। शूटरों की पहचान प्रतिद्वंद्वी अरुण गवली गिरोह के सदस्य शैलेश हल्दांकर और बिपिन शेरे के रूप में हुई थी।

हलदनकर और शेरे ने दगडी चॉल में सुरक्षित शरण ली थी और दाऊद के आदमी उन्हें निशाना बनाने में असमर्थ थे।

हालांकि, वीपी रोड पर एक टैक्सी ड्राइवर को मारने की कोशिश करने पर दोनों बदमाशों को भीड़ ने पीट-पीटकर मार डाला। दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया और 2 सितंबर 1992 को जेजे अस्पताल में भर्ती कराया गया।

दाऊद के आदमियों को गिरफ़्तारियों की भनक लग गई और जल्द ही 'कटिंग' डॉन तक पहुँच गई। इस खबर ने मास्टरमाइंड को बेचैन कर दिया। उसे पता था कि उसे पारकर की मौत का बदला लेने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा।

दाऊद को पता था कि अगर गवली को जमानत पर रिहा कर दिया गया तो वे भाग जाएंगे।
जेल के अंदर उनकी हत्या करना एक कठिन काम था।

करीबी सहयोगी सुभाष सिंह ठाकुर और सुनील सावंत उर्फ सौत्या ने वांछित लोगों को खत्म करने के लिए स्वेच्छा से काम किया। मुख्य शूटरों को दाऊद के सहयोगी श्यामकिशोर गरिगापट्टी और अजय शर्मा से रसद सहायता मिली।

12 सितंबर की रात को हत्यारा दस्ता जे.जे. अस्पताल के कैदी वार्ड नंबर 18 में घुस गया और एके 47 राइफलों से गोलियां बरसानी शुरू कर दीं।

इस हमले में हलदनकर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसका साथी शेरे गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस कांस्टेबल चिंताराम जसवर और कमलसिंह भानावत गोलीबारी में घायल हो गए और उनकी मौत हो गई।

हमलावर एक चोरी की फिएट कार में सवार होकर भाग गए, जिसमें अजय शर्मा भी सवार था।
बाद में स्थानीय चिकित्सक द्वारा शर्मा को उपचार दिए जाने के बाद वाहन को कमाठीपुरा के निकट लावारिस हालत में पाया गया।

Machine Translated by Google

सुबह करीब 4 बजे वे कल्याण-उल्हासनगर के मेयर जयंत सूर्यराव की सरकारी गाड़ी में बैठकर भागने में सफल रहे। हमलावर मलाड के पास एक ठिकाने पर पहुंचे, जहां शर्मा की गोली निकाली गई।

सूर्यराव की कार से न केवल पहला सुराग मिला, बल्कि उसकी गिरफ्तारी भी हुई। एक विशेष दस्ते ने तीन दिन बाद मुख्तियार मंजिल से इकबाल इस्माइल पारकर, रहीम फकी और इब्राहिम अंतुले को गिरफ्तार कर लिया।

Machine Translated by Google

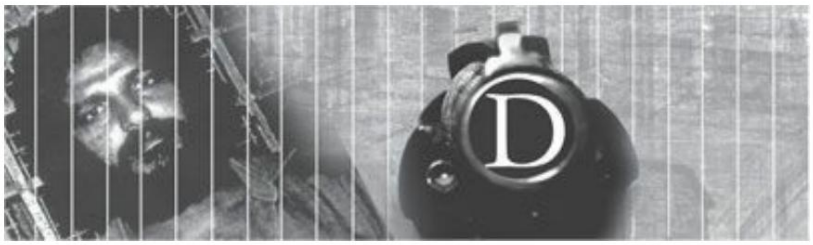

डी-कंपनी (दाऊद इब्राहिम गिरोह)

डी-कंपनी की शुरुआत मध्य मुंबई की गलियों - पाकमोडिया स्ट्रीट, टेमकर स्ट्रीट और बोरी मोहल्ला आदि से हुई थी और यह आज भी इसके प्रमुख कार्यों का केंद्र बना हुआ है।

डी-कंपनी दाऊद इब्राहिम का करोड़ों रुपये का अंडरवर्ल्ड साम्राज्य है जो उपमहाद्वीप में फैला हुआ है और इसमें खुफिया एजेंसी के साथ उसकी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मित्रता भी शामिल है। डी-कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को बस 'भाई' कहा जाता है।

उनके छोटे भाई नूरा, अनीस और मुस्तकिन कंपनी के संचालन में उनके प्रमुख सहयोगियों में से हैं।

डी-कंपनी की कहानी अनिवार्य रूप से और अभिन्न रूप से भारत की वाणिज्यिक राजधानी और बाद में दुबई और पाकिस्तान की पृष्ठभूमि में सीईओ की जीवन-कथा से जुड़ी हुई है।

'दूसरी दुनिया' के साथ उनका सबसे पहला संपर्क, जो बाद में उनका अपना बन गया, पुलिस के एक किराए के पंच (प्रत्यक्षदर्शी) के रूप में हुआ था।

डी-कंपनी के विकास के साथ ही जाली नोटों, मादक पदार्थों की तस्करी, जबरन वसूली रैकेट, बॉलीवुड वित्तपोषण, हवाला बाजार और सोने की तस्करी में भी वृद्धि देखी गई, क्योंकि कुछ राजस्व दुबई और पाकिस्तान ले जाया जाता था।

छोटा राजन अब डी-कंपनी का दुश्मन है, जिस व्यक्ति को डी-कंपनी ने मुंबई में अपने कामकाज के लिए तैयार किया था और जिस पर भरोसा किया था, उसने 1993 में अपना कारोबार शुरू कर दिया।
इनमें अबू सलेम, अली बुदेश और एजाज पठान जैसे अन्य लोग भी शामिल थे।

Machine Translated by Google

डब्बावाले

अंडरवर्ल्ड डॉन के दिल तक पहुँचने का रास्ता निश्चित रूप से उसके पेट से होकर जाता है। या ऐसा लगता है कि बड़ी संख्या में डब्बावाले अंडरवर्ल्ड के दरवाज़ों में अपने पैर जमा रहे हैं, खाना पहुँचा रहे हैं और कॉन्ट्रैक्ट किलर की भूमिका निभा रहे हैं। मुंबई पुलिस के अधिकारियों का कहना है कि इसका एक कारण यह है कि टिफिन वाहक जेल में बंद गैंगस्टर और सलाखों के पीछे की दुनिया के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करता है।

इस घटना की शुरुआत शूटर दीपक गडवाल उर्फ मंगई से हुई, जो कुख्यात गैंगस्टर साइमन के लिए डब्बावाला के तौर पर काम करता था , उसके बाद उसे शूटर के पद पर पदोन्नत कर दिया गया। जल्द ही गैंगस्टर छोटा शकील ने अपनी ट्रिगर फिंगर का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

80 से अधिक मामलों में नामजद मोहम्मद शेख मोहम्मद रफीक डब्बावाला (37) बॉलीवुड निर्माता निर्देशक राकेश रोशन की हत्या के सनसनीखेज प्रयास के पीछे है।

एक और ज्वलंत उदाहरण पूर्व माफिया डॉन अरुण गवली का गुर्गा, रविंद्र मोगुल पांडे उर्फ मेजर पांडे है, जो एक डब्बावाला से गिरोह का एक प्रमुख शूटर बन गया। 1992 में वैभव कथारे की हत्या में नामजद पांडे गिरोह के प्रमुख योजनाकारों में से एक बन गया। उसे टाडा के प्रावधानों के तहत हिरासत में लिया गया है।

मारा गया गैंगस्टर रविन्द्र सावंत गवली गिरोह में डब्बावाला के रूप में शामिल हुआ था , उसके बाद उसे गवली के प्रमुख सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा ने प्रशिक्षित किया था।
वकील के वेश में सावंत ने 18 अप्रैल 1994 को अश्विन नाइक पर गोली चला दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

अश्विन नाइक का मुख्य शूटर धनसिंह विश्वकर्मा उर्फ लाली, जिसका नाम भांडुप के होटल व्यवसायी कुरुप बंधुओं सहित एक दर्जन से अधिक हत्याओं में है, अपनी जड़ों को एक डब्बावाला के रूप में बताता है । गवली के साथी राजू फिलिप्स उर्फ गायकवाड़, नंदू फाइटर और छोटा शकील गैंगस्टर यूसुफ डब्बा सभी ने टिफिन के वाहक के रूप में शुरुआत की।

Machine Translated by Google

इसके पीछे की वजहें समझना मुश्किल नहीं है। डब्बावालों का इस्तेमाल अक्सर उनके गुरुओं द्वारा टिफिन कैरियर के एल्युमिनियम कवर के बीच से महत्वपूर्ण जानकारी, पैसे और सेल्युलर फोन को पास करने के लिए किया जाता है। इस दौरान एकत्र की गई संवेदनशील जानकारी अक्सर गिरोह के भीतर उसे स्थापित करने में मदद करती है।

डैडी (अरुण गुलाब गवली)

अरुण गवली उर्फ डैडी ने अपनी डरावनी छवि से लगभग छुटकारा पा लिया और खुद को एक नेकदिल सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में ढाल लिया। उन्होंने 1996 में दगड़ी चॉल की राजनीतिक शाखा अखिल भारतीय सेना (एबीएस) की स्थापना की।

1998 में गवली की गिरफ्तारी के बाद पार्टी का भविष्य अंधकार में चला गया था। लेकिन डॉन से राजनेता बने गवली को लगता है कि एबीएस एक राजनीतिक संगठन के रूप में विकसित हो रहा है और वे इसे पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रहे हैं।

गवली के राजनीतिक करियर को उस समय बढ़ावा मिला जब वह महाराष्ट्र में मध्य मुंबई निर्वाचन क्षेत्र से विधानसभा सदस्य चुने गए।

गवली पर पहले भी हत्याओं सहित एक दर्जन से अधिक गंभीर अपराधों में नामजद मुकदमा दर्ज है।
वह लगभग सभी मामलों में बरी हो चुका है।

दगडी चॉल के पूर्व प्रमुख का कहना है कि पुलिस ने उन्हें फंसाया है।
वह इस तथ्य से इनकार नहीं करते कि उन्हें अब भी प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों से खतरा है।

'डैडी' नाम तब से चलन में है जब उन्होंने घोषणा की कि वे अपने आस-पास रहने वाले लोगों की सेवा करना चाहते हैं। उनकी पत्नी जुबेदा मुज़्ज़वर उर्फ़ आशा गवली जल्द ही 'मम्मी' के नाम से जानी जाने लगीं।

गवली की महत्वाकांक्षाएं अभी भी बुलंद हैं। वह सामाजिक बदलाव की ओर अग्रसर है।

डैडी-मम्मी

अरुण गवली को 'डैडी' के नाम से जाना जाता है क्योंकि वह संगठन में पिता जैसा दिखता है। अन्य सहयोगी अक्सर उसकी पत्नी जुबेदा मुज़्ज़वर उर्फ आशा को 'डैडी' कहते हैं

Machine Translated by Google

'मम्मी' के रूप में।

दगडी चॉल

18 अगस्त, 1997. दोपहर करीब 2.30 बजे, एक मारुति 1000 तुलसियानी चैंबर्स में शांति स्टार बिल्डर्स के कार्यालय के बाहर आकर रुकी, जो नरीमन पॉइंट में एक व्यस्त सड़क पर स्थित है। यह दोपहर का भोजन था, और इस व्यापारिक जिले में कार्यालय जाने वाले लोग सड़क किनारे कई दुकानों पर थोड़ी देर के लिए बाहर निकल आए थे। जींस और शर्ट पहने तीन आदमी बिल्डर नटवरलाल देसाई के पास आए, जो अभी अपनी सफेद मारुति 1000 से उतर रहे थे।

एक ही क्षण में गोलियों की बारिश होने लगी और बिल्डर खून से लथपथ हो गया।

दिनदहाड़े हुई इस दुस्साहसिक हत्या ने मुंबई पुलिस की साख को तार-तार कर दिया है। पूर्व सैन्य अधिकारी और संयुक्त पुलिस आयुक्त आरएस शर्मा मीडिया की पूछताछ के लिए तैयार थे। "सर, कोई सफलता मिली?"

शर्मा: "अभी नहीं। लेकिन शक की सुई अरुण गवली गिरोह की ओर जा रही है। हमारे पास निश्चित रूप से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी है।"

शायद शर्मा के पास कोई चाल थी। पुलिस ने दगड़ी चॉल में किलेनुमा मकान की घेराबंदी कर रखी थी, जिसे सालों से गैंगस्टर का ठिकाना माना जाता था। फिर भी, दगड़ी चॉल को आसानी से नहीं हराया जा सकता था। गुप्त तहखानों और अंधेरी, गंदी गलियों के साथ, यह मकान हॉगगार्ट के महल को पीछे छोड़ सकता था, और हैरी पॉटर को कड़ी टक्कर दे सकता था।

अनुभवी क्राइम ब्रांच अधिकारी प्रफुल भोसले याद करते हैं, "जब भी पुलिस दगड़ी चाल पर छापा मारती थी, गवली अपने तीसरे तल के घर से एक गुप्त गुहा के माध्यम से दूसरे तल पर खिसक जाता था। रसोई में गुप्त तहखाने थे, जहां पुलिस दस्तों के आने पर वह छिप जाता था। भागने के स्थानों का पता लगाने में हमें कुछ महीने लग गए।"

यह किला रातों-रात नहीं बना है। मुंबई के माफिया सरदार रामा नाइक और उनके प्रमुख सहयोगी बाबू रेशिम ने 1970 के दशक के अंत से 1988 तक इस ठिकाने से खतरनाक 'बाइकुला कंपनी' का नेतृत्व किया। और सभी स्मारकों की तरह, दगड़ी शक्ति का प्रतीक था। मोटी ग्रेनाइट की दीवार ने केवल भव्य मुखौटे को ही जोड़ा। संरचना को सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया था

Machine Translated by Google

पुलिस की छापेमारी और प्रतिद्वंद्वी शूटरों द्वारा घात लगाकर किए गए हमलों से गैंगस्टरों की जान बच गई। लेकिन फिलहाल, तनाव साफ दिख रहा था और दीवारें थोड़ी-सी चरमरा रही थीं।

पुलिस उपायुक्त परमबीर सिंह को अपने बड़े ब्रेक का बेसब्री से इंतजार था। पूर्वी महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित भंडारा जिले में कुछ समय बिताने के बाद उन्हें हाल ही में मुंबई स्थानांतरित किया गया था। उन्होंने अपने डिप्टी से कहा, "मुझे दगड़ी चॉल में आने वाले हर व्यक्ति के बारे में जानकारी चाहिए।" "मैं चाहता हूं कि चॉल में तलाशी अभियान चलाने के लिए विशेष टीमें बनाई जाएं। गवली के साथियों के बारे में हर जानकारी हासिल करने की कोशिश करें।"

19 अगस्त की दोपहर को भोसले, अनंत केंजले, वाईएल जाधव और अशोक खोत दगड़ी चॉल में घुस गए। आस-पास की इमारतों की गहन तलाशी के बाद, दस्ता मुख्य इमारत में दाखिल हुआ, जहाँ गवली छिपा हुआ था। साथ में मौजूद एक कांस्टेबल के हाथ में लोहे की छड़ थी।

गवली के पास बहुत कम विकल्प बचे थे और वह अपनी पत्नी जुबेदा मुज्ज़वर उर्फ आशा गवली से एक असहाय बच्चे की तरह लिपटा हुआ था। उचित रूप से, आशा गवली को गिरोह द्वारा 'मम्मी' कहा जाता था। गश्त पर मौजूद एक पत्रकार मूक दर्शक है और इससे भी बढ़कर: वह पुलिस के लिए एक बड़ी बाधा है।

भोसले ने गवली को अलग करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद पुलिस सीढ़ियों से नीचे उतरी और पाया कि दूसरी मंजिल पर दरवाजे बंद थे। उन्होंने लोहे की छड़ से दरवाजा तोड़ा।

विजय कांबले उर्फ मुचवा, विजय श्रीरोडकर उर्फ सादे टीन और पंकज पांडे उर्फ जीतू को गोली मार दी गई, जिसे सामान्य भाषा में 'गोलीबारी' कहा जाता है।

दगडी शूटआउट

1991. दाऊद इब्राहिम के मुख्य शूटर सुनील सावंत, अनिल परब, बच्ची पांडे, बाबा गेब्रियल और संजय रग्गड़ ने दगड़ी चॉल में घुसकर एके 47 असॉल्ट राइफलों से अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। वे गैंगलॉर्ड रामा नाइक की हत्या में शामिल आमिर लंबू और यूसुफ लांबा की मौत का बदला लेने की कोशिश कर रहे थे।

इससे पहले बायकुला कंपनी के शूटर तान्या कोली, बंद्या आदिलकर और अप्पा

Machine Translated by Google

राणे उर्फ कच्चा पापड़ ने आमिर-यूसुफ की जोड़ी को खत्म करने के लिए पाकमोडिया स्ट्रीट पर हमला किया था। पाकमोडिया स्ट्रीट को दाऊद इब्राहिम का गढ़ माना जाता है।

डंबर (तार)

डंबर शब्द का अर्थ अक्सर उस व्यक्ति से होता है जिसका रंग गहरा होता है। काले रंग के गैंगस्टर को 'डंबरिया' के नाम से भी जाना जाता है।

दाना (अनाज)

दाना का मतलब है जिंदा कारतूस। यह एक पुराना शब्द है जिसका इस्तेमाल दाऊद इब्राहिम और उसके गुर्गों ने 1980 के दशक की शुरुआत में किया था।

दाऊद शमशेर खान

ऐसा माना जाता है कि दाऊद शमशेर खान उर्फ शफी खान वह व्यक्ति है जो दाऊद इब्राहिम को दुनिया भर में फैले उसके ड्रग कार्टेल को चलाने में मदद करता है।

खान गुजरात से काम करता है, लेकिन उसकी जड़ें मुंबई में हैं। उसने 1986 में डोंगरी में ड्रग माफिया करीम लाला के निजी अंगरक्षक के तौर पर काम करना शुरू किया था।
लेकिन यह रिश्ता ज्यादा दिनों तक नहीं चला - खान ने अपने लिए बड़ी योजनाएं बना रखी थीं।

उसने पहली हत्या स्थानीय गुंडे हामिद अजीज की की थी, जिसे 1987 में दक्षिण मुंबई में फन एंड फूड बार के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इसके बाद उसने मुंबई सेंट्रल में नवजीवन सोसाइटी के पास गैंगस्टर मुन्ना की हत्या की थी।

वह गुजरात चला गया, जहां उसने स्थानीय डॉन लतीफ खान और उसके छोटे भाई के साथ गठजोड़ कर लिया और अगले छह वर्षों में 30 से अधिक हत्याओं में उसका नाम सामने आया।

1999 में अहमदाबाद के पास एक मुठभेड़ में लतीफ को मार गिराए जाने के बाद खान सुरक्षित तरीके से पाकिस्तान जाने के लिए दुबई भाग गया। जहां वह दाऊद इब्राहिम के करीब पहुंच गया, वहीं गिरोह के कई अन्य सदस्य उसकी लगातार सक्रियता से नाराज थे।

Machine Translated by Google

गिरोह की सीढ़ी पर चढ़ना।

अपराध शाखा के एक अधिकारी के अनुसार, खान अब दाऊद के सबसे भरोसेमंद गुर्गों में से एक है, क्योंकि उसने और अब्दुल वहाब ने डेविड परदेसी की गोली मारकर हत्या कर दी थी।

दाऊद ने करोड़ों कमाए

अंदरूनी सूत्रों ने बताया कि दाऊद इब्राहिम किसी बिल्डर या व्यवसायी को फोन करता था, जब उसे उसके प्रोजेक्ट के बारे में पता चलता था। इसके बाद यह चालाक गैंगस्टर पुलिसवालों और राजनेताओं से अपने संबंधों का बखान करता था। इसके बाद वह अपने लक्ष्य को यह धमकी देता था कि अगर उसने दाऊद इब्राहिम को भागीदार के रूप में स्वीकार नहीं किया तो उसे क्या नुकसान उठाना पड़ेगा।

एक अंदरूनी सूत्र ने बताया, "अधिकांश मामलों में सद्भावना के तौर पर 30 प्रतिशत भागीदारी की पेशकश की गई थी।"

कुछ ही समय बाद पीड़ित को एक और कॉल आया कि साझेदारी की रकम तुरंत चुकाई जानी चाहिए। परियोजना शुरू होने से पहले ही लूट का माल इकट्ठा करने के लिए एक सहयोगी को नियुक्त कर दिया गया था।

यह रकम कई करोड़ रुपये में हो सकती है, जो दाऊद इब्राहिम को भागीदार बनाने के लिए बहुत बड़ी कीमत है। कुछ मामलों में, पैसा मिलने के बाद व्यवसायी को मार दिया जाता था और परियोजना को 'व्हाइट कॉलर' फ्रंट द्वारा अपने हाथ में ले लिया जाता था।

दिल्ली (दुबई)

दुबई को दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों के बीच दिल्ली के नाम से भी जाना जाता है।
इस शब्द का प्रयोग प्रतिद्वंद्वी बदमाशों को भ्रमित करने तथा पुलिस के जाल से दूर रखने के लिए किया जाता है।

देश भक्ति

छोटा राजन गिरोह के सदस्य, अपने गुरु छोटा राजन की तरह, अक्सर देश के प्रति अपनी महान सेवा के बारे में शेखी बघारते हैं। उनमें से ज़्यादातर का दावा है कि वे

Machine Translated by Google

भारतीय केन्द्रीय खुफिया एजेंसियों द्वारा इसका उपयोग किया जा रहा है।

प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर अपनी कथित देशभक्ति के विरोध में जेल में कुछ अतिरिक्त सुख-सुविधाओं की मांग करते हैं। या फिर मुठभेड़ में मारे जाने से बचते हैं।

लेकिन यह बकवास पूरी तरह से बेवजह नहीं हो सकती। राजन के पूर्व सहयोगी विकी मल्होत्रा और फरीद तनाशा नई दिल्ली, पश्चिम बंगाल और नेपाल में सक्रिय थे और उनके द्वारा किए जाने वाले कुछ काम सरकारी एजेंसियों द्वारा उन्हें सौंपे गए थे, उसके बाद उन्हें मुंबई पुलिस ने गिरफ्तार कर आर्थर रोड जेल में बंद कर दिया।

धोखा

गॉडफादर करीम लाला की अंडरवर्ल्ड गतिविधियों पर सईद बटला और दाऊद इब्राहिम के बीच आपसी प्रतिद्वंद्विता का भी असर पड़ा। आखिरकार, बटला और उसके दोस्त हैदरभाई ने दोनों गुटों के बीच शांति स्थापित करने के लिए मध्यस्थता की।

दाऊद के पिता इब्राहिम कासकर भी इस बातचीत में शामिल थे। यह बैठक 1983 के अंत में सिद्दी मोहल्ला की छत पर हुई थी। दोनों गिरोहों के सदस्यों ने पवित्र ग्रंथ की कसम खाकर एक-दूसरे से न लड़ने की कसम खाई थी।

बाद में गुस्साए बल्टा छत से चले गए लेकिन दाऊद और उसके भाई सिर्फ मुस्कुरा रहे थे।

इस मुलाकात के बाद बटला अपनी निजी सुरक्षा को लेकर लापरवाह हो गया। दाऊद अभी भी अपने पूर्व दुश्मन को लेकर सतर्क था और उसकी हरकतों पर नज़र रखता था।

समझौते के दो दिन बाद बाल्टा ने मोहम्मद अली रोड की बाधा पार करने और अपनी बहन बानू अप्पा से मिलने का फैसला किया, जो पीरखान स्ट्रीट पर रहती थीं।

जल्द ही दाऊद को अपने दुश्मन के बारे में पता चल गया। उसने अपने आदमियों को इकट्ठा करके अपने पूर्व दुश्मन पर हमला बोल दिया।

बटला अपनी बहन के गंदे अपार्टमेंट में घुसा और लंच से पहले नहाना शुरू किया ही था कि दाऊद और उसके आदमियों ने हमला बोल दिया। आंखों में साबुन लगा होने के कारण, हृष्ट-पुष्ट गैंगस्टर खुद का बचाव करने की स्थिति में नहीं था।

Machine Translated by Google

दाऊद और उसके आदमियों ने मौके से भागने से पहले उस पर कई बार चाकू और तलवारों से वार किया। बटला भाग्यशाली था कि वह बच गया और उसकी कुछ उंगलियां कट गईं।

इस हमले ने डोंगरी में गैंगवार को लगभग खत्म कर दिया। बटला जीवन भर के लिए अपंग हो गया और अक्सर अपनी बची हुई दो उंगलियों से इशारा करता था कि दाऊद को मारने के लिए वे काफी हैं। 2001 में मुंबई की सड़कों पर उसकी दर्दनाक मौत हो गई।

दाऊद के सामने एक स्पष्ट चुनौती खड़ी हो गई। फिर एक और प्रतिद्वंद्वी का सफाया हो गया और कुछ ही समय बाद उसने करीम लाला से तलवारें खींच लीं, जिसने बटला के साथ समझौता करवाया था।

धूर (शिकार)

धूर एक शिकार है जो अंततः जेल में बंद गैंगस्टरों को संरक्षण राशि के रूप में भारी रकम देता है। वाणिज्यिक अपराधों या 'सफेदपोश' अपराधों से जुड़े व्यक्ति को गिरोह द्वारा आसान लक्ष्य के रूप में चुना जाता है।

समाचार पत्र की रिपोर्ट पढ़ना और अपराध के नवीनतम रुझानों पर चर्चा करना जेल में बंद गैंगस्टरों का सबसे लोकप्रिय शगल है।

गिरोह के सरगना संभावित शिकार के मामले को ट्रैक करते हैं, जिसकी वित्तीय पृष्ठभूमि काफी मजबूत होती है। गिरोह को जल्द ही अंदाजा हो जाता है कि किसी चिह्नित आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजे जाने में कितना समय लगेगा। जेल में अपने सूत्रों से गैंगस्टर को धूर की वित्तीय पृष्ठभूमि के बारे में और जानकारी मिलती है।

जेल में अपनी सुरक्षा के लिए उसे संरक्षण राशि देने के लिए दबाव की रणनीति अपनाई जाती है।

उसके हाथ में एक मोबाइल फोन थमा दिया जाता है और उसे अपने रिश्तेदारों को फोन करने के लिए कहा जाता है।
पैसा गेट पर पहुंचा दिया जाता है और बैरकों में पहुंच जाता है।

ऐसे मामले सामने आए हैं जहां विचाराधीन कैदी जेल से कुछ लाख रुपये कमाकर बाहर निकलते हैं।
और धूर घाटे में चला जाता है।

Machine Translated by Google

डायमंड गैंग

हीरा गिरोह दादर से संचालित होता था और इसे वलगी-पालगी गिरोह के नाम से भी जाना जाता था। इसका मुखिया दलीप रामजी बोरिचा था, जिसने 1972 के आसपास पूर्व नेता सीताराम दादा से बागडोर संभाली थी। कुछ ही समय में सब्जी विक्रेताओं और स्थानीय व्यापारियों ने गुंडों को संरक्षण राशि देना शुरू कर दिया।

दादर, प्रभादेवी, लालबाग और गिरगांव के आसपास कई जुआ अड्डे थे, जो गिरोहों के लिए आसान लक्ष्य थे।

छोटे व्यापारी अमर मारुति नाइक उर्फ अमर बागवाला के वाल्गी गैंगस्टरों में शामिल होने के बाद, वे क्लब मालिकों और मटका संचालकों के साथ अधिक आक्रामक हो गए।

1995 तक, गिरोह को रमेश भोगले, हरिश्चंद्र मोची, अशोक दरेकर और दिलीप प्रभु जैसे सदस्यों के साथ मजबूत किया गया।

चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बाबिया की अगुआई वाले प्रतिद्वंद्वी गोल्डन गैंग ने दिलीप प्रभु की हत्या करके पहला हमला किया। प्रभादेवी के पास क्रांति नगर के खूंखार गैंगस्टर धसरत रहाणे को शामिल करके डायमंड गैंग को और मजबूत किया गया।

गोल्डन गैंग ने रमेश भोगले की हत्या करके बदला लिया। 1970 के दशक के अंत तक सत्ता समीकरण में उतार-चढ़ाव होता रहा।

सड़क पर होने वाली लड़ाइयाँ अमर नाइक के लिए वरदान साबित हुईं। खोपड़े और वलगी की व्यस्तता के कारण उसने दक्षिण मुंबई में अपना नेटवर्क फैलाया और हफ्ता (संरक्षण राशि की आवधिक वसूली) वसूली का सिलसिला शुरू कर दिया।

डायरी ले कर आना

डायरी का मतलब अंडरवर्ल्ड की भाषा में पैसा भी होता है। इसलिए जब कोई गैंगस्टर अपने साथी से डायरी लाने के लिए कहता है तो इसका मतलब होता है कि वह मीटिंग के लिए लूट का माल साथ लेकर आ रहा है।

Machine Translated by Google

दिलीप भुवा (भुवा उर्फ दिलीप कोकक)

लक्ष्य हंसराज शाह घाटकोपर पूर्व में एक दुकान पर फोन करने के लिए बैठे ही थे कि उन्हें एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी।

"क्या सेठ, फंस गया ना?", यह कहते हुए कुछ ही सेकंड बीत गए, तभी एक गोली उसके सिर में जा लगी और उत्तरी मुंबई के कंजूर मार्ग का यह व्यापारी लड़खड़ाता हुआ जमीन पर गिर पड़ा।

भुवा में एक रैटलस्नेक की तरह चकाचौंध करने वाली फुर्ती और जानलेवा प्रवृत्ति थी। गोलीबारी के दौरान वह लगभग एक पागल आदमी की तरह दिखता था।

बुवा और उनके मित्र योगेश पराडकर, शाह के पुलिस दल को दुकान के अंदर ही मृत छोड़कर, प्रतीक्षारत ऑटोरिक्शा में बैठ गए।

बुवा हंसराज के पीछे तीन महीने से भी ज़्यादा समय से पड़ा हुआ था, इससे पहले कि वह उसके करीब पहुँच पाता। हत्या से पहले, वह तीन दिन तक ऑटोरिक्शा में इंतज़ार करता रहा।

मूल रूप से कंजुर मार्ग का रहने वाला भुवा अपने पूर्व गुरु अशोक जोशी से अलग होकर दाऊद इब्राहिम गिरोह से जुड़ गया था। छोटा राजन उस समय दाऊद का भरोसेमंद सिपाही था।

11 नवम्बर 1991 को लोकण्डवाला कॉम्प्लेक्स में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ए.ए. खान की टीम के साथ मुठभेड़ में उनकी सहयोगी माया डोलास के साथ मृत्यु हो गई।

दिलीप को उनके धार्मिक प्रवृत्ति के कारण भुवा नाम का उपनाम मिला।
करीब 6 फीट लंबे, वह हमेशा काउबॉय हैट और टखने के जूते पहनते थे, जिसमें वह अपना चाकू छिपाते थे। दूसरी ओर, डोलास की लंबाई केवल 5 फीट 6 इंच थी।

भुवा अपना ज़्यादातर समय उत्तरी मुंबई के कंजूर गांव में मछली बाज़ार के पास बिताता था। वह अक्सर बच्चों को चॉकलेट दिया करता था और यह यकीन करना मुश्किल है कि वह इतना ख़तरनाक गैंगस्टर था।

दिमाग में भूख चढ़ गया

Machine Translated by Google

बुखार)

मध्यम स्तर के गैंगस्टर को अक्सर यह कहते सुना जाता है , 'उसका दिमाग में भूख चढ़ गया। उसको ठीक कर दो।' इस शब्द का प्रयोग तब किया जाता है जब कोई लक्ष्य पैसे देने से इंकार कर देता है।
'भूखार को ठीक कर दो' यानी पीड़ित पर पैसे देने का दबाव बनाना।

'डीके' भाई (एक ब्रांड नाम)

डीके (दिलीप कुलकर्णी) का नाम जबरन वसूली के 125 से ज़्यादा मामलों और हत्या के चार मामलों में दर्ज है। दरअसल, क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी ने बताया कि 1998 से पीड़ितों को अचानक डीके भाई के नाम से धमकियाँ मिलनी शुरू हो गईं। डर के मारे पीड़ित अपनी माँगें पूरी करने के लिए दगड़ी चॉल पहुँचे, लेकिन उनमें से ज़्यादातर ने गैंगस्टर को देखा ही नहीं। अलग-अलग पुलिस मुठभेड़ों में शीर्ष सहयोगियों सदा पावले उर्फ मामा, गणेश भोसले उर्फ वकील और संतोष आदिलकर उर्फ बंद्या के मारे जाने के बाद कुलकर्णी को 'ब्रांड नाम' के तौर पर प्रचारित किया गया। गिरोह एक ऐसे नाम की तलाश में था जो आतंक फैलाए और कुलकर्णी इस काम के लिए बिल्कुल सही था, क्योंकि वह दगड़ी चॉल के सबसे वरिष्ठ जीवित सदस्यों में से एक था।

पुलिस सूत्रों का कहना है कि कुलकर्णी यह सुनकर हैरान रह गए कि उनका नाम भय का पर्याय बन गया है।

दगड़ी चॉल के पास रहने वाले एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखने वाले कुलकर्णी को 1988 के आसपास अभाजी शेंटी उर्फ माली ने अपराध की दुनिया से परिचित कराया था। उन्होंने ओबेरॉय टावर्स में अटेंडेंट की नौकरी छोड़ दी और गवली गिरोह में शामिल हो गए। एक पुराने दोस्त का कहना है कि अंडरवर्ल्ड के लिए काम करने से पहले कुलकर्णी शर्मीले और मेहनती थे। उनकी किस्मत साथ नहीं दे रही थी और 22 अप्रैल, 2000 को एक मुठभेड़ में मारे गए।

'दो बोजे के आदमी हूँ' (मैं एक छोटा व्यापारी हूँ)

दाऊद इब्राहिम के बारे में एक रहस्य यह भी था कि वह एक अंडरस्टडी था, उसके काम अक्सर उसकी महत्वाकांक्षाओं को दर्शाते थे। दाऊद सिर पर बोझा या बोस्की कपड़ा या 'बोजा' उठाता था , जैसा कि 1970 के दशक के अंत में जाना जाता था। बोजा करीब 200 मीटर की दूरी पर होता था और उसका काम कपड़ा बेचना और कमीशन रखना था।

Machine Translated by Google

महेश डोलकिया उस समय बोस्की के मुख्य खुदरा विक्रेता थे। वह ग्रांट रोड पर अलंकार सिनेमा के पास अपने परिसर से काम करता था। दाऊद और उसका बड़ा भाई शब्बीर उसके ग्राहकों में से थे। यहीं पर डॉन शशि रसम ने दाऊद को देखा। उसने तुरंत डोलकिया को चेतावनी दी कि वह सुनिश्चित करे कि यह युवा लड़का अलंकार सिनेमा और खेतवाड़ी क्षेत्र को विभाजित करने वाली सड़क को पार न करे। रसम ने महेश को चेतावनी देते हुए कहा, "उसे फुटपाथ के अपने छोर पर रखो।" "मैं शब्बीर पर भरोसा कर सकता हूं, लेकिन दाऊद पर नहीं। वह बहुत विश्वासघाती लगता है।" "नहीं भाई। मैं दो बोझे का आदमी हूं ।" दाऊद ने जवाब दिया।

हालांकि दाऊद ने रसम के शासनकाल के दौरान कभी भी सड़क पार नहीं की, लेकिन महेश डोलकिया को रसम को गंभीरता से न लेने की भारी कीमत चुकानी पड़ी - बाद में दाऊद के गुर्गों ने उसे मार डाला।

दूसरे घर पे आना (दूसरी लाइन पर मुझे कॉल करें)

यह अभिव्यक्ति गैंगलैंड में यह दर्शाने के लिए प्रयोग की जाती है कि या तो बातचीत सुनी जा रही है या फोन लाइन टैप की जा रही है।

दो तांग ले कर आना

दो टांग ले कर आना का मतलब है मोटरसाइकिल पर मौके पर आना।

'दो तांग' सिद्धांत को तब महत्व मिला जब 1990 के दशक के मध्य में अंडरवर्ल्ड शूटरों द्वारा अपराध स्थल से भागने के लिए दोपहिया वाहनों का खुलेआम इस्तेमाल किया गया।

पुलिस ने दोपहिया वाहनों पर भागने वाले बदमाशों को चुनौती देने के लिए सर्वव्यापी बीट मार्शलों का गठन किया। मोटरसाइकिल सवार पुलिसकर्मी वास्तव में बदमाशों के लिए एक निवारक बन गए और उन्हें अपने तरीके बदलने के लिए मजबूर कर दिया।

चिकित्सक

Machine Translated by Google

डॉक्टर एक कानून प्रवर्तन अधिकारी है जो अंडरवर्ल्ड के वेतन पर काम करता है। इस शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई गैंगस्टर चाहता है कि उसका साथी किसी अधिकारी से मदद मांगे।
'जा डॉक्टर को मिल ले' का मतलब है कि जाओ और अधिकारी से मिलो, वह तुम्हारी मदद करेगा।

ड्रम (एक करोड़)

अंडरवर्ल्ड के गलियारों में 'ड्रम' का मतलब एक करोड़ रुपए होता है। इस शब्द का इस्तेमाल ज़्यादातर सट्टेबाज़ क्रिकेट मैचों के दौरान सट्टा लगाते समय करते हैं। नई दिल्ली और मुंबई में सट्टेबाज़ इस शब्द का इस्तेमाल जासूसी करने वाली पुलिस से बचने के लिए करते हैं।

दुबई हत्या

तिलक नगर दशकों से आपराधिक गतिविधियों और हत्याओं का गढ़ रहा है। उत्तरी मुंबई के चेंबूर में एक समय निम्न मध्यम वर्गीय इलाके में दर्जनों हत्याएं रची गईं।

दुबई के इंडिया क्लब में दाऊद इब्राहिम के दाहिने हाथ शरद शेट्टी उर्फ बड़ा इडली की हत्या की साजिश कथित तौर पर तिलक नगर के पास एक छोटे से पब में रची गई थी, जो प्रतिद्वंद्वी छोटा राजन के गढ़ से थोड़ी दूरी पर है।

प्रारंभिक खाका तब तैयार किया गया था जब 2001 की शुरुआत में चेंबूर में राजन के गुर्गे ने दुबई में व्यवसाय करने वाले एक भारतीय प्रवासी से संपर्क किया था। कहा जाता है कि राजन ने व्यवसायी को इंडिया क्लब की सदस्यता के लिए लगभग एक करोड़ रुपये का भुगतान किया था। इससे संभावित हत्यारों को अपने कार्यक्षेत्र की गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन करने में मदद मिली।

राजन ने कथित तौर पर नेपाल में मौजूद अपने भरोसेमंद साथी बालू डोकरे को ऑपरेशन की जिम्मेदारी लेने का आदेश दिया था। डोकरे के साथ मुंबई के शूटर अतुल पोटेदार भी शामिल थे। उनके द्वारा नियुक्त चार अन्य लोग नेपाली नागरिक अमर बहादुर बाम, मनोज कुकियन, राजपूत करणसिंह, नरसिंह और स्मिथ वासा कुलत बुनाबन थे। पुलिस का कहना है कि उन्हें हत्या करने के लिए 5-5 लाख रुपये की पेशकश की गई थी।

Machine Translated by Google

ऐसा कहा जाता है कि चारों लोग पेशेवर नाविक के रूप में जनवरी के प्रथम सप्ताह में विजिटर वीजा पर दुबई में दाखिल हुए थे, जिनके पास लाइबेरियाई सतत निर्वहन प्रमाण पत्र (सीडीसी) था, जो पासपोर्ट के समकक्ष होता है।

19 जनवरी 2002 को हत्यारे दस्ते के तीन सदस्यों को क्लब की सदस्यता प्रदान की गई। आम तौर पर, विज़िटर वीज़ा पर आए लोगों को क्लब में प्रवेश नहीं दिया जाता। कुचैन और नरसिंह को लक्ष्य पर गोली चलाने का काम सौंपा गया।

रात करीब 8.30 बजे, दो हमलावरों ने शेट्टी को चौंका दिया और करीब से पांच राउंड फायर किए। बाम को भागने वाली कार चलानी थी, जो बाद में एक पार्किंग में छोड़ी हुई पाई गई।

दुबई पुलिस की एक टीम ने हत्यारों का पता लगाने में कामयाबी हासिल की और तीनों को उस समय पकड़ लिया जब वे यूएई से भागने के लिए जहाज पर चढ़ने की योजना बना रहे थे। हत्या में इस्तेमाल किए गए हथियार बाद में एक कूड़ेदान से बरामद किए गए।

दूध-पाव (भोजन उपलब्ध कराने वाला व्यक्ति)

गिरोह समर्थक को कभी-कभी दूध के नाम से भी जाना जाता है

Machine Translated by Google

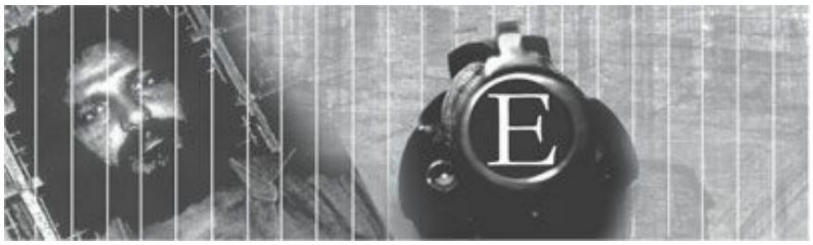

एक नंबर (कार)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'एक नंबर' का मतलब कार होता है। इसकी उत्पत्ति: चाइना पेटी खेल से हुई है।

ग्यारह नंबर बस रूट

ग्यारह नंबर बस रूट का मतलब है कि घटनास्थल से पैदल ही भागना। ग्यारह दो पैरों का संक्षिप्त रूप है।

एनकाउंटर बचाओ (एनकाउंटर स्पेशलिस्ट की गोलियों से बचना)

गैंगस्टर छोटा राजन का मुख्य शूटर सतीश टंकप्पन जोसेफ 1996 में मुंबई की आर्थर रोड जेल से जमानत पर रिहा हुआ था, तभी वह खार में एक अन्य मामले के चश्मदीद गवाह मोहन शिंदे की हत्या का मुख्य संदिग्ध बन गया।

खार पुलिस ने जोसेफ को जल्द ही खोज निकाला। पूछताछ के लिए उसे नजदीकी पुलिस स्टेशन ले जाया गया, संदिग्ध को लेकर जा रहे पुलिस दल के सदस्य तब दंग रह गए जब उसने अचानक अधिकारी की मेज से मुट्ठी भर पिन उठाकर निगल ली। उसे तुरंत इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया।

एक आम आदमी को जोसेफ का व्यवहार असाधारण लग सकता है। लेकिन

Machine Translated by Google

गैंगस्टर के रूप में, पिन ने सुनिश्चित किया कि उसकी ज़िंदगी 'मुठभेड़' में खत्म न हो। उसे शायद यह एहसास हो गया होगा कि पुलिस दस्ता उसे खत्म करने की योजना बना रहा है।

ऐसा सिर्फ़ गैंगस्टरों के साथ ही नहीं होता। जेबकतरे और छोटे-मोटे चोर भी मुठभेड़ में गोली लगने और मारे जाने से बचने के लिए अक्सर खुद को ब्लेड से मार लेते हैं या चाकू घोंप लेते हैं। तर्क-वे जानते हैं कि हिरासत में लिए जाने पर सभी संदिग्धों की मेडिकल जांच की जाएगी। अगर वे पहले ही मर चुके हैं, तो उनका पोस्टमार्टम किया जाएगा। पुलिस के साथ मुठभेड़ से ठीक पहले लगी कोई भी चोट सवाल खड़े करेगी।

अतिरिक्त

एक्स्ट्रा वे लोग होते हैं जो हत्या में मुख्य शूटर की सहायता करते हैं। वे निगरानी रखने से लेकर गोलीबारी में इस्तेमाल किए गए हथियार के साथ भागने तक के कई काम करते हैं। एक एक्स्ट्रा भागने वाली कार के ड्राइवर की भूमिका भी निभा सकता है।

Machine Translated by Google

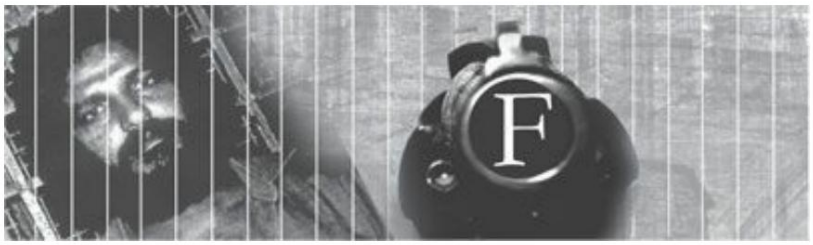

फास्ट दे रहा है

फास्ट दे रहा है का मतलब है किसी से बचना। खास तौर पर, जब कोई लक्ष्य गैंगस्टरों से दूर रह रहा हो और सुरक्षा राशि नहीं दे रहा हो।

फारूक बटाटावाला (मुंबई अंडरवर्ल्ड का विश्वकोश)

कस्टम प्रिवेंटिव ऑफिसर फारूक बटाटावाला शहर के अंडरवर्ल्ड के बारे में चलता-फिरता विश्वकोश था। क्राइम ब्रांच को उसने दर्जनों अहम जानकारियाँ दीं, जिनकी बदौलत 1993 के सीरियल बम धमाकों का मामला सुलझा।

क्राइम ब्रांच की जांच धीमी गति से चल रही थी, तभी बटाटावाला ने मदद करने की पेशकश की। बटाटावाला के अलावा क्राइम ब्रांच ने अन्य मुखबिरों को भी तैयार किया। हुसैन वस्तारा और शफी तूफानी ने मिलकर एक खतरनाक तिकड़ी बनाई जो पुलिस को अंडरवर्ल्ड और मुंबई और उसके आसपास चल रहे तस्करी सिंडिकेट से जुड़ी लगभग हर चीज के बारे में जानकारी दे सकती थी।

बटाटावाला ने कथित तौर पर डोंगरी की एक व्यस्त सड़क पर ए. खान पर नजदीक से गोली चलाई, जिससे उसकी तुरंत मौत हो गई। सीमा शुल्क अधिकारी दो दिन तक फरार रहा और फिर उसने आत्मसमर्पण कर दिया। उसे ड्यूटी से निलंबित कर दिया गया था।

जेल में उसकी मुलाकात सीरियल ब्लास्ट मामले के अन्य आरोपियों से हुई; कई लोगों को उसकी सूचना पर गिरफ्तार किया गया। रिहा होने के बाद वह उनके लिए प्रचारक बन गया।
बटाटावाला ने अगले कुछ महीनों में कई वरिष्ठ राजनेताओं से मुलाकात की और कुछ आरोपियों की दुर्दशा पर प्रकाश डाला। राजभवन में ऐसी ही एक बैठक के बाद

Machine Translated by Google

1 मई 1998 को छोटा शकील के खास गुर्गे सगीर शेख और आरिफ कालिया ने बटाटावाला की हत्या कर दी। हमलावरों ने उसे भिंडी बाजार की एक व्यस्त सड़क के कोने पर अचानक से घेर लिया।

फील्डिंग

जब अंडरवर्ल्ड किसी सार्वजनिक हत्या की योजना बनाता है तो अक्सर फील्डिंग शब्द का प्रयोग किया जाता है।

औसतन छह से आठ लोग गोलीबारी में शामिल होते हैं।
ऑपरेशन जटिल टीमवर्क का परिणाम होते हैं। निशानेबाज आमतौर पर कोर ग्रुप के सदस्य होते हैं जो एक साथ मिलकर अच्छा काम करते हैं।

यह कार्य एक समूह के नेता को सौंपा गया है, क्योंकि प्रत्येक गिरोह में कई समूह होंगे।

निगरानीकर्ता पदानुक्रम में सबसे निचले पायदान पर होता है। उसका काम लक्ष्य के बारे में छोटी-छोटी जानकारी इकट्ठा करना होता है, जैसे उसकी रोज़मर्रा की आदतें, पसंदीदा जगहें, गर्लफ्रेंड के साथ संबंध और कोर्ट केस, अगर कोई हो। कुछ मामलों में जानकारी दुश्मन द्वारा दी जाती है, जिसके इशारे पर हत्या की जाती है।

तीन से चार सदस्यों की एक बैकअप टीम अक्सर हत्या के बाद शूटर की सहायता करती है। उनके काम में भागने में मदद करना, छिपने के लिए सुरक्षित घर उपलब्ध कराना और वित्तीय मदद करना शामिल है।

योद्धा

अगर आपको बंदूक चलाना नहीं आता और फिर भी आप सड़क पर निशाना साधकर किक और घूंसे चला लेते हैं, तो आपको 'फाइटर' कहा जाता है। यानी तब तक जब तक आप शूटर नहीं बन जाते, जो अंडरवर्ल्ड की सीढ़ी पर अगला पड़ाव है।

फ़ाइल ले कर आना

Machine Translated by Google

अंडरवर्ल्ड की भाषा में फाइल ले कर आना का मतलब है हथियार लेकर अपराध स्थल पर पहुंचना। शुरू में पुलिस को लगा कि फाइल विवाद निपटाने से संबंधित है और इसमें महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं। वास्तविक अर्थ को समझने के लिए क्राइम ब्रांच के जासूसों को टेलीफोन इंटरसेप्शन का विश्लेषण करने में कई सप्ताह लग गए।

Machine Translated by Google

गद्दारी (विश्वासघात)

मिर्जा भारत से चोरी की गई कारों की तस्करी नेपाल में करता था। यह काम ज्यादातर उत्तर प्रदेश के डॉन ओम प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ बबलू श्रीवास्तव से जुड़े गिरोहों के जरिए होता था।

पुलिस ने 16 मई 1996 को बेग के ठिकाने से 20 किलोग्राम आरडीएक्स बरामद किया था। इससे पहले सीमा पुलिस ने बेग की कार से सात एके 47 राइफलें जब्त की थीं, जब वह नेपाल के महेंद्रगंज से भारतीय सीमा में कृष्णानगर जा रहा था।

अक्टूबर 1998 में, छोटा राजन को बेग को ख़त्म करने के लिए एक अनुबंध की पेशकश की गई थी, कथित तौर पर भारतीय खुफिया विभाग के कुछ प्रभावशाली अधिकारियों के इशारे पर।

लेफ्टिनेंट ओपी सिंह उस समय चौंक गए जब राजन उर्फ नाना ने उनके मोबाइल फोन पर संदेश दिया। राजन ने कहा, "पार्टी से मिल लो।"

"भैया तो गद्दारी होगी ना? ", सिंह ने एक लंबी चुप्पी के बाद तर्क दिया।

राजन ने ओपी को यह विश्वास दिलाया कि इस हत्या से उसके गिरोह के सदस्य भारतीय खुफिया विभाग के कुछ बहुत वरिष्ठ अधिकारियों के करीब आ सकते हैं। इसका मतलब यह भी हो सकता है कि देश भर में बहुत गंभीर अपराधों में शामिल सहयोगियों को रियायतें मिल सकती हैं।

ओपी को यह काम सौंपा गया था कि वह बबलू श्रीवास्तव को मनाए कि वह मुंबई के कुछ शूटरों को नेपाल में अपने नेटवर्क का इस्तेमाल करने की अनुमति दे। खास तौर पर, वे बेग के बारे में अंदरूनी जानकारी हासिल करना चाहते थे।

Machine Translated by Google

लंबे और सुगठित शरीर वाले ओपी की मुलाकात बबलू श्रीवास्तव से इलाहाबाद के पास नैनी जेल में हुई।

उन्हें आश्वासन दिया गया था कि 23 मार्च 1993 को इलाहाबाद में अतिरिक्त कलेक्टर, सीमा शुल्क एल.डी. अरोड़ा की हत्या से संबंधित उनके मामले में कुछ अधिकारी नरम रुख अपनाएंगे।

बबलू की शुरुआती प्रतिक्रिया नकारात्मक थी। उन्होंने ओपी से कहा, "यह विश्वासघात के बराबर होगा।"

बबलू के लिए यह एक कठिन निर्णय था। बेग उनके गुरु थे और वह उन्हीं के मार्गदर्शन में आगे बढ़े थे।

हालांकि, बबलू ने हार मान ली और साजिश जल्द ही अंजाम दी गई। उसकी भूमिका राजन के शूटरों को रसद सहायता प्रदान करने तक ही सीमित थी।

गाड़ी (ट्रेन)

जेल के अंदर गुदामैथुन

जेलों में भीड़भाड़ होती है और कैदियों के पास पीठ के बल सोने के लिए भी पर्याप्त जगह नहीं होती। लोग ज़्यादातर करवट लेकर सोते हैं। यही वह समय होता है जब ज़्यादातर समलैंगिक कैदी हरकत में आते हैं।

जब कैदी एक दूसरे के करीब सोते हैं और उनमें से समलैंगिक सेक्स करते हैं, तो पूरी संरचना एक रेलगाड़ी जैसी दिखती है, इसलिए इसे 'गाड़ी' कहा जाता है।

घड़ियाल (घड़ी)

अंडरवर्ल्ड में टाइम बम को 'गड़ियाल' के नाम से भी जाना जाता है । यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि दोनों का संबंध समय से है।

गांव

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'गाँव' का मतलब दुबई होता है। इस शब्द का इस्तेमाल अंडरवर्ल्ड से दूर रहने के लिए किया जाता है।

Machine Translated by Google

जासूसी पुलिस.

गंध (बुरा)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में गंधा का तात्पर्य पुलिसकर्मी से है।

गंडिबापू

गांडीबापू अंडरवर्ल्ड में किए गए काम के लिए दिया जाने वाला पैसा है। गिरोह के सरगना हमेशा यह सुनिश्चित करते हैं कि एक पैदल सैनिक को काम के लिए उससे किए गए वादे का केवल 40 प्रतिशत ही दिया जाए। एक अंदरूनी सूत्र का कहना है कि ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि भाड़े का व्यक्ति मालिक पर निर्भर रहे। इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि गैंगस्टर गिरोह छोड़कर न जाए। भाड़े का व्यक्ति अपने पैसे वापस पाने का इंतजार करता है लेकिन वह कभी नहीं मिलता।

आम तौर पर, वह ज़्यादा काम संभालेगा और रोकी गई रकम बढ़ती रहेगी। अगर किराएदार को गिरफ़्तार कर लिया जाता है, तो गैंगस्टर पैसे रख लेता है। कभी-कभी पैसे का इस्तेमाल अदालत में फ़ौजी का बचाव करने के लिए वकीलों को नियुक्त करने में किया जाता है।

गरिगापट्टी (द मास्टरमाइंड)

श्यामकिशोर गरीगापट्टी उर्फ कनिया ने 2003 की शुरुआत में कल्याण जेल से भागने से पहले अपने जमानत दस्तावेजों में जालसाजी की थी।

क्राइम ब्रांच के एक अधिकारी ने बताया, "हेडली चेज़ की कहानी को कुछ ही घंटों में पढ़ना और जेल की कोठरी में कुछ ही मिनटों में वैसी ही साजिश रच देना, गरीगापट्टी की विशेषता थी।"

क्राइम ब्रांच को रफीक डब्बावाला पर नज़र रखते समय गरिगापट्टी की चालाकी का पता चला। टिफिन बॉय अपने गुरु के कहने पर खुद को अली बुदेश बताकर धमकी भरे कॉल करता था। कॉल घाटकोपर से की जाती थी और खाड़ी देश में एक निजी एक्सचेंज के ज़रिए रूट की जाती थी।

गरीगापट्टी ने सूरत स्थित एक प्रमुख साड़ी निर्माता से पैसे ऐंठने के लिए इसी प्रकार की चाल चली।

Machine Translated by Google

इस मामले में बॉलीवुड अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पिता सुरेंद्र शेट्टी का नाम भी शामिल है। सेवानिवृत्त भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी के बेटे गरिगापट्टी ने अपने जीवन में कभी एक भी गोली नहीं चलाई। यह सब तब हुआ जब उन्हें 1980 के दशक के मध्य में खूंखार गैंगस्टर सुभाष सिंह ठाकुर का बहुत करीबी माना जाता था।

इसके बावजूद, वह शहर में हुई कुछ सबसे खूनी गोलीबारी में शामिल था। 1992 में जेजे अस्पताल में हुई गोलीबारी इसका ज्वलंत उदाहरण है।

घाटकोपर के एक स्थानीय कॉलेज से स्नातक, गरिगापट्टी ने पड़ोसी रफीक खान से खतरे को बेअसर करने के लिए ठाकुर के साथ हाथ मिलाया। बाद में 1993 में शहर को हिला देने वाले सीरियल बम धमाकों में बाद वाले का नाम आया।

दुबले-पतले इस मास्टरमाइंड ने दस साल से ज़्यादा जेल में बिताए। क्राइम थ्रिलर और गुलाबी साड़ी या ड्रेस में महिलाएँ उसकी कमज़ोरियाँ थीं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसने अपने मोबाइल फ़ोन पर जेल की कोठरी से कई महिलाओं के साथ संबंध बनाए।

घाटला गांव

चेंबूर पूर्व में यह निम्न आय वर्ग वाला इलाका 1980 के दशक की शुरुआत में राजन नायर उर्फ बड़ा राजन और बाद में छोटा राजन की जागीर बन गया था, खासकर साधु शेट्टी के तिलक नगर के बदमाशों से हाथ मिलाने के बाद। पंड्या चव्हाण कॉलोनी से एक और भर्ती था। यहां के जंगल और संकरी गलियां बदमाशों के लिए सुरक्षित ठिकाना थीं। 1997 से 2001 के बीच दर्जनों बदमाशों के मारे जाने के बाद इस विचित्र गांव में शांति लौट आई।

घोड़ा (बंदूक ने उसे पकड़ लिया)

अपने नियमित गश्ती दौरों के दौरान, एक पुलिस अधिकारी ने एक हट्टे-कट्टे युवक को अपनी मोटरसाइकिल को अनियमित तरीके से चलाते हुए देखा। उस व्यक्ति में कुछ ऐसा था जिसने पुलिस उपायुक्त को संदेहास्पद बना दिया।

अपनी सूझबूझ के आधार पर पुलिस अधिकारी ने उस व्यक्ति को पकड़ लिया और उससे पूछताछ शुरू कर दी। फिर उसे दादर पुलिस स्टेशन ले जाया गया। थाने में युवक ने पूछताछ की।

Machine Translated by Google

उसने अनुरोध किया कि उसे शौच जाने की अनुमति दी जाए। संदेहास्पद होने के बावजूद, जांच अधिकारी ने उसे अनुमति दे दी।

पुलिस अधिकारी को यह नहीं पता था कि जिस व्यक्ति से वह पूछताछ कर रहा है वह खूंखार गैंगस्टर संजय वसंत नेहर उर्फ संजय रग्गड़ है; वह यह भी नहीं जानता था कि रग्गड़ ने अपने अंडरवियर में एक आयातित पिस्तौल छिपा रखी है। रग्गड़ को बस अपना घोड़ा या बंदूक छुड़ाने का बहाना चाहिए था।

हालांकि, पिस्तौल धड़ाम से गिर गई। रग्गड़ ने उसे छिपाने की कोशिश की, लेकिन वह नाकाम रहा और रंगे हाथों पकड़ा गया। बाद में, छोटा राजन के इस सहयोगी ने शहर में चार हत्याओं में अपनी संलिप्तता कबूल की। तब से, शहर के गैंगस्टरों ने सबक सीख लिया है।

शूटर शायद ही कभी हत्या से पहले या बाद में घोड़ा लेकर चलते हैं। पिछले कुछ सालों में, गिरोह के नेताओं ने यह सुनिश्चित किया है कि उनके शूटर कभी भी हथियारों के साथ पकड़े न जाएँ। यह रणनीति न केवल यह सुनिश्चित करती है कि शूटरों को पकड़ने के लिए कोई सबूत न हो, बल्कि यह भविष्य के ऑपरेशन के लिए महंगे हथियारों को बचाने में भी मदद करती है। गिरोह यह कैसे सुनिश्चित करते हैं?

हथियार किसी अनजान दोस्त या पड़ोसी द्वारा पहुँचाए जाते हैं। दूसरी टीम को मुख्य शूटर से हथियार प्राप्त करने का काम सौंपा जाता है। फिर तीसरी टीम हथियारों को 'स्ट्रांग रूम' में पहुँचाती है।

अपराध शाखा के एक अधिकारी ने माना कि, ''यह सुनिश्चित करने के लिए कि पुलिस को घोड़ा बरामद न हो जाए, विभिन्न रिले टीमें मिलकर काम कर सकती हैं।'' कई बार, घोड़ा हत्या स्थल से कुछ ही दूरी पर स्थित पास के सार्वजनिक शौचालय में हाथ बदल लेता है।

गिन्ति (गिनती)

भोर में गिंती या गिनती के साथ जेल बैरकों के दरवाज़े खोले जाते हैं। रात के लिए मुख्य दरवाज़ा बंद करने से पहले एक बार और गिनती की जाती है।

'गोवा का टोनी'

एंथनी रोसारियो, जिसे गोवा में 'गोवा का टोनी' के नाम से जाना जाता था, रहस्यमयी जीवन जीता था। आज तक पुलिस को उसके गुप्त नेटवर्क के बारे में पता नहीं है, जिसने उसे कई बार परेशान किया था।

Machine Translated by Google

उनके कई संपर्क हैं। उनके निजी जीवन के बारे में भी बहुत कुछ ज्ञात नहीं है।

1970 के दशक की शुरुआत में जब से वह मैंगलोर के पास करकला में अपना गांव छोड़कर आया था, तब से उसके परिवार और दोस्तों को उसके अंडरवर्ल्ड ऑपरेशन के बारे में बहुत कम जानकारी थी। माना जाता था कि वह अपने दम पर काम कर रहा था, जो मुंबई के अंडरवर्ल्ड में दुर्लभ बात है।

रोसारियो 1986 में तब चर्चा में आया था जब उसने पूर्व डिप्टी म्युनिसिपल कमिश्नर जी.आर.आई.खैरनार पर गोली चलाई थी। इसके बाद कर्नाटक के कारवार जिले से विधायक वसंत असनोटिकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।

यह हत्या ड्रग तस्कर दिलीप नाइक के इशारे पर की गई थी, जिसे बाद में स्थानीय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

माना जाता है कि रोसारियो ने एक पादरी की हत्या की थी और फिरौती के लिए फैक्ट्री कर्मचारियों का अपहरण किया था। गुजरात और गोवा में हुई कुछ हत्याओं में भी उसका नाम आया था।

रोसारियो के शुरुआती रिकॉर्ड बताते हैं कि वह वर्धराजन मुदलायर उर्फ वर्धाभाई और मारे गए गैंगस्टर रूपा नेपाली से जुड़ा था। 18 अगस्त 2003 को एक मुठभेड़ में वह मारा गया।

गोदी (डॉक्स) - मुंबई के अपराध की उत्पत्ति

1970 के दशक की शुरुआत में, जब भारतीय अर्थव्यवस्था पर अभी भी लाइसेंस राज का शासन था, बॉम्बे बंदरगाह पर माल यातायात अभी-अभी शुरू हुआ था। गोदी पर कुछ हज़ार श्रमिकों के लिए पर्याप्त काम नहीं था।

हालांकि बंदरगाह के कर्मचारियों को पता नहीं था कि उन दिनों तस्करों का एक समूह सक्रिय हो गया था। जब कर्मचारी घर लौट गए और बंदरगाह खाली हो गया, तो ये छोटे-मोटे तस्कर दीवार फांदकर घुस गए और छोटे-छोटे पार्सल से शुरुआत करके छोटे-छोटे सामान लूटने लगे और धीरे-धीरे उनकी महत्वाकांक्षा बढ़ती गई। जल्द ही, वे कार्टन और बाद में पूरे कंटेनर लूटने लगे।

चूंकि आलसी बदमाशों के लिए दीवारों को फांदना थोड़ा कठिन था और वे थोड़े अपरिष्कृत भी थे, इसलिए उन्होंने एक आसान रास्ता चुना - बंदरगाह अधिकारियों, पुलिस और सीमा शुल्क को उनकी मिलीभगत के लिए भुगतान करना।

ऐसे ही एक समूह का नेतृत्व हाजी मस्तान और उसके विश्वस्त सहयोगी पॉल पैट्रिक न्यूमैन कर रहे थे, जिन्होंने बाद में अरुण गवली से हाथ मिला लिया।

Machine Translated by Google

दीवार के उस पार इन गतिविधियों के साथ, मुंबई का अंडरवर्ल्ड गोदी के इर्द-गिर्द चुपचाप पनप रहा था।

मस्तान के लोग डॉक के पास क्रिसेंट हाउस से काम करते थे। इलाके में इमारतों का समूह चोरी के सामान को संभालने के लिए एक आदर्श स्थान बन गया।

बंदरगाह के संचालन में टन भार में वृद्धि के साथ-साथ अंडरवर्ल्ड की पर्याप्त भर्ती भी हुई। छोटे-मोटे चोर और स्थानीय गुंडे जल्द ही मस्तान की टीम में शामिल हो गए, और उन्हें गोडी के 720 हेक्टेयर के क्षेत्र में लगभग खुली छूट मिल गई।

1980 के दशक की शुरुआत में बंदरगाह में टन भार बढ़कर 17,000 डेड वेट टन प्रति वर्ष से भी अधिक हो गया। इसी के साथ, चोरी की मात्रा भी बढ़ गई और ट्रकों में भरकर तस्करी का सामान कारनैक बंदर पुल के पार मुसाफिरखाना और पास के मनीष मार्केट की फलती-फूलती दुकानों तक पहुंचाया जाने लगा।

तस्करी किए गए सामान में ज़्यादातर बीयर के डिब्बे, कपड़े, टेप रिकॉर्डर, सिगरेट, परफ्यूम और ऑटोमैटिक घड़ियाँ शामिल थीं। बड़ी मात्रा में माल मुसाफिरखाना, हीरा पन्ना की कुछ दुकानों और शहर भर में कस्टम अधिसूचित कई दुकानों से आसानी से पकड़ा जा सकता था।

बंदरगाहों पर गुप्त गतिविधियों से पनप रही समानांतर अर्थव्यवस्था ने दक्षिण मुंबई के बैलाड पियर के एक समय के सुस्त व्यापारिक जिले को एक ऐसे क्षेत्र में बदल दिया जहां होटलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा था और रात्रि जीवन फल-फूल रहा था।

एक अवसर को भांपते हुए, उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत के एक पठान, करीम लाला ने भी इस खेल में अपना नाम दर्ज करा दिया। लाला शहर में अपने साथी अफ़गानों के नेटवर्क का उपयोग करके नशीले पदार्थों के डीलर के रूप में अपना भाग्य बनाने की शुरुआत कर रहा था।

जल्द ही लाला हाजीभाई के लिए एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभरे। दोनों ने कारोबार का बंटवारा कर लिया और लाला के साथ इकबाल मोहम्मद मेमन उर्फ इकबाल मिर्ची भी जुड़ गया।

उस समय नशीले पदार्थों की तस्करी में बहुत पैसा था और दाऊद इब्राहिम तथा हाजी मस्तान से जुड़े उसके बड़े भाई शब्बीर ने इसमें पैठ बनाने का प्रयास किया।
लेकिन लाला अमीरजादा और आलमजेब के समर्थन से एक मजबूत विरोधी था।
मजबूरन दाऊद को रामा नाइक और बाबू रेशिम की जोड़ी वाली 'बाइकुला कंपनी' से मदद लेनी पड़ी।

Machine Translated by Google

धारावी स्थित तमिल डॉन वरदराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई और उसके गुर्गों ने भी घाटों से होने वाले मुनाफे में हिस्सा पाने के लिए अपनी ताकत का प्रदर्शन किया।
मनोहर सुर्वे उर्फ मन्या सुर्वे, जो मुम्बई के पहले सशस्त्र डकैतों में से एक था, इस लड़ाई में शामिल होने में थोड़ा देर कर गया।

वराभाई को पता था कि वह इस धंधे में बड़े लोगों करीम लाला और हाजीभाई से होने वाले खतरे को नहीं संभाल सकता, इसलिए उसने अपने इलाकों की रक्षा करने और लाला और हाजीभाई जैसे प्रतिद्वंद्वियों से खतरों को बेअसर करने के लिए तिलक नगर के राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की मदद ली। समद खान के आने से पठान गिरोह मजबूत हुआ, जबकि रेशिम को गोदी का नेता बनाया गया।

1980 के दशक के मध्य तक तस्करों को सेवरी-वडाला, वर्ली, माहिम और विक्रोली जैसे दलदली इलाकों में सुरक्षित लैंडिंग स्थल मिल गए। कुछ प्रतिबंधित सामान छोटी नावों पर लादकर वर्सोवा, गोराई और यहां तक कि रत्नागिरी जैसे दूरदराज के घाटों तक तस्करी कर ले जाया जाता था।

कुछ तस्करों ने तो अपने वाहनों में छेद बनाकर और स्थानीय गिरोहों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए काम पर रखकर, चालाकीपूर्ण तरीके भी विकसित कर लिए थे। छोटा राजन और अमर नाइक जैसे बाद के लोगों ने 80 के दशक में इस धंधे में अपनी हिस्सेदारी के लिए संघर्ष किया। लेकिन धीरे-धीरे यह गतिविधि गोदी से हटती चली गई।

पुलिस के साथ मुठभेड़ में कई लोग मारे गए। अंडरवर्ल्ड को अभी भी घाटों से अपना हिस्सा मिल रहा था।

गोल्डन गैंग

'गोल्डन गैंग' - जिसके सभी सदस्य सोने के गहने पहनते थे - का नेतृत्व 1966-1990 के बीच चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बाबिया ने किया था। वे वलगी-पालगी गैंग या डायमंड गैंग के कट्टर प्रतिद्वंद्वी थे।

यह गिरोह दादर, प्रभादेवी, गिरगांव और लालबाग (मुंबई का पूर्व मिल क्षेत्र जिसे गिरगांव के नाम से भी जाना जाता था) के आसपास के जुआ अड्डों से पैसा कमाता था।

Machine Translated by Google

बाब्या की कुछ अवैध सट्टेबाजी के अड्डों में हिस्सेदारी थी और 1970 के दशक के अंत में उसकी आय लगभग 25 लाख रुपये प्रति माह होने का अनुमान था - जो उस समय अप्रत्याशित राशि थी।

यह गिरोह लोअर परेल स्थित सन मिल परिसर से काम करता था। मिल मालिकों ने औद्योगिक विवादों को निपटाने और मज़दूर संघों पर नियोक्ताओं की शर्तें मानने के लिए दबाव बनाने के लिए उन्हें काम पर रखा था।

अच्छा आदमी

अंडरवर्ल्ड की भाषा में गुडमैन को मुखबिर कहा जाता है। यह अन्य सहयोगियों के लिए चेतावनी है कि वे किसी ऐसे व्यक्ति के सामने खुलकर बात न करें, जिसके बारे में उन्हें संदेह है कि वह पुलिस का मुखबिर है। अंडरवर्ल्ड की भाषा में जीरो का मतलब मुखबिर भी होता है। जब कोई गैंगस्टर किसी की तारीफ 'गुडमैन' कहकर करता है तो वह अपने अंगूठे को तर्जनी से छूता है ताकि वह जीरो जैसा लगे। यह 'चुप रहने' की स्पष्ट चेतावनी है।

गुड (समलैंगिक)

अंडरवर्ल्ड के सदस्यों के बीच समलैंगिकता बहुत आम है। इस व्यवहार का पता जेल में बिताए गए उनके समय से लगाया जा सकता है।

कैदियों को अजीबोगरीब स्थितियों में सोना पड़ता है, जिससे वे यौन संबंधों के लिए अतिसंवेदनशील हो जाते हैं। कई लोग जेल से रिहा होने पर भोजन और नौकरी के आश्वासन जैसी छोटी-मोटी सुख-सुविधाओं के बदले वरिष्ठों या गिरोह के नेताओं के झांसे में आ जाते हैं।

गुफरान फ़ारूकी

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार गुफरान फारूकी ने अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तान की आईएसआई के इशारे पर भारत में 20 करोड़ रुपये के नकली नोट चलाए।

दुबई में ही उसकी मुलाकात दाऊद इब्राहिम के खास आफताब बटकी उर्फ सुल्तान से हुई थी।

Machine Translated by Google

पुलिस सूत्रों के अनुसार, बटकी दुबई में स्थित एक सहयोगी है। बटकी आईएसआई की मिलीभगत से चल रहे नकली नोटों के धंधे में मुख्य खिलाड़ियों में से एक है।

गुप्ति

गैंगस्टर सुहास भटकर उर्फ पोट्या दादर में एक शादी में शामिल होने गया था, तभी नशे में धुत एक युवक ने दावा किया कि वह इलाके का 'भाई' है । पोट्या के साथी इस शख्स को सबक सिखाने से खुद को बड़ी मुश्किल से रोक पाए।

हालांकि, मामला तब चरम पर पहुंच गया जब वह व्यक्ति गैंगस्टर के पास गया और उससे पूछा कि क्या उसने पोट्या को देखा है। जवाब नकारात्मक था।

पोट्या ने तेजी से अपनी गुप्ती निकाली और उसकी जांघ पर वार कर दिया। "मैं पोट्या हूं," वह फुसफुसाया और फिर वहां से गायब हो गया।

पोट्या को मुंबई के पश्चिमी उपनगरों में आतंक फैलाने के लिए गुप्ती (सीधी तलवार) चलाने में माहिर माना जाता था ।

शिवाजी पार्क स्थित शारदा आश्रम स्कूल, जहां क्रिकेटर सचिन तेलदुलकर ने पढ़ाई की थी, के छात्र रहे पोट्या ने अपना अधिकांश समय प्रभादेवी स्थित कीर्ति कॉलेज के पास बिताया, जो यादव पाटिल वाडी में उनके घर से थोड़ी दूरी पर था।

पोट्या के अपराध की शुरुआत का श्रेय स्थानीय गुंडे जॉन मेंडोंका को जाता है। इलाके में तैनात सहायक पुलिस निरीक्षक राजेंद्र चव्हाण ने बताया कि साईबा तालेकर, नितिन पुसलकर और उदय तोडानकर उसके कुछ समकालीन थे।

पोट्या और उसके आदमी ज़्यादातर मटका अड्डों को लूटते थे। 1980 के दशक की शुरुआत में सामाजिक क्लबों और अवैध शराब के अड्डों से मिलने वाली सुरक्षा राशि आय का दूसरा स्रोत थी।

कुछ ही समय पहले पोट्या ने दादर और प्रभादेवी इलाकों में व्यापारियों से हफ्ता बांटने को लेकर मान्या सुर्वे के साथ हाथापाई की थी। खूंखार गैंगस्टर ने जल्द ही अपना ठिकाना विले पार्ले के पास खोतवाड़ी में बना लिया और फिर सब इंस्पेक्टर ई अमोलिक के हाथों मुठभेड़ में मारा गया।

Machine Translated by Google

गेस्टहाउस (कुछ के लिए; कई के लिए जेल)

मुंबई की आर्थर रोड जेल को छोटा राजन गिरोह के सदस्यों के बीच 'गेस्ट हाउस' के नाम से जाना जाता है। जेल में कई प्रभावशाली कैदी आलीशान जिंदगी जीते हैं।

यह कोई असामान्य बात नहीं है कि सुरक्षा गार्ड किसी कैदी को मोबाइल फोन की तस्करी करते हुए पकड़े जाते हैं। सेलफोन की तस्करी 10,000 रुपये से अधिक की कीमत पर की जाती है।

कई बार गैंगस्टरों के पास दो फोन होते हैं जिनमें दर्जनों सिम कार्ड होते हैं; एक गर्लफ्रेंड और परिवार के लिए, तथा दूसरा अपने साथियों से बात करने के लिए।

Machine Translated by Google

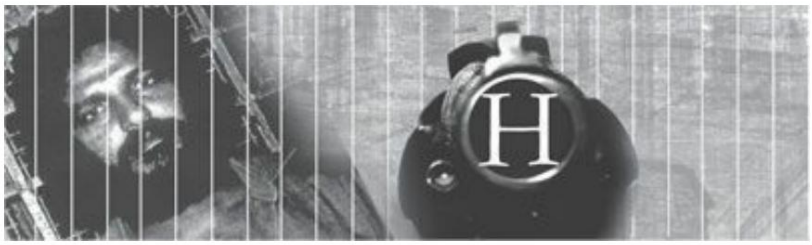

हाथ (बांह)

'एक हाथ' का मतलब है 1,000 रुपए। इस शब्द का इस्तेमाल उन लोगों को गुमराह करने के लिए किया जाता है जो गिरोह से जुड़े नहीं होते और उनकी भाषा नहीं समझते।

हाथ पे आ जा (मुझे मेरे मोबाइल फोन पर कॉल करें)

अगर किसी गैंगस्टर को संदेह होता है कि उसका लैंडलाइन फोन टैप किया जा रहा है, तो वह अपने साथी से कहता है कि वह उसके मोबाइल फोन या किसी दूसरे नंबर पर कॉल करे। यह चेतावनी भी होती है कि उसी नंबर पर दोबारा कॉल न करें।

हड्डी

हड्डी या हड्डी एक शब्द है जो दुबले-पतले बदमाशों के नाम के साथ जुड़ जाता है।
सलीम हद्दी और पॉलोस हद्दी इसके उदाहरण हैं।

हरीश जतन

छोटा राजन ने एक बार हरीश जतन को भायंदर में अपने प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा शकील के ठिकाने पर धावा बोलने के लिए नियुक्त किया था। जतन और उसके आदमी पुलिस अधिकारियों की पोशाक में उसके ठिकाने पर घुस गए। वह कानून का अच्छा जानकार था और जेल में रहने के दौरान अक्सर साथी कैदियों को सलाह देता था।

Machine Translated by Google

हवाला (समानांतर धन प्रेषण)

हिंदी में हवाला का मतलब होता है सौंपना। यह सीमा पार पैसे ट्रांसफर करने का एक अवैध और अनौपचारिक तरीका है। यह दुनिया में कहीं भी कुछ ही घंटों में बिना किसी लेन-देन के रिकॉर्ड के पैसे ट्रांसफर करता है। इसकी शुरुआत दुबई में भारतीय कामगारों के लिए एक पसंदीदा चैनल के रूप में हुई थी और बाद में दाऊद इब्राहिम और दूसरे गैंगस्टर्स ने देश से पैसे ट्रांसफर करने और वापस लाने के लिए इसका इस्तेमाल किया।

खास तौर पर, दुनिया भर में बड़े ड्रग सौदों से मिलने वाला पैसा। इसकी सफलता का श्रेय तेज़, सस्ती और भरोसेमंद सेवा को जाता है।

कम प्रीमियम पर एक अमेरिकी डॉलर खरीदना और विदेश में किसी जरूरतमंद व्यक्ति को बहुत अधिक कीमत पर बेचना ऑपरेटरों के लिए लाभ लाता है।

मुंबई में अपराध शाखा के सूत्रों के अनुसार, दुबई के कुछ बड़े ऑपरेटरों की पहचान सौकर मोहिदीन, अब्दुल्ला उर्फ कासरगोड, शमशीद्दीन के रूप में हुई है।

सिर पर गोली मारना

हामिद-माजिद भाई के साथ समद खान का युद्ध तब खतरनाक स्तर पर पहुंच गया जब उसने माजिद की हत्या के लिए अपने पूर्व कर्मचारी मुन्ना ठाकुर को नियुक्त किया।

माजिद की डोंगरी में नवरोजी लेन नंबर 1 स्थित बुच्चुवाला बिल्डिंग के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई।

हामिद ने अग्रीपाड़ा के पास सांकली स्ट्रीट पर समद के दोस्त सोहेल पर हमला किया। यह हमला उसने अपने छोटे भाई माजिद की मौत का बदला लेने के लिए किया था।

हामिद खुद भी तब हैरान रह गया जब उसके पीछे से दाउद शमशेर और मुन्ना ठाकुर ने उसे चौंका दिया। 'हेड शॉट' उसके सिर में लगी और माथे से फट गई।

दोनों ने हामिद के शरीर पर करीब से 11 और गोलियां चलाईं। वह फन-एन-फूड बार में था और उसने प्रवेश द्वार की ओर मुंह न करके गलती की।

हामिद की हत्या के बाद दाऊद शमशेर को खुली छूट मिल गई। उसने कई तरह के कारोबार शुरू कर दिए।

Machine Translated by Google

वह 'पाउडर' या ड्रग्स का कारोबार करता था और डोंगरी के पाला गुल्ली स्थित अपने स्ट्रांग रूम से इसे संचालित करता था।

हेमंत पुजारी

हेमंत पुजारी छोटा राजन गिरोह का पूर्व सदस्य है और मुंबई के अंडरवर्ल्ड में अपने लिए जगह बनाने के लिए संघर्ष कर रहे कुछ गैंगस्टरों में से एक है। खार (पूर्व) के जवाहर नगर का निवासी पुजारी ने पहली बार 1980 के दशक के मध्य में कालिया एंथनी के लिए काम करना शुरू किया। कई छोटे-मोटे अपराधों के बाद वह एंथनी जोआचिम उर्फ अडू की हत्या में शामिल था। जेल में रहने के दौरान वह ओपी सिंह के संपर्क में आया जिसने उसे छोटा राजन गिरोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इसके तुरंत बाद कई हत्याएं हुईं, जिनमें बांद्रा पश्चिम में एमके बिल्डर्स के एम खान की हत्या भी शामिल थी। छोटा राजन से अलग होने से पहले पुजारी ने कुंदन सिंह रावत और एजाज लकड़वाला के साथ मिलकर एक घातक गठबंधन बनाया था। पुजारी ने खार के एक बार में एक छोटे-मोटे वेटर के रूप में शुरुआत की और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसके कुछ समर्थक होटल व्यवसायी हैं।

खुफिया रिपोर्टों से पता चला है कि वह छोटा शकील से हाथ मिला चुका है। उसका नाम आधा दर्जन से ज़्यादा हत्याओं में है।

घरेलू मैदान

गैंगस्टर अमर नाइक 'बाइकुला कंपनी' की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर तब आया जब उसने कल्याण स्टेशन पर अरुण गवली की मुख्य शूटर तान्या कोली की गोली मारकर हत्या कर दी। कोली को अमरावती जेल ले जाया जा रहा था।

चूंकि अमर गवली और उसके आदमियों के लिए बहुत मायावी साबित हो रहा था, इसलिए प्रतिद्वंद्वी बायकुला कंपनी ने उसके छोटे भाई अश्विन को निशाना बनाने का फैसला किया। अश्विन पर आतंकवादी और विध्वंसकारी गतिविधियाँ (रोकथाम) अधिनियम, 1987 के तहत मुकदमा चल रहा था।

उन पर निशाना साधने के लिए 'होम ग्राउंड' या 'बांग्लादेश' से बेहतर कोई जगह नहीं थी।
अदालत कक्ष.

गवली के दूसरे नंबर के कमांडर सदा पावले उर्फ मामा को अश्विन को खत्म करने का काम सौंपा गया। बदले में उसने रवींद्र सावंत को प्रशिक्षित किया और उसे कीमती लक्ष्य हासिल करने के लिए भेजा।

Machine Translated by Google

18 अप्रैल 1994 को सावंत ने वकील बनकर सेशन कोर्ट में प्रवेश किया। मुख्य शूटर की सहायता के लिए नागेश मोहिते को काम पर रखा गया था।

सावंत की ट्रेनिंग रंग लाई। उसने अश्विन और उसके पुलिस एस्कॉर्ट्स को बिना बताए ही पकड़ लिया और नजदीक से उसकी खोपड़ी में गोली मार दी।

हालाँकि, अश्विन इस हमले में बच गए, लेकिन इससे वे जीवन भर के लिए विकलांग हो गए।

यह कोई एकाध मामला नहीं है, अंडरवर्ल्ड गिरोह दशकों से अपने प्रतिद्वंद्वियों को आश्चर्यचकित करने के लिए अदालत परिसर या 'घरेलू मैदान' का उपयोग करते रहे हैं।

हयाला घ्याचा (हमें उसे अवश्य प्राप्त करना चाहिए)

यह 15 जून 1970 का दिन था। सायन की एक पहाड़ी के ऊपर, एक प्राचीन मराठा चौकी के खंडहरों के बीच किशोरों का एक समूह गुप्त रूप से मिला।

कार्य विधान सभा सदस्य (एमएलए) कृष्णा देसाई को समाप्त करना था। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के इस कार्यकर्ता की मध्य मुंबई के लालबाग और परेल के मराठी भाषी क्षेत्रों में बहुत ताकत थी।

किशोर इतने भोले थे कि उन्हें समझ में नहीं आया कि देसाई की हत्या की सुपारी किसने ली है और उन्हें हत्या के पीछे के मकसद के बारे में जरा भी जानकारी नहीं थी। हमलावरों में से एक विश्वनाथ कटाडे ने बताया कि वे 'मराठी मानुष' के अधिकारों के लिए लड़ने के लिए एक पार्टी बनाने के विचार से बहुत उत्साहित थे।

कटाडे, जिन्हें बाद में राजनीतिक और अंडरवर्ल्ड हलकों में 'बुवा' के नाम से जाना जाने लगा, याद करते हैं, "वह बारिश का दिन था। मैं समूह के अन्य सदस्यों की तरह मुश्किल से 17 साल का था।" सायन किले में एक संक्षिप्त बैठक के बाद समूह बिखर गया।

उनके दुबले शरीर से उनके भयावह इरादे जाहिर हो रहे थे।

एक घंटे बाद वे लालबाग पहुँच चुके थे। अंधेरा हो चुका था और समूह ने देसाई की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। उनके पास कोई अंगरक्षक नहीं था।

देसाई एक भीड़ भरे व्यायामशाला में लगभग 70 सदस्यों को प्रशिक्षण देने में व्यस्त थे।

Machine Translated by Google

कटाडे याद करते हैं कि वह खुद भी कसरत करते थे और अपनी उम्र के हिसाब से काफी खतरनाक दिखते थे।

अचानक, जिमनाज़ियम की लाइटें बंद हो गईं। वहाँ अफरा-तफरी मच गई।

हत्यारे अंधेरे की आड़ में जिम में घुस गए और देसाई पर हमला करने की फिराक में थे। कटाडे याद करते हैं, "उनके भारी भरकम शरीर के कारण लक्ष्य को पहचानना मुश्किल नहीं था।"

समूह ने चाकू से हमला कर दिया। चाकूओं ने पीड़ित के पेट को फाड़ दिया और उसकी छाती में कई घाव कर दिए।

देसाई लड़खड़ाने लगे। उन्होंने अपने बड़े हाथों से अपने घावों को ढक लिया और खून को बाहर निकलने से रोकने की कोशिश की।

कुछ ही मिनटों बाद देसाई ढह गए और उनके साथ ही लालबाग में कम्युनिस्टों का गढ़ भी ढह गया।

उस रात देसाई ही एकमात्र लक्ष्य नहीं थे। बाद में समूह फिर से इकट्ठा हुआ और सेवरी में एक अन्य कम्युनिस्ट पर हमला किया।

मामले की जांच कर रहे क्राइम ब्रांच के अधिकारियों को एक हत्यारे चंदू मास्टर का पता चला। बाद में बाकी सभी की पहचान कर ली गई।

कटाडे शिवसेना के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने जेलर मंजर अमानी पर भी हमला किया, जब अमानी ने उनसे पूछा कि क्या शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे उन्हें सख्त होना सिखा रहे हैं। कटाडे ने अमानी पर हमला करने के बाद उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, "बालासाहेब बोलो (उन्हें बालासाहेब कहकर संबोधित करो)।''

शिवसेना के उम्मीदवार वामनराव महादिक जल्द ही परेल और लालबाग की मिल बेल्ट से राज्य विधानसभा के लिए चुने गए। उनकी पार्टी ने हजारों की संख्या में युवाओं को आकर्षित किया।

Machine Translated by Google

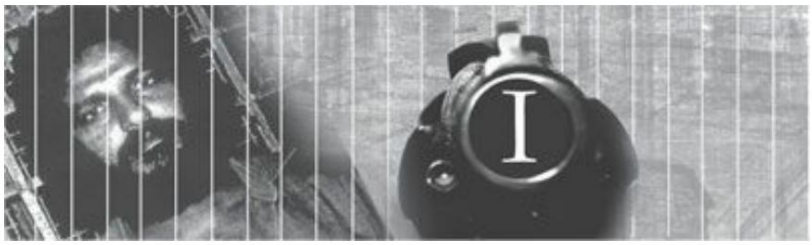

भारतीय बल्ला

दाऊद इब्राहिम के लोग इंडियन बैट का मतलब देसी रिवॉल्वर समझते हैं। इसलिए जब कोई लेफ्टिनेंट कहता है कि ' इंडियन बैट भेज रहा हूं' तो इसका मतलब होता है एक प्रशिक्षु हत्यारे के लिए सस्ता हथियार।

इकबाल नातिक़

इकबाल नातिक की हत्या, जिसके कारण दाऊद इब्राहिम और अमीरजादा और आलमजेब के नेतृत्व वाले पठान गिरोह के बीच दरार पैदा हो गई, ने दक्षिण मुंबई में गैंगवार की शुरुआत कर दी।

पत्रकार के तौर पर काम करने वाले नातिक ने दक्षिण मुंबई में तेल माफिया का भंडाफोड़ किया था। दाऊद और उसके साथी अपने मारे गए दोस्त के पक्ष में खड़े हुए। इससे दोनों समूहों के बीच दरार पैदा हो गई।

छोटी-मोटी झड़पें जल्द ही दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में बदल गईं। इसके बाद दोनों गिरोहों के बीच बड़े पैमाने पर हत्याएं हुईं।

आइटम (सेक्सी युवती)

22 वर्षीय मीनाक्षी शर्मा भोपाल से मुंबई सिर्फ़ एक सपना लेकर आई थी - बॉलीवुड में प्रवेश करना। वहां असफल होने पर अंडरवर्ल्ड ने उसे अपने पास बुलाया और उसे अपनी खूबसूरती का फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया। शर्मा एक ऐसे शहर से ताल्लुक रखती हैं जहाँ से वह एक बार फिर बॉलीवुड में कदम रखने जा रही हैं।

Machine Translated by Google

उनका परिवार एक संपन्न परिवार था और उनके पिता भोपाल में सरकारी अधिकारी थे।

पुलिस को पूछताछ के दौरान पता चला कि वह न केवल पढ़ाई में अच्छी थी, बल्कि कॉलेज के दिनों में खेलकूद और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भी अव्वल रहती थी।

शर्मा पहली बार 1995 में बबलू श्रीवास्तव के संपर्क में आईं। उनसे मिलने के दो साल के भीतर ही वह उनकी प्रिय बन गईं और उनके कार्यों की देखरेख करने लगीं।

बबलू के गुर्गों विक्रम वाही और संजय खन्ना के साथ उसके जुड़ाव ने उसे क्रूर छल और कौशल विकसित करने में मदद की, जो आज भी कुछ सबसे खूंखार अपराधियों को शर्मिंदा करने में सक्षम है।

शर्मा का कार्यक्षेत्र विस्तृत हो गया और वह दुबई और सिंगापुर की लगातार यात्राएं करने लगीं।

ऐसी ही एक यात्रा के दौरान मीनाक्षी की मुलाकात इरफान गोगा से हुई जो गामा पहलवान का करीबी साथी है। मुंबई पुलिस को भी जबरन वसूली के एक मामले में उसकी तलाश है।

Machine Translated by Google

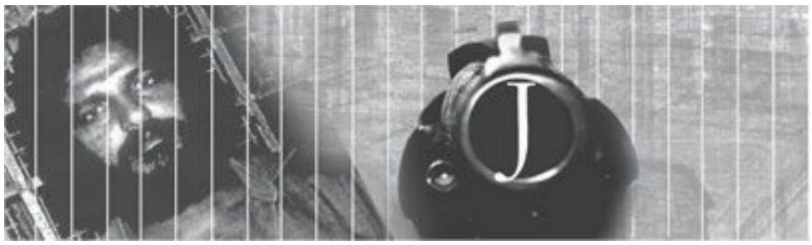

जय हिन्द

जय हिंद शब्द का प्रयोग आमतौर पर छोटा राजन गिरोह के बदमाशों के बीच एक दूसरे से मिलते समय किया जाता है।

29 अप्रैल 2001 छोटा राजन के शूटर मोहम्मद शफी मुल्ला उर्फ बाबा की जिंदगी का आखिरी दिन था। भांडुप में एक सुनसान रात में पुलिस की गोलियों की बौछार के बीच गैंगस्टर ने 'जय हिंद' कहा।

मुल्ला को छोटा राजन ने पाकिस्तान में अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम तक पहुंचने के लिए नियुक्त किया था। यह एक गुप्त मिशन था, लेकिन प्रतिद्वंद्वी को साजिश की भनक लग गई।

मजबूत कद और लंबी दाढ़ी वाले मुल्ला ने पाकिस्तानी वीज़ा हासिल कर लिया था और अगले दिन दुबई के रास्ते सीमा पार जाने की योजना बना रहा था। लेकिन मिशन रद्द कर दिया गया।

मुल्ला मुंबई और ठाणे जिले में छह हत्याओं के सिलसिले में वांछित था।

बाबा के अंतिम संस्कार में बहुत कम लोग शामिल हुए। भव्य समारोह के लिए पर्याप्त धन नहीं था - जो कि मुंबई के अंडरवर्ल्ड में आम बात है।

सीनियर मुल्ला के छोटे भाई कासिम अमीन मुल्ला उर्फ मुन्ना ने अपने भाई का अनुसरण करते हुए अंडरवर्ल्ड में कदम रखा। किकबॉक्सिंग के प्रति दोनों भाइयों के जुनून ने उन्हें उनके पैतृक गांव उरण में काफी मशहूर बना दिया। जल्द ही इस जुनून ने उन्हें मुंबई के अंडरवर्ल्ड में पेशा बना दिया।

Machine Translated by Google

बाबा की मौत ने मुन्ना को गैंगस्टर की ज़िंदगी की सच्चाई से रूबरू कराया। 2001 में जेल से रिहा होने के बाद उसने कंपनी छोड़ दी।

जेजे शूटआउट

12 सितंबर 1992 को दाऊद इब्राहिम के सहयोगी सुभाष सिंह ठाकुर और सुनील सावंत ने एके 47 और उजी असॉल्ट राइफलों से लैस होकर जेजे अस्पताल, बायकुला के कैदियों के वार्ड नंबर 18 में गोलीबारी शुरू कर दी। दोनों ने दस मिनट में 38 गोलियां चलाईं।

इस हमले में कांस्टेबल कृष्ण ठाकुर घायल हो गए और अरुण गवली के करीबी सहयोगी शैलेश हल्दाणकर की मौत हो गई। उनके सहयोगी बिपिन शेरे गंभीर रूप से घायल हो गए। हेड कांस्टेबल चिंतामन जसवर (बैज नंबर 18005) और कमलसिंह बनवत (बैज नंबर 22709) भी गोलीबारी में मारे गए।

गोलीबारी में पुलिस उपनिरीक्षक विजय नागरे, स्टाफ नर्स चंद्रकला विन्द्रे घायल हो गए।

झाड़ू

झाड़ू एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर AK 47, AK 56 सीरीज जैसी असॉल्ट राइफलों के लिए किया जाता है। कलाश्निकोव की तेज़ फायरिंग क्षमताओं ने इस उपनाम को जन्म दिया। आप इसे 180 डिग्री घुमाकर भी फायरिंग जारी रख सकते हैं।

पुलिस के अनुसार आतंकवाद निरोधक दस्ते ने 11 नवंबर 1991 को अंधेरी के लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में स्वाति बिल्डिंग की ओर जाने वाली मुख्य सड़क की घेराबंदी की थी। उनके मुख्य लक्ष्य गैंगस्टर माया डोलास और उसके प्रमुख सहयोगी दिलीप भुवा थे।

डोलास और उसके साथियों को इस बात की जानकारी नहीं थी कि करीब 200 हथियारबंद पुलिसकर्मी इलाके में घुस आए हैं और तलाशी अभियान चला रहे हैं। दोपहर करीब 2 बजे गोलियों की आवाजें गूंजने लगीं।

जब दस्ते ने इमारत में प्रवेश करने का प्रयास किया तो पहली बार गोलियां चलीं।
डोलस ने अपनी .45 मैग्नम रिवॉल्वर से गोली चलाई थी और गोली सब-इंस्पेक्टर घरात के कंधे में जा लगी थी। कवि भाग्यशाली था कि वह बच गया क्योंकि उसे गोली लगी थी।

Machine Translated by Google

बुलेटप्रूफ जैकेट।

कवि पर गोलियों की बौछार के तुरंत बाद स्वचालित हथियारों से गोलीबारी की गई। सब-इंस्पेक्टर किरण सोनाने ने बताया कि भुवा अपनी झाड़ू या एके 47 लेकर सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहा था।

इसके तुरंत बाद डोलास की रिवाल्वर से गोलियों की एक और बौछार हुई।
बदमाशों और पुलिस ने अपने स्वचालित हथियारों का प्रयोग किया, जिससे गोलीबारी में सात लोग मारे गए।

जॉन पॉलोस (हैडी/बोन)

पॉलोस ने अपना आपराधिक जीवन 1995 के आसपास साकी नाका की पिछली गलियों में एक छोटे चोर के रूप में शुरू किया था। वह जल्द ही मुंबई के अंडरवर्ल्ड में निशानेबाज बन गया।

वह उल्हासनगर के पार्षद गोपाल राजवानी की हत्या के प्रमुख शूटरों में से एक था, जिनकी 1998 में एक स्थानीय अदालत के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। फारुक लाडी और अशरफ पटेल उसके कुछ अन्य लक्ष्य हैं।

पॉलोस उर्फ हड्डी उर्फ अन्ना को लेफ्टिनेंट डीके राव ने छोटा राजन गिरोह में शामिल किया था, जब 1996 में साकी नाका में डकैती के सिलसिले में उसे गिरफ्तार किया गया था। बालू डोकरे ने उसे हथियार मुहैया कराए और वह शूटर के रूप में काम करने लगा।

दुबले-पतले पॉलोस ने गैंगलैंड की सीढ़ी पर चढ़कर अपनी हिम्मत और डोकरे के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों की बदौलत बाजी मारी। डोकरे की अनुपस्थिति में पॉलोस को आर्थर रोड जेल का 'हैंडलर' भी बनाया गया था। उस पर जेलर ए.

अवताडे द्वारा 2003 में स्थापित किया गया था।

अगले साल पॉलोस छोटा राजन गिरोह से अलग हो गया और उसने लुटेरों का अपना गिरोह बना लिया। 2004 में एक मुठभेड़ में वह मारा गया।

जुक्कर (नरेश अवतु)

नरेश अवतु उर्फ जुक्कर छोटा राजन का भरोसेमंद साथी था।

Machine Translated by Google

मुठभेड़ में हुई मौत के कारण दाऊद इब्राहिम का साम्राज्य बिखर गया। इसके परिणामस्वरूप अंडरवर्ल्ड में गैंगवार हत्याओं का सिलसिला भी शुरू हो गया।

1 फरवरी, 1991. भूतपूर्व पुलिस अधिकारी दशरथ अवध को सूचना मिली कि अवतु भांडुप आने वाला है। बाद में, अवतु को भांडुप पुलिस स्टेशन से थोड़ी दूर पर मुठभेड़ में मार गिराया गया।

अवतु ने अपने बड़े भाई अमर, दिवाकर चूरी और संजय रुग्गड़ के साथ मिलकर राजन का कोर ग्रुप बनाया।

यह ज्ञात था कि जिस क्षेत्र में अवतु की हत्या हुई थी, वह शिव सेना पार्षद खिम बहादुर थापा के नियंत्रण में था।

राजन, जो उस समय दाऊद का दूसरा सबसे बड़ा अफ़सर था, को बताया गया कि थापा ने पुलिस को अवतु के ठिकाने के बारे में जानकारी दी थी। उसने अवतु की मौत का बदला लेने की कसम खाई।

शीघ्र ही, राजन ने अवधूत बोंडे और विलास माने के साथ गठबंधन कर लिया - ये स्थानीय गुंडे थे, जिनकी थापा से दुश्मनी थी।

थापा की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही थी। राजन के साथियों ने उसे भांडुप में मंगतराम पेट्रोल पंप के पास घेर लिया और उसकी हत्या कर दी।

Machine Translated by Google

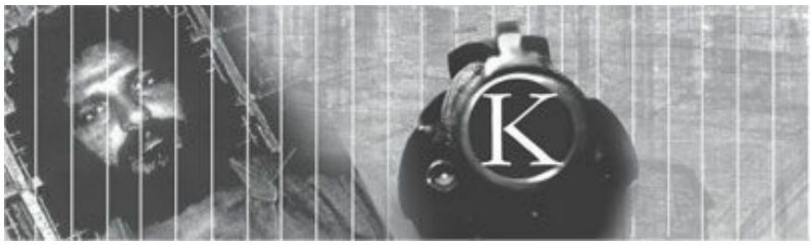

कान (जेल के भीतर मुद्रा)

'एक कान का सौ रुपया, आधे कान का पचास रुपया'।

जेल में एक कान का मतलब 100 रुपये और आधा कान का मतलब 50 रुपये होता है। पांच कान का मतलब 500 रुपये होता है। इन शब्दों का इस्तेमाल आम तौर पर तब किया जाता है जब किसी नए विचाराधीन कैदी को जेल में लाया जाता है।

काला कोट

काला कोट का मतलब अंडरवर्ल्ड की भाषा में वकील होता है। यह शब्द उस काले कोट से लिया गया है जिसे वकील कोर्ट में बहस करते समय पहनते हैं।

काली (काला)

अंडरवर्ल्ड में हशीश या चरस का दूसरा नाम 'काली' है । मुंबई की सड़कों पर कश्मीरी काली की कीमत करीब 40,000 रुपये है।

कालिया एंथोनी

कालिया एंथनी, जिसका असली नाम एंथनी वीरास्वामी जॉन था, खार का एक गैंगस्टर था।
बाद में उन्होंने दक्षिण मुंबई में प्रतिद्वंद्वी पठान गुट से हाथ मिला लिया।

Machine Translated by Google

कालिया नाम इसलिए पड़ा क्योंकि वह बॉलीवुड की ब्लॉकबस्टर और अमिताभ बच्चन की फिल्म 'कालिया' के रिलीज होने के दिन जेल से भाग गया था। उसने एक छोटे-मोटे चोर के रूप में शुरुआत की और उसे सुभाष सिंह ठाकुर, बाबा गेब्रियल और बच्ची पांडे जैसे काबिल साथियों का साथ मिला।

एंथनी की 24 मई 1986 को दिनदहाड़े एक अदालत के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी।
अंडरवर्ल्ड को अब भी संदेह है कि यह हत्या दाऊद का हाथ थी।

कलाकार (अभिनेता)

कलाकार मुंबई के अंडरवर्ल्ड में शूटर भी है। गैंगस्टर छोटा राजन के मुख्य हत्यारे कमलेश साटम तक कानून के पहुंचने से पहले, इलाके में किसी को भी यह संदेह नहीं था कि यह विनम्र युवक मुंबई के अंडरवर्ल्ड के सबसे खूंखार कॉन्ट्रैक्ट किलर में से एक हो सकता है।

साटम की कार्यप्रणाली देश के सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखकों की कल्पना को भी चुनौती दे सकती थी। वास्तव में, उसके परिवार के सदस्यों को भी नहीं पता था कि कमलेश एक गिरोह से जुड़ा हुआ था। स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी में भी वह धाराप्रवाह था, इसलिए वह आसानी से एक मेडिकल प्रतिनिधि के रूप में फिट हो सकता था। लेकिन जब उसने बंदूक का इस्तेमाल किया तो उसका एक अलग व्यक्तित्व सामने आया।

साटम और एक अन्य व्यक्ति, यूनुस बुटला, 2000 के अंत में पनवेल के निकट चेंबूर स्थित होटल व्यवसायी विनोद शेट्टी और तीन अन्य की हत्या के मुख्य शूटर थे।

पुलिस सूत्रों ने बताया कि हत्या के बाद वह बिल्कुल सामान्य व्यवहार करता था।
इसके अलावा, वह कभी भी अनावश्यक रूप से बाहुबल का इस्तेमाल नहीं करता था, न ही वह कभी अपने संपर्कों का बखान करता था। कभी-कभी तो वह लक्ष्य से बात भी करता था।

हालांकि साटम ने 2000 में ज़्यादातर हत्याएं की थीं, लेकिन अंडरवर्ल्ड ने इसके लिए बड़े शूटरों को दोषी ठहराया। यह असली हत्यारे की पहचान छिपाने और पुलिस को गुमराह करने की एक चाल थी।

किसी को उस पर शक नहीं हुआ क्योंकि वह शिक्षित था और एक सम्मानित परिवार से था। उसकी बहन एक डॉक्टर थी।

Machine Translated by Google

1990 के आसपास, जब साटम जोगेश्वरी के इस्माइल यूसुफ़ कॉलेज में अपनी गर्लफ्रेंड से अलग हुआ, तो उसने कॉलेज के एक दबंग छात्र ओवेन डिसूज़ा से झगड़ा किया। साटम को जल्द ही अश्विन नाइक गिरोह के सदस्य सुहास नाइक से सुरक्षा लेनी पड़ी।

इस तगड़े युवक का नाम कुछ मारपीट के मामलों में आया और वह जेल भी गया। इन्हीं मामलों के दौरान साटम की मुलाकात छोटा राजन के भरोसेमंद लेफ्टिनेंट डीके राव से हुई, जिसने इस युवक में संभावनाएं देखीं। उसे यूनुस बटला में एक भरोसेमंद साथी मिला और बाद में उसने राजन के सहयोगी बालू डोकरे से हाथ मिला लिया।

साटम और बुटला को 9 जुलाई 2001 को पुलिस अधिकारी अविनाश सावंत और भूषण बेलनेकर ने मुठभेड़ में मार गिराया था।

कालिया को निकालो (अब्दुल कुंजू को हटाओ)

सांवले रंग का अब्दुल कुंजू उर्फ कालिया, राजन नायर उर्फ बड़ा राजन के तिलक नगर गिरोह का प्रमुख सदस्य था। राजन जेल में था और उसने दाऊद इब्राहिम से एक लाख रुपए मांगे थे। दाऊद ने राजन को अमीरजादा की हत्या की सुपारी दी थी और उसके लिए पैसे देना अनिवार्य था। राजन की जेल में लंबी हिरासत के दौरान आवश्यक कानूनी सहायता के लिए भी उसे भुगतान करना था। राजन नायर गिरोह के पूर्व सहयोगी नंदू राजुलकर ने याद करते हुए कहा, "जब राजन के गुर्गे पैसे के लिए दाऊद के पास पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि उसने अब्दुल कुंजू को पहले ही पैसे दे दिए हैं और अब वह आगे भुगतान नहीं करेगा।"

कुंजू ने आर्थर रोड जेल में एक मुलाकात के दौरान राजन से मुलाकात की, लेकिन गिरोह को रकम लौटाने से इनकार कर दिया। कुंजू ने दावा किया कि उसने पैसे का इस्तेमाल किया है और तर्क दिया कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

बाद में क्रोधित राजन ने गिरोह के अन्य सदस्यों से कहा, "कालिया को निकालो।"

लंबे, काले और भारी भरकम कुंजू को चॉपर के कुशल इस्तेमाल के लिए जाना जाता था, जिसे 1970 के दशक में जानलेवा माना जाता था। एक ही दिन में तीन हत्याओं में नाम आने के बाद वह चेंबूर की शेल कॉलोनी में आतंक का अड्डा बन गया था।

Machine Translated by Google

कुंजू ने न केवल एक लाख रुपए लौटाने से इनकार कर दिया, बल्कि राजन की हत्या की साजिश भी रची। उसने ऑटोरिक्शा चालक चंद्रशेखर सफालिका को विक्रोली की एक पहाड़ी पर हथियार चलाना सिखाया।

सफलिका 15 सितंबर 1983 को एस्प्लेनेड कोर्ट के बाहर राजन को आश्चर्यचकित करने में सफल रही। राजन की हत्या उसके गुर्गे द्वारा दक्षिण मुंबई के सत्र न्यायालय के अंदर कट्टर प्रतिद्वंद्वी अमीरजादा की हत्या के बमुश्किल 15 दिन बाद हुई थी।

इस बीच कुंजू ने घाटकोपर के फिलिप फंडारे उर्फ अन्ना और यशवंत जाधव से हाथ मिला लिया। डोमनिक, दिलीप भिसे और रमेश पुजारी भी कुंजू के गिरोह में शामिल हो गए, जिससे तिलक नगर गिरोह को भागना पड़ा।

राजन के अधिकांश सहयोगी, जिनमें छोटा राजन भी शामिल था, कुंजू और उसके आदमियों के साथ किसी भी सीधे टकराव से बचने के लिए तिलक नगर से भाग गए।

कानपुर

कानपुर कराची के लिए एक गुप्त शब्द है। अगर कोई गैंगस्टर कहे 'कानपुर बात हुई थी'
(मैंने कानपुर में किसी से बात की) इसका मतलब है कि मैंने कराची में डी-कंपनी के किसी सदस्य से बात की।

कंजरी

विक्रम परमार उर्फ मोहम्मद कंजरी और उसकी पत्नी फातिमा वर्षों से दाऊद इब्राहिम और उसके दाहिने हाथ छोटा शकील के प्रति वफादार बने हुए हैं।

पुलिस ने हाल ही में 2001 में गुजरात के कानून मंत्री अशोक भट्ट और भारतीय जनता पार्टी के विधायक भरत बारोट की हत्या की साजिश रचने के आरोप में उनका नाम दर्ज किया है।

विक्रम परमार विजय उथकर उर्फ विजय कंजरी के संरक्षण में बड़ा हुआ, जब तक कि मई 1986 में होटल व्यवसायी श्रीधर शेट्टी की भायखला में हत्या नहीं कर दी गई। वे दगड़ी चॉल से ज्यादा दूर नहीं रहते थे और भायखला कंपनी के रामा नाइक, बाबू रेशम और बाद में अरुण गवली के प्रति निष्ठा रखते थे।

Machine Translated by Google

तब ज्ञात हुआ।

हालांकि, जब जयंत शेट्टी ने शरद शेट्टी और अरविंद ढोलकिया की मदद से सरगना विजय कंजरी और उसके साथियों को अपने चंगुल से छुड़ाने में कामयाबी हासिल की, तो मामला पलट गया। रवि और किशोर कंजरी भी उनके साथ आ गए और विक्रम कंजरी भी अपवाद नहीं था। बाद में कंजरी ने स्वचालित हथियारों और ग्रेनेड के साथ जैकब सर्किल पुलिस लॉक-अप पर हमला किया और गैंगस्टर बाबू रेशिम को मार डाला। विक्रम को बायकुला के कंजरवाड़ा से भागना पड़ा और टेमकर मोहल्ला के आसपास शकील के गढ़ में शरण मिली।

विक्रम को जल्द ही एक नया नाम मिला, मोहम्मद कंजरी- शकील के 'धर्म प्रचार' और धर्म परिवर्तन के प्रति उसके जोश की बदौलत। वह कंजरी ही कहलाता रहा क्योंकि वह गुजरात से आकर बसी एक जनजाति से था।

1995 के मध्य में जेल में बंद रहने के दौरान विक्रम को अनवर बादशाह के रूप में एक भरोसेमंद दोस्त मिला। जल्द ही दोस्ती रिश्तेदारी में बदल गई जब अनवर की बहन फातिमा उर्फ पारो ने 1987 में विक्रम से शादी कर ली।

इस बीच विक्रम ने पाइधोनी के एक गुंडे शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ हुसैन वस्त्रा से हाथ मिला लिया। यह गठबंधन ज्यादा दिन नहीं चला और विक्रम जल्द ही शकील के पाले में वापस आ गया।

विक्रम तब सुर्खियों में आया जब 1997 में रूपम स्टोर्स के मालिक भरत शाह की हत्या में उसका और अनवर बादशाह के छोटे भाई इस्माइल का नाम आया। इसके तुरंत बाद मलाड में बिल्डर अजय मिश्रा की हत्या हुई।

कारीगर कितने हैं

कारीगर का हिंदी में मतलब होता है कुशल कारीगर। जब कोई गैंगस्टर पूछता है 'कारीगर कितने हैं ?' तो वह दरअसल यह पूछ रहा होता है कि योजनाबद्ध हमले के लिए कितने शूटर उपलब्ध हैं।

कारदार गैराज

Machine Translated by Google

गुरु साटम उर्फ गुरु भाई अभी भी परेल और उसके आसपास एक 'धोखा आदमी' है।
कोई भी उसके बारे में खुलकर बात करने की हिम्मत नहीं करता। 15 अगस्त 2003 को एक मुठभेड़ में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर सुरेश मांचेकर की गोली मारकर हत्या ने उसके पक्ष में तराजू मोड़ दिया।

इससे पहले, मांचेकर का परेल के उस क्षेत्र में संचालित 200 से अधिक गैराजों पर नियंत्रण था, जो कभी कारदार स्टूडियो था।

मटका सट्टे और अवैध जुआ अड्डों ने उन्हें नियमित रूप से हफ्ता देना शुरू कर दिया।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन साटम का सामना एक गैरेज में काम करने वाले युवा सुरेश मंचेकर से हुआ। बदमाशों को जल्द ही एहसास हो गया कि यह मूर्ख युवक उनके लिए एक संभावित खतरा है और गैरेज मालिकों से सुरक्षा राशि वसूलने में बाधा बन सकता है, और कारदार गैरेज उनकी नियमित आय के मुख्य स्रोतों में से एक था। मालिक हर महीने 1000/- से 1500/- रुपये तक देते थे, जो गिरोह के खजाने के लिए एक अच्छी रकम थी।

हालांकि, उनका साथ लंबे समय तक नहीं चला, क्योंकि मनचेकर को एहसास हुआ कि साटम वास्तव में उसके साथ लूट का माल साझा नहीं कर रहा था। इसके बाद, दोनों ने कारदार गैराज से हफ़िया के संग्रह को लेकर तलवारें भांजी।

वृद्ध साटम को जल्द ही एहसास हो गया कि वह मांचेकर की हिट लिस्ट में है और वे दोनों अपना ठिकाना बदल लिया, लेकिन इससे पहले उन्होंने एक-दूसरे को मारने की कसम खा ली थी।

करीम लाला (पठान गॉडफादर)

लाला, जैसा कि पठान को लोकप्रिय रूप से जाना जाता था, 1944 में ग्रेट डॉक फायर के वर्ष से थोड़ा पहले उत्तर पश्चिमी सीमांत प्रांत से मुंबई चले गए थे। लेकिन उन्हें भारतीय नागरिकता हासिल करने में लगभग 18 साल लग गए।

उस समय पठान अपने साथ ड्रग्स लाने के लिए जाने जाते थे और डोंगरी स्थित अफगानी, झूमा खान घासवाला, उस समय के सबसे बड़े खिलाड़ियों में से एक था।

लाला को मादक पदार्थों के व्यापार से घासवाला के बेटे फारुक ने परिचित कराया, जो डोंगरी का ही निवासी था।

जल्द ही वह हाजी मस्तान, यूसुफ पटेल जैसे खिलाड़ियों के साथ बड़ी लीग में शामिल हो गए।

Machine Translated by Google

वर्धराज मुदलियार उर्फ वर्धाभाई, और पाइधोनी से जेनाबाई खाबरी।

1975 में आपातकाल की घोषणा के बाद लाला पुलिस की जांच के दायरे में आ गये।

बाद में उन्होंने खुदाई खिदमतगार और पख्तूनिस्तान जिगरा-ए-हिंद नामक संगठनों का गठन किया, जो पठानों को सहायता और रोजगार प्रदान करते थे।

लेकिन उनकी मुश्किलें तब शुरू हुईं जब दाऊद इब्राहिम ने पठानों के साथ तलवारें भांजी। कभी दोस्त रहे दोनों गिरोह मोहम्मद अली रोड के दोनों तरफ से काम करते थे। लाला तब टूट गए जब उनके उग्र भतीजे समद खान को गैंगवार में घसीटकर मार दिया गया।

कट्टा (देशी रिवॉल्वर)

मुंबई में विभिन्न गिरोहों से जुड़े अधिकांश प्रशिक्षु हत्यारे 'कट्टा' का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि महंगे आयातित हथियार पुलिस के हाथ न लगें।

लुटेरे भी देशी हथियारों का इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें वे अक्सर शहर के छोटे अवैध हथियार डीलरों से 2,500 रुपये में खरीद लेते हैं।

कॉन्ट्रैक्ट किलर को काम शुरू करने से पहले हैंडगन मुहैया कराई जाती है। काम पूरा होने के बाद आमतौर पर इन्हें वापस कर दिया जाता है। हथियार मध्यम स्तर के आयोजकों द्वारा मुहैया कराए जाते हैं और इकट्ठा किए जाते हैं।

कौम की चूरन

कौम की चूरन का मतलब है अंडरवर्ल्ड में धर्मनिरपेक्षता का दावा करना। गैंगस्टरों के बीच धर्म का सबसे कम महत्व है। एक डॉन अक्सर अपने अंडरस्टडी को यह विश्वास दिलाने की कोशिश करता है कि वह धर्मनिरपेक्ष है और धर्म का उसके गिरोह में कोई महत्व नहीं है।

कौवा (कौआ)

Machine Translated by Google

''कौवा शब्द का अर्थ आम तौर पर गैंगलैंड की भाषा में मोबाइल फोन होता है। मोबाइल फोन, कौवे की तरह आवाज करता है, जिसके कारण इस शब्द की उत्पत्ति हुई।

कयूम चाचा

मुंबई में 1993 के बम विस्फोटों के पीछे के व्यक्ति डॉ. मोहम्मद जलीस शैफुल्लाह अंसारी को 2006 में दुबई से प्रत्यर्पित किया गया था। अंसारी ने अबू सलेम को 9 एमएम कैलिबर की पिस्तौल दी थी, जिसे बॉलीवुड अभिनेता संजय दत्त को सौंप दिया गया था।

अब्दुल कयूम शेख उर्फ कयूम टेलर, दाऊद इब्राहिम गिरोह का एक प्रमुख सदस्य। माहिम में एक छोटी सी टेलरिंग की दुकान से शारजाह तक का सफर, शहर के सबसे वांछित गैंगस्टरों में से एक कयूम चाचा के लिए एक लंबी यात्रा रही है।

कितने की लगी? (आपको कितने समय के लिए हिरासत में रखा गया है?)

सजा की अवधि, जेल के अंदर अन्य लोगों के साथ कैदी के रिश्तों को भी निर्धारित करती है। अल्पकालिक कैदी आमतौर पर शिकार या धूर बन जाता है।

खालिद पहलवान

खालिद पहलवान दुबई के उन चंद लोगों में से एक हैं जो अभी भी दाऊद इब्राहिम को उसके नाम से पुकार सकते हैं। वह डी-कंपनी में एक वरिष्ठ सम्मानित व्यक्ति है, हालांकि वह स्वतंत्र रूप से काम करता है।

खालिद पहलवान का दाऊद इब्राहिम से रिश्ता 1970 के दशक के आखिर से है, जब उसे दाऊद ने काम पर रखा था। उन दिनों निजी सुरक्षा के लिए पहलवानों को काम पर रखना एक फैशन था।

खालिद पहलवान भोपाल से आया था और डोंगरी के एक दबंग बासु महाराज के लिए अंगरक्षक के तौर पर काम करने लगा था। दाऊद ने कुछ महीने बाद उसे काम पर रख लिया। दरअसल खालिद पहलवान पाकमोडिया स्ट्रीट की रखवाली कर रहा था

Machine Translated by Google

जिस रात दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की हत्या पठानों ने की थी। बड़े बॉडीगार्ड ने पठानों द्वारा अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली गाड़ी को पहचान लिया और उन पर गोलियां चला दीं। जल्द ही, इमारत का विशाल स्टील का दरवाज़ा बंद हो गया, पठान गिरोह के सदस्य दाऊद को निशाना बनाने से कुछ सेकंड पहले।

खालिद पहलवान ने दाऊद इब्राहिम के उदय को देखा था और उसके पीछे दुबई चला गया था। उसने खुद काम करना शुरू कर दिया और ड्रग तस्करी में हाथ आजमाया।

कहानी यह है कि दाऊद इब्राहिम के दूसरे सबसे बड़े शागिर्द छोटा शकील को एक बार महमूद कालिया ने ताड़देव एयरकंडीशन मार्केट में काबू कर लिया था।
खालिद पहलवान का शागिर्द कालिया किसी विवाद में शकील को चाकू मारना चाहता था। जब उसके गुरु खालिद पहलवान उर्फ केपी ने बीच-बचाव किया तो महमूद कालिया मौके से भाग गया।

उम्रदराज खालिद पहलवान अभी भी दुबई में रहते हैं। वह 2006 में सेशन कोर्ट के पास हाई-प्रोफाइल मुखबिर अमजद खान की हत्या में नामित संदिग्धों में से एक थे।

किशोर गुलाब गवली

अरुण गवली के भाई किशोर उर्फ पापा की 22 फरवरी 1990 को माहिम में हत्या कर दी गई थी।

पुलिस के भेष में गवली के गुंडों ने कामती को हिरासत में लिया, जो किशोर के हत्यारों को जानता था। कामती ने खुलासा किया कि गिरगांव के मनोज नामक व्यक्ति ने प्रतिद्वंद्वी शूटरों को मुखबिर बनाया था।

विश्वस्त सहयोगियों विजय टंडेल और राजा जाधव के नेतृत्व में एक टीम मनोज को उसके मध्य मुंबई स्थित आवास से 'लेने' के लिए तैयार थी।

कार्यवाही को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए पुलिस के भगोड़े प्रकाश जोगलेकर को भी दस्ते में शामिल किया गया था। दस्ते ने एक सफ़ेद एंबेसडर में मनोज के घर पर धावा बोला। चूँकि जोगलेकर के पास अभी भी उसका पुलिस पहचान पत्र था, इसलिए वकील के बेटे मनोज को मनाना मुश्किल नहीं था।

काफी देर तक चली पूछताछ के बाद मनोज ने वह सब बता दिया जो वह जानता था।

Machine Translated by Google

अरुण गवली को यह एहसास हो गया था कि अपराध को सुनील सावंत, अनिल परब, अवधूत भोंडे, शिरीष परब, अशोक परब और श्रीकांत देसाई उर्फ मामा जैसे दिग्गज निशानेबाजों ने अंजाम दिया है - जो गवली की पहुंच से बाहर थे।

कुछ घंटों बाद मनोज को ताड़देव में गोली लगने के कारण मृत पाया गया।

कोली (असली मछुआरा नहीं)

मंगेश कोली के पास अपना रूप बदलने का ऐसा तरीका था कि गिरगिट भी शर्मिंदा हो जाए।

कोली अक्सर गंजा दिखने के लिए अपने बाल मुंडवा लेता था। कुछ ही दिनों में वह अपनी भौंहों के बाल उखाड़ लेता या मूंछें बदल लेता। कई बार कोली बुर्के के पीछे से निकल आता या रिवॉल्वर या चॉपर लेकर सामने आता, जिससे पीड़ित अचेत हो जाता।

कोली ने यह सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त मेहनत की कि उसका मेकअप बिल्कुल सही हो और कोई भी संकेत उसे पहचान न सके। पुलिस सूत्रों के अनुसार, दिखावट बदलने के लिए लिपस्टिक, बिंदी, महिलाओं के जूते या नेल पॉलिश के सही शेड सहित छोटी से छोटी बातों पर ध्यान दिया जाता था।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, कोली गंभीर अपराधों में शामिल होने से पहले कोलाबा मार्केट इलाके में गुंडा था। बाद में उसने अंडरवर्ल्ड डॉन अश्विन नाइक से हाथ मिला लिया, जिसके साथ उसने अपनी लूट का कुछ हिस्सा साझा किया।

एक बार तो वह अप्रैल 1999 में एस्प्लेनेड कोर्ट में पुलिस हिरासत से भाग निकला। कुछ ही घंटों के भीतर उसने कोलाबा में एक शराब की दुकान लूट ली।

कोली एक परपीड़क और महिलाओं से छेड़छाड़ करने वाला व्यक्ति था। पुलिस के अनुसार, वह अक्सर बंदूक की नोक पर अपने पति की मौजूदगी में पीड़िता के साथ बलात्कार करता था और बहुत सी महिलाएं बलात्कार से जुड़े कलंक और डर के कारण शिकायत दर्ज नहीं कराती थीं।

कोली को अंततः 10 अक्टूबर 1999 को सहायक पुलिस निरीक्षक रविन्द्र आंग्रे के नेतृत्व वाली टीम ने मुठभेड़ में मार गिराया।

Machine Translated by Google

खबरी (मुखबिर)

11 नवम्बर 1991 को दोपहर करीब एक बजे का समय था। आतंकवाद निरोधक दस्ते का नेतृत्व कर रहे अतिरिक्त पुलिस आयुक्त ए.ए. खान अपने कार्यालय में दाखिल हुए ही थे कि टेलीफोन की घंटी बजी।

थोड़ी देर की टालमटोल के बाद खबरी, जो बीस के दशक के अंत में एक छोटा-मोटा अपराधी था, मुद्दे पर आ गया। उसे तब तक यकीन नहीं हुआ जब तक उसने लाइन के दूसरी तरफ खान को नहीं सुना।

ऐसा मुख्य रूप से पुलिस से निपटने और गिरफ़्तारी से बचने के उनके वर्षों के अनुभव के कारण था। उन्हें यह भी नहीं पता था कि कौन सा अधिकारी किसके वेतन पर काम करता है।
उन्होंने एक नंबर डायल किया और जब उन्हें पता चला कि दूसरी तरफ खान ही है, तो उन्होंने कहा, "साहब। यह माया डोलास के बारे में कुछ जानकारी है। वह पिछले कुछ दिनों से लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में स्वाति बिल्डिंग में छिपा हुआ है।"

खान ने मुंबई में खबरों का ध्यान पहले ही अपनी ओर आकर्षित कर लिया था । कुछ महीने पहले गुजरात के बड़ौदा में किए गए साहसिक ऑपरेशन ने उसे खूंखार बना दिया था।

इस गुप्त सूचना ने खान को परेशान कर दिया था। 27 जनवरी, 1990 को बड़ौदा में पाकिस्तान में प्रशिक्षित सिख आतंकवादी बलदेव सिंह को मार गिराने के बाद उनके आदमी अपने अगले काम की प्रतीक्षा कर रहे थे।

गुप्त सूचना से पता चला कि डोलास और कुछ अन्य लोगों ने लोखंडवाला के दक्षिणी छोर पर स्थित दो अपार्टमेंटों पर अतिक्रमण कर लिया है।

स्वाति बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर का इस्तेमाल जबरन वसूली के लिए किया जा रहा था। नए विकसित एन्क्लेव के बिल्डरों को पैसे देने और अपने आंतरिक विवादों को निपटाने के लिए बुलाया जा रहा था।

यह इलाका सुरक्षित माना जाता था। यहां बड़ी संख्या में इमारतें निर्माणाधीन थीं और बिल्डरों को शिकार बनाना आसान था।

यह एक मूर्खतापूर्ण ऑपरेशन था। खान को पता था कि उसे डोलास को घेरने का दूसरा मौका नहीं मिलेगा, जो कोई साधारण लक्ष्य नहीं था।

Machine Translated by Google

खोटा (नकली)

अंडरवर्ल्ड में नकली चलता है। मोटे और हट्टे-कट्टे शकील शेख अहमद ने जेजे अस्पताल के पास टेम्कर स्ट्रीट पर छोटा शकील की शम्स ट्रैवल एजेंसी में एक छोटे से चौकीदार के रूप में शुरुआत की थी।

वह डी-कंपनी के लिए टेलीफोन कॉल अटेंड करने लगा और यहीं से छोटा शकील की आवाज की नकल करने की उसकी प्रतिभा सामने आई। इस तरह खोटा शकील या नकली शकील का जन्म हुआ।

खुजली

खुजली वह व्यक्ति है जो सीधा नहीं है या दुर्भावनापूर्ण इरादे वाला व्यक्ति है।

एक्जिमा को खुजली के नाम से भी जाना जाता है । आर्थर रोड जेल में बंद दाऊद इब्राहिम के छोटे भाई इकबाल ने 2003 से 2007 के बीच हिरासत के दौरान अपनी त्वचा की बीमारी के लिए चिकित्सा सहायता चाही थी।

समुद्र का राजा (हाजी हाजी इस्माइल या डबल)

कच्छ के पास जाम सलैया में जन्मे इस्माइल को 'समुद्र का राजा' भी कहा जाता था। इसकी मुख्य वजह कानून प्रवर्तन एजेंसियों को चकमा देकर ड्रग की खेप की तस्करी करने में उनकी कुशलता थी।

मैंड्रेक्स या बटन जैसा कि ड्रग सर्किल में जाना जाता है, से प्राप्त धन को दुबई के होटलों और मुंबई के सांताक्रूज़ में कुछ संदिग्ध होटलों में भेजा गया। लोनावला और महाबलेश्वर जैसे हिल स्टेशनों में संपत्तियां खरीदने में बड़ी मात्रा में धन खर्च किया गया।

हाजी हाजी के कारण उसे जो उपनाम मिला था, वह एक दशक से भी ज़्यादा समय तक प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन की हिट लिस्ट में सबसे ऊपर था। 1997 में उसे मारने के लिए एक केंद्रीय खुफिया एजेंसी ने 50,000 डॉलर की पेशकश की थी।

Machine Translated by Google

दो साल बाद एक प्रतिद्वंद्वी ड्रग माफिया 'एनके' ने अपने पूर्व सहयोगी को मरवाने के लिए इसी तरह की पेशकश की थी। आखिरकार 9 अक्टूबर 2005 को महाराष्ट्र-गुजरात सीमा पर बिलाड़ के पास उसे गोली मार दी गई।

हाजी हाजी 1993 में मुंबई में हुए बम धमाकों से पहले महाराष्ट्र और गुजरात के तट पर हथियारों और गोला-बारूद की बड़ी खेप उतारने में भी शामिल था। इसकी साजिश दाऊद इब्राहिम और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी ने रची थी।

ये तथ्य तब प्रकाश में आये जब 27 अक्टूबर 2005 को हाजी हाजी के बेटे वकार महमूद से मुम्बई की अपराध शाखा ने पूछताछ की। उसे गुजरात की जामनगर जेल से लाया गया था, जहां वह आपराधिक आरोपों का सामना कर रहा है।

कोमडी (मुर्गी)

विचाराधीन कैदियों की दिलचस्पी आर्थिक अपराधों में शामिल अपराधियों में होती है। ऐसे आरोपियों को कोमडी कहा जाता है क्योंकि कट्टर अपराधी उन्हें आसान लक्ष्य मानते हैं, जिन पर जेल में सजा काटते समय और रिहा होने के बाद भी पैसे के लिए दबाव डाला जा सकता है।

कुमार पिल्लई

कुमार पिल्लई ने अपने पिता कृष्ण पिल्लई की हत्या का बदला लेने के लिए लाल सिंह चौहान की हत्या की साजिश रची, जिनकी 17 अक्टूबर 1989 को हत्या कर दी गई थी।

पूर्वी विक्रोली के नगर सेवक चौहान ने सीनियर पिल्लई से झगड़ा करने से पहले अशोक जोशी गिरोह के सदस्यों से हाथ मिला लिया था।

बदला लेने की प्यास में कुमार ने अपने पिता के हत्यारे की बोरिवली रेलवे स्टेशन पर हत्या की योजना बनाई, तथा मुम्बई के अंधेरे अंधेरे इलाके की ओर जाने वाला एकतरफा रास्ता अपनाया।

बाद में कुमार ने अमर नाइक गिरोह के सदस्यों से हाथ मिला लिया और लोअर परेल में इमारतों के एक समूह, 144 टेनमेंट्स का नियमित आगंतुक बन गया।

Machine Translated by Google

गिरोह का गढ़ था। 1993 में उसे अमर नाइक के छोटे भाई अश्विन के साथ गिरफ्तार किया गया था, उसके बाद वह भूमिगत हो गया।

पल्लई के भाड़े के गुर्गे एक बार फिर सक्रिय हो गए हैं, जिन्होंने 6 अक्टूबर 2007 को एस्टेट एजेंट सुनील मस्करे की गोली मारकर हत्या कर दी। अब गिरोह की नजर विक्रोली के कन्नमवार नगर और आसपास के इलाकों में तेजी से बढ़ती रियल एस्टेट में हिस्सेदारी पर है।

कुत्ता (कुत्ता)

अंडरवर्ल्ड में कुत्ता शब्द का इस्तेमाल दस रुपए के नोट के लिए किया जाता है। यह शब्द आज भी दक्षिण मुंबई के डोंगरी और उसके आसपास के इलाकों में इस्तेमाल होता है।

Machine Translated by Google

खेल के उस्ताद

Abdul Kanju

Abu Salem

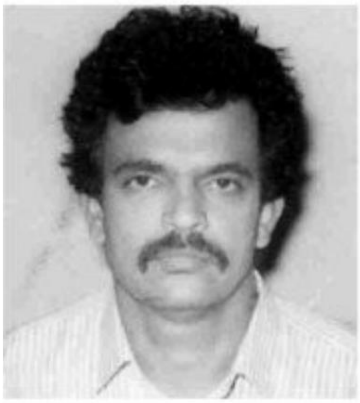

Amar Naik

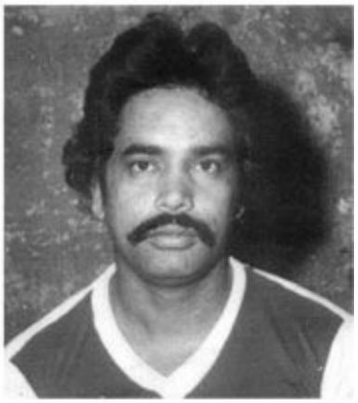

Amirzada

Anil Parab

Machine Translated by Google

Anis Ibraham Kaskar

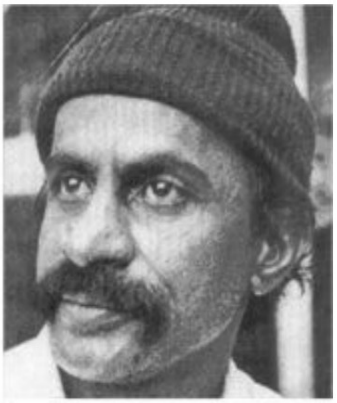

Arun Gawli

Ashok Joshi

Ashwin Naik

Babu Reshim

Machine Translated by Google

Babya Mayakar

Chota Babu

Chhota Rajan

Chhota Shakeel

Machine Translated by Google

D.K. Rao

David Pardeshi

Dawood Ibrahim and wife Mehjabbin at Chhota Rajan's Marriage

Farid Tanasha

Haji Mastan

Machine Translated by Google

Haji Mastan with Dilip Kumar and Saira Banu

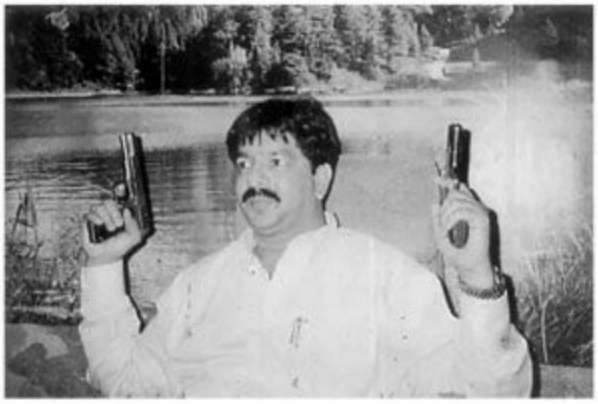

Hussein Ustra

Kajal

Karim Lala

Machine Translated by Google

Lamboo Shakeel

Maya Dolas

Nitin Sawant, Chota Rajan's aide, killed in an encounter

Priya Rajput

Ritu Divekar

Machine Translated by Google

Sada Pawle

Samad Khan

Santosh Naik

Subash Singh Thakur

Sunil Ghate

Suresh Manchekar

Machine Translated by Google

Vinod Matkar

Wardharajan Mudaliar

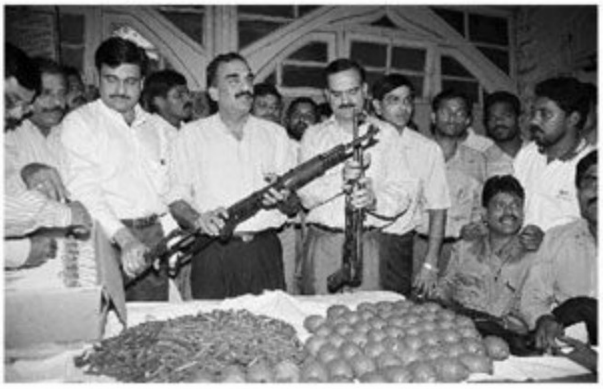

D. Sivanandhan, former Joint Commissioner of Police (Crime Branch), after recovery of large cache of arms. Third from left Pradip Sawant (E.SP.), fifth from left Param Bir Singh (Addl. Comm.).

Gangsters killed in an encounter

Machine Translated by Google

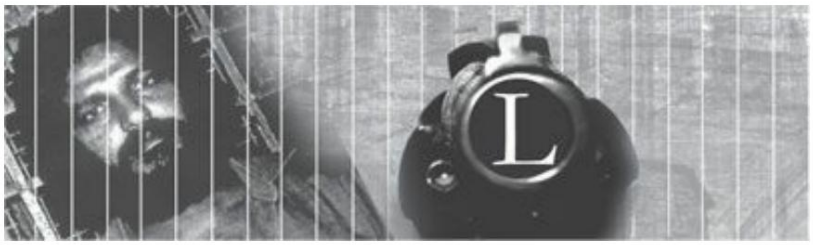

लड्डू (मीठा)

अंडरवर्ल्ड में बम को अक्सर लड्डू कहा जाता है। यह शब्द गोल आकार की मिठाई - लड्डू से लिया गया है, क्योंकि यह दिखने में छोटे बम जैसा ही होता है।

लाल विटे के चॉल

यहीं पर गॉडफादर रामा नाइक रहता था, जिसने गैंगस्टरों की एक पूरी पीढ़ी को तैयार किया। नाइक की उम्र 30 के आसपास थी, जब वह अपराध जगत में आया और उसके बुरे तरीकों ने शहर के पाताल लोक में एक नया मोड़ ला दिया। ठगी और क्षेत्रीय विवादों से शुरू होकर, गिरोह बड़े पैमाने पर युद्धों में बदल गया।

गिरोह की गतिविधियाँ पुरानी जीर्ण-शीर्ण इमारत के इर्द-गिर्द केंद्रित थीं, जिसका नाम इमारत की प्रमुख लाल ईंटों से पड़ा था। नाइक ने अपने सिंडिकेट की शुरुआत एक अन्य स्थानीय गुंडे मोहन सालमलकर से हफ्ता मांगकर की थी, ताकि वह इलाके में अपने अवैध कारोबार को चलाने की अनुमति दे सके। अन्य लोग भी लाल विटे के चॉल को नियमित रूप से संरक्षण राशि दे रहे थे।

मामला तब तूल पकड़ गया जब प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर पारसनाथ पांडे के साथी कुंदन दुबे की बहन पुष्पा अरविंद नाइक के बड़े भाई के करीब आ गई। इसका नतीजा नाइक के छोटे भाई उमाकांत की हत्या के रूप में सामने आया।

इस हत्या के कारण एस ब्रिज के पास गिरोहों का ध्रुवीकरण हो गया - बायकुला में एक एस-आकार का पुल। बाबू रेशिम, विलास चौगले, बबल्या सावंत और मोतीराम महादिक ने जल्द ही रामा नाइक गिरोह को मजबूत करने के लिए हाथ मिला लिया। राजनीतिज्ञ और

Machine Translated by Google

उस समय विधान सभा सदस्य अरुण गवली नाइक के शिष्य थे।

लाम्बी (लैम्बी दैट किल्ड समद खान)

AK 47 और AK 56 सीरीज जैसी असॉल्ट राइफलों को अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'लम्बी' भी कहा जाता है । यह नाम डॉन करीम लाला के उग्र भतीजे समद खान को मारने के लिए इस्तेमाल की गई लंबी थूथन से लिया गया है।

1 जनवरी, 1993. रात लंबी होती गई और जब उग्र समद खान अंततः बाहर निकलने वाला था, तो नीचे इंतजार कर रहे शूटरों के एक समूह को इसकी सूचना दी गई।

दक्षिण मुंबई के गिरगांव के सिक्का नगर में एक संदिग्ध होटल की चौथी मंजिल के कमरे की लाइट बंद थी। यह स्पष्ट संकेत था कि समद अपने होटल के कमरे से बाहर निकल चुका था।

जैसे ही लिफ्ट भवन के भूतल पर रुकी, रामा नाइक, बाबू रेशिम और संजय रग्गड़ के हत्यारे दस्ते ने अपनी गोलियां लिफ्ट में डाल दीं और अपनी मैगजीनें उग्र पठान पर खाली कर दीं।

जो लड़की पहले समद के साथ थी, वह खेतवाड़ी के सिक्का नगर की अंधेरी और सुनसान गली में निकल गई और गायब हो गई।

दाऊद को समद की महिलाओं के प्रति रुचि के बारे में पता था। उसने खूंखार गैंगस्टर को पकड़ने के लिए हनी ट्रैप का इस्तेमाल करने का फैसला किया।

घात लगाकर किए गए इस हमले ने समद को चौंका दिया। हमला इतना तेज़ था कि वह अपनी 'मशीन' यानी स्वचालित हथियार का इस्तेमाल करने में असमर्थ था।

समद के साथियों ने बाद में दावा किया कि मारे गए गैंगस्टर के बैग में हैंड ग्रेनेड भी थे। लेकिन दाऊद के किराए के साथियों की गोलियों की बौछार ने उसे ढेर कर दिया।

दाऊद ने समद को खत्म करने के लिए बायकुला कंपनी की मदद ली थी। उसने 1990 के दशक की शुरुआत में एक दुर्लभ हथियार एके 47 का भी इंतजाम किया था।

बाद में हामिद दलीप ने हत्या की जिम्मेदारी ली, जब उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

Machine Translated by Google

वह अपने पिता अजीज दलीप की मौत का बदला लेना चाहता था, जिनकी 1983 में समद खान ने हत्या कर दी थी।

समद ने अमीरजादा और आलमजेड के साथ मिलकर एक खतरनाक गठबंधन बनाया था। यह तिकड़ी जबरन वसूली और कॉन्ट्रैक्ट किलिंग में शामिल थी।

इससे पहले समद ने दाऊद के छोटे भाई अनीस की शादी के जश्न के दौरान गोलीबारी की थी। उस समय समद जमानत पर बाहर था और उसकी स्वचालित हथियार से चली गोली में दाऊद का भाई इकबाल घायल हो गया था।

लाठी- काठी

1970 के दशक की शुरुआत में लाठी- काठी का दौर था । मजबूत कद-काठी होना बहुत बड़ी बात थी और युवा लोग अच्छे आकार में आने के लिए जिम में घंटों पसीना बहाते थे।

विधायक कृष्ण देसाई की हत्या ने मध्य मुंबई में माफिया सत्ता समीकरण को बिगाड़ दिया था। सत्ता धीरे-धीरे लाड मास्टर और मूसा दादा जैसे जिम मालिकों से हटकर हत्यारों की एक नई नस्ल के हाथों में जा रही थी। अंडरवर्ल्ड में लाठी-काठी और रामपुरी चाकुओं से लेकर हैंडगन तक का संक्रमण हो रहा था।

गिरगांव में चंद्रकांत खोपड़े उर्फ बेबीज गोल्डन गैंग और दादर में वलगी-पालगी गैंग का उदय हुआ। शशि रसम ने सेंट्रल मुंबई से कोबरा गैंग का नेतृत्व किया। रामा नाइक और बाबू रेशिम ने दगड़ी चॉल से अपना साम्राज्य चलाया।

1970 के दशक के अंत तक व्यायामशाला का महत्व खत्म हो गया था। हथियारबंद गुंडों ने वहां अपना दबदबा कायम कर लिया था।

लिफ्ट-वाली बिल्डिंग

9 मिमी कैलिबर सेमी-ऑटोमैटिक स्टार पिस्तौल

लिफ्ट और पिस्तौल के साथ निर्माण: कनेक्शन थोड़ा भ्रामक लग रहा था।
ऑटोमैटिक पिस्तौल में स्प्रिंग के ज़रिए गोलियां ऊपर की ओर धकेली जाती हैं, ठीक वैसे ही जैसे लिफ्ट ऊपर जाती है। यह शब्द जासूसी करने वाले पुलिसवालों को चकमा देने के लिए गढ़ा गया था। इसलिए, जब कोई गैंगस्टर अपने साथी से कहता है 'लिफ्ट वाली बिल्डिंग ले कर आना' तो यह वाकई सच है

Machine Translated by Google

इसका मतलब है भरी हुई पिस्तौल लेकर आना।

लोनावाला हत्याकांड

गैंगस्टर फ्रांसिस जेवियर उर्फ शॉर्टी और विजय सावंत उर्फ विजू को 1985 में लोनावला के एक होटल के कमरे में गोली मार दी गई थी। दोनों हत्यारे फिलिप पंडारे के गिरोह से जुड़े थे। हत्याओं में मुख्य शूटर राजन नायर, छोटा राजन और विलास चौगुले थे।

पंडारे ने पहले चेंबूर के तिलक नगर में राजन नायर और उसके गुर्गों के साथ मुठभेड़ की थी। हत्याओं के बाद उत्तरी मुंबई में गैंगलैंड का समीकरण बदल गया।

लक्ष्मी सोनी (मुंबई में गैंगस्टर गुरु साटम की बचपन की प्रेमिका)

अपराध शाखा के अधिकारियों ने 2002 में लक्ष्मी को परेल स्थित उसके गंदे जावलकर मेंशन अपार्टमेंट से साटम गिरोह की ओर से धन वसूली करने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

हालाँकि साटम शादीशुदा है और दो शादीशुदा बच्चों का पिता है, लेकिन लक्ष्मी अभी भी उसके साथ है, यह बात पुलिस जाँच के दौरान पता चली। लक्ष्मी का छोटा भाई राजू भी गिरोह में शामिल हो गया, लेकिन अगस्त 2002 में मुंबई में क्राइम ब्रांच के अधिकारियों महेश देसाई और निनाद सावंत ने उसे गोली मार दी।

लूखा (मीन)

लुखा अंडरवर्ल्ड का एक मतलबी आदमी होता है, जो अक्सर टूटा हुआ होता है और खर्च नहीं करना चाहता। इसका मतलब एक ऐसा व्यक्ति भी होता है जिसे खर्च किया जा सकता है।

Machine Translated by Google

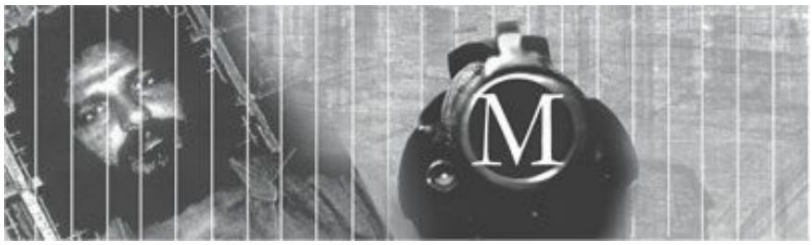

माँ के सात बीते कितने?

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'मां के सात बेटे कितने ?' का मतलब है 'आपके पास कितनी गोलियां हैं?' मां का मतलब असल में हथियार होता है और बेटे का मतलब है हत्या करने के लिए जरूरी गोलियां।

माँ के सत बच्चे ले कर आना

'माँ के सात बच्चे ले कर आना' इसका मतलब है, हथियार और गोला-बारूद लेकर मौके पर आना। माँ का मतलब है हथियार और बच्चे का मतलब है गोलियाँ।

मछली पानी से बाहर आया क्या?

'मछलीपानी से बाहर आया क्या?' का मतलब है, 'क्या मछली पानी से बाहर आ गई है?'
गिरोह अक्सर अपने शिकार के करीब पहुँचते समय इस मुहावरे का इस्तेमाल करते हैं। मछली का मतलब लक्ष्य होता है। शूटर वास्तव में देखने वाले से पूछ रहे होते हैं कि क्या लक्ष्य कार्यालय या निवास से बाहर निकल गया है ताकि वे हमला कर सकें।

मचमच (शेख फहीम अहमद)

मुंबई की गलियों में एक कुशल बंदूक तस्कर से लेकर दाऊद इब्राहिम की डी कंपनी में नंबर 3 तक, शेख फहीम अहमद ने एक लंबा सफर तय किया है।

Machine Translated by Google

लगातार बकबक करने की प्रवृत्ति के कारण उन्हें मचमच उपनाम मिला।

1990 के दशक की शुरुआत में मचमच को हथियार सप्लाई करने का अनोखा हुनर था, लेकिन वह कभी दाऊद के शूटरों के हाथ नहीं लगा। शुरुआत में उसका एकमात्र काम लोगों को फोन पर धमकाना था। लेकिन इतनी सारी बातों के बावजूद, डोंगरी का यह युवक, जिसके बारे में माना जाता है कि वह पाकिस्तान में छिपा हुआ है, अभी तक एक भी गोली नहीं चला पाया है।

मदन चौधरी

सुभाष सिंह ठाकुर का करीबी सहयोगी मदन चौधरी 1993 में टाडा के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार होने के बाद से ठाणे-विरार क्षेत्र में ऑपरेशन देख रहा था।

अंडरवर्ल्ड सूत्रों का मानना है कि चौधरी और गवली के बीच 1989 के आसपास झगड़ा हो गया था क्योंकि गवली को लगता था कि वह अपने काम से बहुत बड़ा हो गया है। छोटा राजन ने भी अपने गिरोह से अलग होकर अपने प्रतिद्वंद्वियों से हाथ मिला लिया और उसके बाद वह उससे खून की मांग करने लगा।

चौधरी की सुभाष सिंह ठाकुर और उनके शीर्ष सहयोगी शमकिशोर गरिगापट्टी से दोस्ती ने उसे बड़े कामों में आगे बढ़ने में मदद की। उसने जल्द ही ठाकुर गैंग की कमान संभाल ली, जिसने एक अन्य विदेशी गैंगस्टर अली बुदेश के साथ भी संबंध बनाए। उनके ज़्यादातर निशाने बिल्डर थे।

महेंद्र शेलार

शेलार छोटा राजन गिरोह का सदस्य था। उसने उत्तरी मुंबई के साकी नाका के एक अन्य गैंगस्टर विल्सन जॉर्ज के साथ मिलकर काम किया।

वह एक सनकी शूटर माया डोलास के साथ आकस्मिक मुठभेड़ के बाद गैंगस्टर बन गया।

शेलार को डोलास से बदला लेने का जुनून सवार था। उसने अपना एक गिरोह बना लिया

Machine Translated by Google

और 1989 में गिरफ्तार होने से पहले वह लूटपाट की होड़ में लगा रहा।

बाद में उसने छोटा राजन गिरोह में शामिल होने से पहले अपने गुरु मान्या कोकाटे की हत्या कर दी। वह छोटा राजन और उसके दाहिने हाथ रोहित वर्मा से सीधे निर्देश लेता था।

महेश ढोलकिया

वह गुजराती व्यापारी जो मुम्बई में अंडरवर्ल्ड की सीढ़ी के शीर्ष पायदान से बस एक कदम दूर था।

महेश और उनके भाई अरविंद उन ट्रेंड सेटिंग सेठों में से थे जिन्होंने शहर में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियों को वित्तपोषित करना शुरू किया था।

नल बाज़ार के दो टाकी के निकट एक छोटे कपड़ा व्यापारी के बेटे, इन दोनों भाइयों ने आयातित वस्त्रों की तस्करी से शुरुआत की, जो 1960 के दशक के अंत में एक आकर्षक व्यवसाय था।

ढोलकिया बंधुओं ने दमन से बोस्की और अन्य वस्त्रों की तस्करी में गहरी पैठ बना ली थी, जो उस समय देश के पश्चिमी तट पर तस्करी गतिविधियों का केंद्र था। मुनाफ़ा लगभग 100 प्रतिशत था।

एक पूर्व कारोबारी सहयोगी के अनुसार, दोनों ने यह सुनिश्चित करने के लिए लगभग 150 वाहनों का बेड़ा किराए पर लिया था कि तस्करी का सामान समय पर शहर में पहुंच जाए। कुछ सामान कोंकण से तस्करी करके लाया गया था, जिसकी आपूर्ति अजीज कोंकणी और फुंदन खान ने की थी।

ढोलकिया भाइयों और उनके सहयोगियों ने बिचौलियों को खत्म करने के लिए जल्द ही दुबई में आपूर्तिकर्ताओं के साथ संपर्क स्थापित किया। इस कदम से उनका कारोबार तेजी से बढ़ा और उन्होंने जल्द ही व्यापार में अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ दिया।

ढोलकिया भाइयों की मुश्किलें तब शुरू हुईं जब उन्होंने दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर जैसे गैंगस्टरों के साथ मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया। महेश ने गोल्डन गैंग के अप्पू शेट्टी, जयंत शेट्टी, श्रीधर शेट्टी, शरद शेट्टी, विजय कंजरी और बेबी खोपड़े के साथ गठबंधन किया।

महेश की असली समस्या तब शुरू हुई जब उन पर वित्तीय अनियमितताओं का आरोप लगा।

Machine Translated by Google

चन्द्रशेखर सफालिका, वह शख्स जिसने राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की हत्या की थी।
इसके तुरंत बाद जैकब सर्किल पुलिस लॉक-अप में बाबू रेशिम की हत्या कर दी गई। महेश पर हत्या के संदिग्ध हाफ़िज़जी आज़मगदी को शरण देने का आरोप था। तिलक नगर के गुंडे उसकी हत्या के लिए बेताब थे।

महेश के दुश्मनों को 13 अक्टूबर 1987 को मौका मिल गया जब वह टेबल खरीदने के लिए पेडर रोड स्थित अपने घर से निकला। बायकुला कंपनी के शूटरों ने उसे घेर लिया और उसका पीछा किया। उन्होंने उसे ताड़देव के पास पकड़ लिया। उसे 30 बार गोली मारी गई।

बाद में पुलिस ने बायकुला कंपनी के सभी सदस्यों जगजीत सिंह, दिलीप कुलकर्णी और मतीक को गिरफ्तार कर लिया।

मामा बनाया (काठमांडू में बेवकूफ बनाना)

"क्या रे देदवा, तेरा सेठ ने पैसा नहीं भेजा? " मिर्जा दिलशाद बेग ने छोटा राजन गिरोह के एक प्रमुख सदस्य सुरेश किसन वाघमारे उर्फ देदु से कहा, जब उसे काठमांडू के निकट किले जैसे विशाल भवन में ले जाया गया।

देदु हथियार सौदे के सिलसिले में बेग से मिलने नेपाल गया था। सांसद से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात के दौरान उसके सहयोगी विजय गेब्रियल गोंसाल्वेस उर्फ विजू भी उसके साथ था।

संयोग से, बेग राजन के गिरोह को आपूर्ति किए गए हथियारों की खेप के लिए 15 लाख रुपये की अंतिम किस्त की ओर इशारा कर रहा था। मुंबई में इन हथियारों की कीमत आसानी से 33 लाख रुपये हो सकती है।

बेग, जो 40 वर्ष के थे, एक 'भैया' थे, जो 1984 के आसपास उत्तर प्रदेश के कृष्णानगर से नेपाल चले गए थे। उनकी महत्वाकांक्षा इस हिमालयी राज्य में आवास और शारीरिक प्रशिक्षण मंत्री बनने की थी।

बेग पहले से ही मुंबई के अंडरवर्ल्ड से अपने संबंधों के कारण भारतीय खुफिया नेटवर्क की सूची में था। उन्हें यह भी संदेह था कि वह दाऊद इब्राहिम के इशारे पर दक्षिण अफ्रीका के रास्ते दुबई में ड्रग्स की बड़ी खेप की तस्करी करता था।

Machine Translated by Google

उन्होंने कहा , 'ये दुबईवाले बड़े खाने के टेबल पर बिछा देते हैं, मगर पैसे मिलना मुश्किल है।' संयोग से कनवा वही हैदर कानिया है, जिसने नेपाल में बेग के नेटवर्क का इस्तेमाल करके दाऊद के आदमियों तक करीब 1.5 टन मैंड्रेक्स की गोलियां पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई थी। पैसा मिर्जा तक नहीं पहुंचा था और वह दाऊद से भी बहुत खुश नहीं था।

बेग को भुगतान की शर्तों के बारे में उलझन थी, लेकिन देदु और विजय गोंजाल्विस ने उससे बुलेटप्रूफ जैकेट की एक और खेप हासिल कर ली। राजन गिरोह के सदस्य मुंबई में एक बड़ी हत्या के लिए गुप्त रूप से अपने हथियार जमा कर रहे थे।

मियां गांव (मुस्लिम गांव)

पाकिस्तान के कराची को मुंबई के अंडरवर्ल्ड में मियां गोअन या मुस्लिम गांव के रूप में जाना जाता है। बंदरगाह शहर ने अंडरवर्ल्ड में महत्व हासिल कर लिया है क्योंकि माना जाता है कि दाऊद इब्राहिम यहीं छिपा हुआ है। मुंबई की सड़कों पर एक मुस्लिम को मियां के नाम से भी जाना जाता है।

मैं ज़िंदा हूँ

11 नवंबर, 1998. थके हुए पुलिसकर्मी और वार्ड बॉय पांच बदमाशों की क्षत-विक्षत लाशों को परेल स्थित केईएम अस्पताल के मुर्दाघर में ले जा रहे थे।

वे लगभग चौंक पड़े जब 'मृत शरीरों' में से एक ने अचानक कहा: ' मैं जिंदा हूं'।

डी.के. राव लगभग मृत अवस्था में से उठ खड़े हुए, उन्होंने अपने ऊपर से ढका कफन फेंक दिया और स्ट्रेचर पर बैठ गए तथा हैरान पुलिसकर्मियों को घूरने लगे।

डाकू से गैंगस्टर बने इस व्यक्ति को दादर के पास दिनदहाड़े हुई एक 'मुठभेड़' में वरिष्ठ निरीक्षक अंबादास पोटे और उनके आदमियों की गोलियों से बचाया गया था।

Machine Translated by Google

हालांकि, स्पेशल स्क्वॉड ने राव के साथियों राजा गोरे, बिपिन खंडपाल, रमेश पुजारी और जयराम शेट्टी को मार गिराया था। पुलिस ने दावा किया कि छोटा राजन के गुंडे जेल के पास बम विस्फोट के आरोपी एहतेशाम और अन्य को निशाना बनाने की योजना बना रहे थे।

मुंबई में गैंगस्टर मुठभेड़ों में शायद ही कभी बच पाते हैं। लेकिन मुंबई में राजन का दाहिना हाथ राव दूसरी बार भाग्यशाली रहा। वह इससे पहले 1987 में खार में पुलिस की गोलियों से बच निकला था।

मजनूं (प्रेमी)

मुस्तफा दोसा डोंगरी शहर की गलियों में आलू टिक्की (आलू कटलेट) और उबले अंडे बेचा करते थे ।

1960 के दशक में डोसा परिवार के लिए सब कुछ ठीक चल रहा था। उनके दादा अहमद उमर डोंगरी में बाबुला टैंक के पास एक छोटी चावल मिल के मालिक थे। लेकिन किस्मत ने पलटा खाया और परिवार गरीबी में आ गया।

मुस्तफा और उसके बड़े भाई मोहम्मद ने आजीविका के लिए चाट और उबले अंडे बेचना शुरू कर दिया। लेकिन डोंगरी की सड़क-जिंदगी ने उन्हें छोटी-मोटी डकैतियों की ओर आकर्षित किया और जल्द ही, वे दोनों सबसे प्रसिद्ध चिंदी चोर या छोटे-मोटे अपराधियों में से एक बन गए।

बैग उठाने में उनके अद्भुत कौशल को रफीक दादा, जो एक तरह से गिरोह का सरगना था और एक स्थानीय दादा ने देखा, जिन्होंने उन दोनों को मुम्बई बंदरगाह पर पहुंचाया, जो 1970 के दशक के प्रारंभ में तस्करों के लिए स्वर्ग था।

1980 तक मुस्तफा ने अपने सोने के कारोबार के लिए दुबई में मजबूत संबंध बना लिये थे।
इस मार्ग को आम तौर पर 'गोडाउन लाइन' के नाम से जाना जाता था, जहाँ महिलाएँ अपने शरीर में सोने के बिस्किट छिपाकर ले जाती थीं।
तभी से उसे महान प्रेमी के नाम पर 'मजनून' का उपनाम मिला। वह इनमें से कई लड़कियों के साथ रिश्ते में आया और फिर टूटा और यह नाम बस उसके साथ जुड़ गया।

1984 में मुस्तफा को COFEPOSA के तहत भगोड़ा घोषित कर दिया गया था। वह दुबई में छिपा हुआ था।

1993 में, उन्होंने कथित तौर पर हथियारों और विस्फोटकों की एक बड़ी खेप उतारी थी

Machine Translated by Google

रायगढ़ जिले के दिघी में हुए सीरियल बम धमाकों में यही उनका योगदान था। लेकिन किस्मत ने एक बार फिर उनका साथ नहीं दिया और 18 मार्च 2003 को संयुक्त अरब अमीरात ने उन्हें मुंबई निर्वासित कर दिया।

मान्या सुर्वे (बॉम्बे की पहली मुठभेड़)

11 जनवरी, 1982. दोपहर के करीब डेढ़ बजे का समय था, जब क्राइम ब्रांच के 18 अधिकारी तीन टीमों में बंट गए और शहरी डाकू मान्या सुर्वे की घात में बैठ गए, यह बॉम्बे की पहली पुलिस मुठभेड़ बन गई।

बीस मिनट बाद, वडाला में अंबेडकर कॉलेज जंक्शन पर एक ब्यूटी पार्लर के पास एक टैक्सी रुकी। सुर्वे अपनी प्रेमिका, जो एक विधवा है और जिसके दो बच्चे हैं, को लेने के लिए उतरा। दस्ते ने घेराबंदी की और पोजीशन ले ली। खतरे को भांपते हुए, सुर्वे ने अपनी वेबली और स्कॉट रिवॉल्वर निकाली, लेकिन इससे पहले कि वह ट्रिगर दबा पाता, पुलिस अधिकारी राजा तांबट और इशाक बागवान ने उसके सीने और कंधे में पांच गोलियां दाग दीं।

कहा जाता है कि केईएम अस्पताल जाते समय सुर्वे चिल्लाता रहा कि अधिकारियों ने उसे अपना बचाव करने का उचित मौका नहीं दिया। कुछ मिनट बाद उसकी मौत हो गई और उसके साथ ही शहरी डकैती की वह कहानी भी खत्म हो गई जो घातक आयामों तक पहुंच चुकी थी।

सूत्रों से पता चला है कि अंडरवर्ल्ड के एक प्रमुख नेता वर्धाभाई को लगा कि सुर्वे द्वारा उनकी स्थिति को चुनौती दी जा रही है और उन्होंने पुलिस को इसकी सूचना दे दी।

1944 में जन्मे मनोहर अर्जुन सुर्वे अपनी मां और सौतेले पिता के साथ कोंकण से मुंबई चले आए। उन्होंने कीर्ति कॉलेज में आर्ट्स स्ट्रीम में दाखिला लिया और अपने सौतेले भाई भार्गव दादा के प्रभाव में आकर छात्रों का एक गिरोह बनाया।

भार्गव वर्ली के अगर बाजार का गुंडा था। 1969 में वह अपने साथियों सुर्वे और मान्या पोधकर के साथ मिलकर दांडेकर नामक व्यक्ति की हत्या में शामिल था।
पुलिस इंस्पेक्टर ईएस दाबोलकर ने जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया और अभियोजन पक्ष द्वारा पेश किए गए एक ठोस मामले में तीनों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। यरवदा में, सुर्वे ने अपने समकालीन सुहास भटकर उर्फ पोट्या के साथ तलवारें चलाईं। मान्या की आतंकी रणनीति से तंग आकर जेल अधिकारियों ने गैंगस्टर को जेल में स्थानांतरित करवा दिया।

Machine Translated by Google

रत्नागिरी जेल में भूख हड़ताल के कारण सुर्वे का वजन करीब 20 किलो कम हो गया था, उसके बाद उसे स्थानीय सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। पहला मौका पाकर सुर्वे ने 14 नवंबर, 1979 को अधिकारियों को चकमा दिया और जेल में बिताए नौ साल के अनुभव से समृद्ध होकर बंबई लौट आया।

सुर्वे को जल्द ही धारावी के शेख मुनीर और डोंबिवली के विष्णु पाटिल जैसे भरोसेमंद साथी मिल गए। उदय शेट्टी भी कुछ समय बाद गिरोह में शामिल हो गया और एक मजबूत गठबंधन बना। यह मार्च 1980 की बात है।

जेल में रहने के दौरान पढ़े गए जेम्स हेडली चेस के उपन्यास के कथानक को याद करते हुए, सुर्वे ने शहर के अंडरवर्ल्ड के उच्च तबके में पहचान हासिल करने के लिए सरकारी दूध योजना से पैसा लूटने का फैसला किया।

माहिम में बरखा बिजली सिनेमा हॉल के पास से एक कार चोरी हुई और गोवंडी के पास 1.26 लाख रुपए की लूट को अंजाम दिया गया। चोरी की गई गाड़ी बाद में बांद्रा में नेशनल कॉलेज के पास लावारिस हालत में मिली, बिल्कुल वैसा ही जैसा चेस उपन्यास में लिखा गया है।

सुर्वे के कुछ सहयोगियों की पहचान दयानंद शेट्टी, परशुराम काटकर, मोरेश्वर नार्वेकर और किशोर सावंत के रूप में की गई।

अन्य डकैतियों में सायन-ट्रॉम्बे रोड पर केनरा बैंक की शाखा से 1.6 लाख रुपये और देवनार में ड्यूक एंड संस कंपनी से लूट शामिल है। पुलिस पर बहुत दबाव था और अपराध पर अंकुश लगाने के लिए ऑपरेशन मान्या सर्वे शुरू किया गया।

सुर्वे को पहला झटका तब लगा जब उसके प्रमुख सहयोगी मुनीर को 22 जून 1981 को कल्याण के निकट एक रासायनिक कंपनी से गिरफ्तार कर लिया गया, तथा कुछ दिनों बाद दयानंद शेट्टी और काटकर को गोरेगांव के एक लॉज से गिरफ्तार कर लिया गया।

हमले की आशंका से, सुर्वे 19 नवंबर 1981 को भिवंडी में अपने एक सहयोगी के ठिकाने में छिप गया। पुलिस दस्ते ने छिपने के लिए इस्तेमाल किए जा रहे घर में सेंध लगाई और एक हथगोला, एक देशी रिवाल्वर और कुछ जिंदा कारतूस बरामद किए।

व्यवस्थित तलाशी अभियान के परिणामस्वरूप शहर में उसके अभियान सीमित हो गए। उदय शेट्टी की गिरफ़्तारी के बाद, वह एक व्यक्ति की सेना बन गया। शहर में पहली मुठभेड़ होने से पहले सेना सिर्फ़ कुछ दिनों तक ही टिकी रही।

Machine Translated by Google

मटका (गुप्त सट्टेबाजी)

1970 के दशक के अंत तक मटका अंडरवर्ल्ड गिरोहों के लिए आय का मुख्य स्रोत था। लगभग सभी गिरोह इन अवैध सट्टेबाजी के अड्डों से मिलने वाली संरक्षण राशि से खूब पैसा कमाते थे।

मटका व्यवसाय का इतिहास 1962 से शुरू होता है, जब कल्याणजी शाह उर्फ कल्याणजीभाई ने वर्ली मटका की शुरुआत की थी। यह खेल 12 पत्तों से खेला जाता है, जिसमें रानी नहीं होती। भुगतान का अनुपात 1 से 11 होता है।

रतन खत्री ने 2 मई, 1964 को 'न्यू वर्ली' की शुरुआत की। खेल के नियमों में थोड़ा बदलाव किया गया। कार्ड किसी संरक्षक की मौजूदगी में निकाले जाने थे। लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता था।

सरगना के साथियों ने टेलीफोन पर पूरे शहर में लगे सभी दांवों का डेटा एकत्र किया। सांख्यिकीय तरीकों का उपयोग करते हुए, उस दिन जो नंबर लोकप्रिय नहीं थे, उन्हें चुना गया। नंबरों को बुकिंग एजेंटों को वापस भेज दिया गया और पूरे शहर में सट्टेबाज़ी के अड्डों के अंदर बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया।

कल्याणजी का मटका सप्ताह के सातों दिन चलता था, जबकि रतन खत्री केवल सोमवार से शुक्रवार के बीच ही सट्टा चलाता था।

चीनू चंद्रकांत, अबनानी, बबला और शांति खेतवाड़ी जैसे नए खिलाड़ी जल्द ही मैदान में शामिल हो गए।

आपातकाल के दौरान मटका व्यवसाय बुरी तरह प्रभावित हुआ था, लेकिन प्रशांतभाई, बालू थाने, भावगी फोर्ट और खोटे जैसे अन्य खिलाड़ियों के आने से यह फिर से गति पकड़ गया ।

1990 तक अंडरवर्ल्ड ने मटका कारोबार पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी।
दिलीप कुलकर्णी उर्फ डीके द्वारा धमकी दिए जाने के बाद खत्री का सट्टा गिरोह बंद हो गया। मेन फोर्ट और सूर्या ने उसके साम्राज्य पर कब्ज़ा कर लिया।

1993 तक मटका व्यापार ने अपना आधार दक्षिण मुंबई के फोर्ट में स्थानांतरित कर लिया था।
सट्टा एजेंटों ने 'टोरन स्पैटिक' नामक एक नई प्रणाली के साथ प्रयोग करना शुरू कर दिया था।

Machine Translated by Google

यद्यपि मुंबई में मटका से संबंधित चाकूबाजी की कई घटनाएं हुई थीं, लेकिन वर्ली में कल्याणजी शाह के बेटे वसंत की हत्या ने मटका संचालकों को हिलाकर रख दिया था।

अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि गोवा, गुजरात और मध्य प्रदेश में स्थित केंद्रों से मटका कलेक्शन की राशि हर महीने 350 करोड़ रुपये से ज़्यादा है। गिरोह मुनाफ़े का लगभग दो प्रतिशत संरक्षण राशि के रूप में कमाते हैं।

स्थानीय मटका संचालकों से हफ्ता वसूलना अंडरवर्ल्ड में एक प्रतिष्ठित मुद्दा है। शक्तिशाली स्थानीय गिरोहों को ज़्यादा पैसे दिए जाते हैं।

मामला (नौकरी)

1992 में जब अरुण गवली की यरवदा जेल में नजरबंदी थी, तब तक सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि उसके प्रमुख सहयोगी मोहन माली ने उससे मुलाकात नहीं की। माली ने शिकायत की कि दादर में एक राजनेता के बेटे ने संपत्ति के मामले को लेकर गिरोह के साथ झगड़ा कर लिया है।

माली ने बताया कि दो पारसी मालिकों ने सिंह नामक व्यक्ति को एक लोकप्रिय होटल 30,000 रुपये प्रति माह किराए पर दिया था, जिसमें 10 लाख रुपये जमा थे, और यह पांच साल की अवधि के लिए था। हालांकि लीज की अवधि समाप्त हो गई थी, लेकिन सिंह ने समझौते का सम्मान करने से इनकार कर दिया था।

जब यह विवाद अदालत में चल रहा था, तब सिंह ने होटल को राजनेता के बेटे को बेच दिया। इसके तुरंत बाद, पारसी मालिक को मामला निपटाने के लिए धमकियाँ मिलनी शुरू हो गईं।

मालिक ने माली से संपर्क किया और उससे हस्तक्षेप करने की मांग की। लेकिन, बेटे ने गिरोह के अनुरोधों पर कोई ध्यान नहीं दिया और रिश्ते खराब होने लगे।

और भी, क्योंकि नेता के बेटे ने माली से कहा था कि महाराष्ट्रीयन गिरोह होने के नाते उन्हें उसके मामले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उन्होंने यह भी परोक्ष टिप्पणी की कि गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम भी उनके साथ सीधे टकराव से बच रहा है।

माली ने जेल में बंद अपने गुरु गवली को यह बात बताई। गवली ने अपने आदमियों से कार्रवाई करने को कहा और हथियारबंद गुर्गों ने होटल पर धावा बोल दिया। इसके बाद बांद्रा से दो लोग गवली के दूसरे नंबर के कमांडर अशोक चौधरी उर्फ छोटा के पास पहुंचे।

Machine Translated by Google

बाबू ने डॉन को बताया कि वे समझौता करने को तैयार हैं। पारसी मालिक ने गिरोह के लिए 10 प्रतिशत हिस्से के साथ 70 लाख रुपये पर सहमति जताई।

मावरिक पठान्स

समद, हामिद और उसका छोटा भाई माजिद आपस में भिड़ने से पहले दोस्त थे। तीनों दुश्मनों के बीच 200 मीटर की दूरी थी।

यह सब तब शुरू हुआ जब हामिद ने एक छोटी सी बात पर समद को थप्पड़ मार दिया। हालाँकि दोस्तों ने बीच-बचाव किया, लेकिन यह अपमान उस आवेगी गैंगस्टर के लिए बहुत ज़्यादा था।

समद गुस्से में पार्टी छोड़कर चला गया। दोनों दोस्त अलग हो गए, लेकिन एक-दूसरे को जान से मारने की कसम खाने से पहले।

समस्या तब शुरू हुई जब हामिद दक्षिण मुंबई के सोन्या महल नामक डांस बार में एक सांप में फंस गया। जब दर्शक बचने के लिए भाग रहे थे, तो उस तगड़े पठान ने एक डांसर को अपने कंधे पर उठा लिया और अपनी बुलेट मोटरसाइकिल पर तेजी से भाग निकला।

हामिद की इस अजीब हरकत से समद दंग रह गया। नर्तकी उसकी पसंदीदा महिलाओं में से एक थी।

दो घंटे बाद समद ने हामिद के पिता दलीप अजीज पर तलवार से हमला कर दिया, जिससे डोंगरी में नवरोजी लेन नंबर 1 पर बच्चूवाला बिल्डिंग के बाहर उनकी मौत हो गई। इस हत्या ने दक्षिण मुंबई में विभिन्न गुटों के बीच एक बड़े गैंगवार की शुरुआत कर दी थी।

कुछ समय पहले ही हामिद ने अज़ीज़ की हत्या के बाद डोंगरी के अंबर बार के पास समद के दोस्त फज़लू लाला पर हमला किया था। लेकिन इस मामले में अशोक एंटी को ही दोषी ठहराया गया।

अज़ीज़ परिवार दूसरी मंज़िल पर रहता था। वे डोंगरी के भीमपुरा मैदान में 'फाइव फ्रूट्स' ब्रांड नाम से अवैध शराब बेचने में माहिर थे।

दलीप की मशहूर देसी शराब, जिसे दर्जी मास्टर ने जामुन से बनाया था , चार रुपये प्रति बोतल बिकती थी । शाम के समय 200 से ज़्यादा नशेड़ी चटाइयों (चटाई) पर बैठे हुए देखे जाना आम बात थी , एक पूर्व ने बताया।

Machine Translated by Google

संबंद्ध करना।

दलीप अज़ीज़ बैंगलोर से आये थे। उनके पिता हामिद, माजिद और बेटी नीलोफर थे।

छह फुट पांच इंच से अधिक लंबे हामिद ने डोंगरी और आस-पास के इलाकों की गलियों में आतंक फैला रखा था। पुलिसकर्मियों को धमकाना और दंगा-फसाद करना आम बात थी।

वह मरीन ड्राइव स्थित बॉम्बे इंटरनेशनल होटल और सोन्या महल के नियमित आगंतुक थे।

मेहदी इमरान

मेहदी इमरान नासिर शेख, कुख्यात गैंगस्टर और बम विस्फोट के आरोपी एजास पठान का भतीजा। मेहदी का नाम पुलिस रिकॉर्ड में 1992 में दर्ज हुआ था, जब उसे कोलाबा में डकैती में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। हालाँकि तब वह सिर्फ़ एक किशोर था, लेकिन इस लंबे और हट्टे-कट्टे पठान ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

उसी वर्ष उन्हें मस्जिद बंदर के पास मुर्गी मोहल्ला में दंगा करने के आरोप में फिर से गिरफ्तार किया गया।

मुंबई और औरंगाबाद में हुई डकैतियों में मेहदी की संलिप्तता के बाद पठान ने उसे कराची भागने की योजना बनाई। 1993 में पठान खुद भी कराची में छिपा हुआ था। हालांकि, यह योजना कामयाब नहीं हुई क्योंकि पठान का छोटा शकील से झगड़ा हो गया।

मेहदी 1996 में दुबई भाग गया था, क्योंकि उसे डर था कि शकील पठान से अपना बदला चुकाने के लिए उसे मारने की कोशिश कर रहा है। छब्बीस वर्षीय मेहदी अंततः 1998 में मुंबई लौट आया। उसे जल्द ही कुर्ला में एक स्कूल टीचर की बेटी से प्यार हो गया, जिससे उसने शादी कर ली। उसी वर्ष, उसे मध्य मुंबई में शालीमार होटल के पास कपूर ज्वैलर्स पर गोलीबारी में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। यह वह हमला था जिसने मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च स्तर पर उसकी प्रतिष्ठा स्थापित की।

मीसा

Machine Translated by Google

अपराध पर अंकुश लगाने के लिए महाराष्ट्र आंतरिक सुरक्षा अधिनियम (मीसा) लागू किया गया।
सरकार के इरादे नेक थे, लेकिन अंततः वह गैंगस्टरों को एक साथ लाने में सफल रही।

बायकुला कंपनी के नाम से मशहूर रामा नाइक को गिरफ्तार कर कल्याण जेल में बंद कर दिया गया। जल्द ही तिलक नगर के राजन नायर उर्फ बड़ा राजन भी उसके साथ शामिल हो गए। दोनों को मीसा के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया।

जेल में संपर्क स्थापित करने के माध्यम से ही रामा नाइक अंडरवर्ल्ड डॉन वरदराजन मुदलियार के संपर्क में आया, जिसे बड़ा राजन का करीबी माना जाता था।

अपनी रिहाई के बाद, बड़ा राजन अक्सर राम नाइक से मिलने के लिए भायखला में लाल विटे की चॉल जाता था। उसके साथ अक्सर छोटा राजन, अब्दुल कुंजू, रमेश शर्मा उर्फ गूंगा, राजू शर्मा उर्फ चिकना, गणेशसिंह भिस्त उर्फ डैनी, कमलाकर अडांगले, अशोक कुंदर, देवा, रावन्या और डोमनिक होते थे।

रामा नाइक और उनके लोगों ने चेंबूर के तिलक नगर का दौरा किया और वहां सुरक्षित शरण मांगी।

छोटा राजन एक साल से ज़्यादा समय तक रामा नाइक के परिवार के साथ रहा, जब वह चेंबूर में एक गंभीर अपराध के सिलसिले में वांछित था। उसके कई गुर्गों को दगड़ी चॉल में छिपने के लिए सुरक्षित जगह मिल गई थी।

हिरासत में लिए जाने से गैंगस्टरों को अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ अपनी ताकत आजमाने का मौका भी मिला। शशि रसम ने जेल में अपनी धमकाने वाली रणनीति से कई विरोधियों का गुस्सा भड़काया था।

जेलें ऐसी बैठक जगह बन गई थीं जहां गैंगस्टर अपनी रिहाई के बाद दीर्घकालिक मित्रता विकसित करते थे।

मिर्ची

इकबाल मिर्ची शहर में तस्करी और ड्रग तस्करी के लिए अंडरवर्ल्ड की ताकत का इस्तेमाल करने वाले पहले लोगों में से एक था। इकबाल मोहम्मद मेमन के नाम से जन्मे, उन्होंने अपने पूर्वजों के कारण इकबाल मिर्ची नाम प्राप्त किया, जो

Machine Translated by Google

मिर्च पाउडर का व्यापार किया जाता था।

मुंबई पुलिस के एंटी-नारकोटिक्स सेल को मिर्ची के सुसंगठित सिंडिकेट का पता चल गया और पठान नियाज खान को 1982 में वापी से गिरफ्तार कर लिया गया।

यह छापेमारी की एक लहर की शुरुआत थी। माहिम के पास सैफी बिल्डिंग में मिर्ची के ठिकाने से 125 किलोग्राम हशीश जब्त होने के बाद, इस मायावी तस्कर ने अपना ठिकाना अलीबाग और गुजरात के छिद्रपूर्ण सौराष्ट्र तट पर बना लिया।

जब सीरियल बम धमाकों के बाद पुलिस ने तस्कर पर शिकंजा कसा, तो माना जाता है कि मिर्ची ने रियल एस्टेट में कदम रखा। वर्ली सी फेस पर जहाज मंजिल और होटल आशिमा उस समय उसकी कुछ प्रमुख संपत्तियों में से एक थीं। अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि मिर्ची यूरोप में छिपा हुआ है।

मोहन देवाडिगा

मोहन देवाडिगा, गैंगस्टर छोटा राजन का सहयोगी, जो 1997 में उल्हासनगर कोर्ट के बाहर ले जाते समय पुलिस मुठभेड़ में भाग निकला था।

मोहन कोटियन

तिलक नगर निवासी छोटा राजन का पूर्व सहयोगी कोटियन 1997 में कथित तौर पर प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम गिरोह में शामिल हो गया था। बालू डोकरे उर्फ 'मिर्ची' को बेंगलुरु में छोटा राजन के पूर्व सहयोगी को खत्म करने का काम सौंपा गया था।

वर्मा 1997 में कोटियन को बंगलौर से बाहर निकालने में कामयाब हो गया। पीड़ित को एक सुनसान राजमार्ग पर डोकरे ने कई बार चाकू मारा और कई घावों के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

मुचचद

भारत के मोस्ट वांटेड गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम को मुच्चद के नाम से भी जाना जाता है।

Machine Translated by Google

इसका कारण उनकी घनी मूंछें हैं।

मम्मी (सुश्री आशा गवली)

1980 के दशक की शुरुआत में, जब जुबैदा मुजावर छुट्टियों में पुणे के पास वडगांव पीर गांव से मुंबई के दगड़ी चॉल में अपनी बहन से मिलने आई थीं, तब वह अभी स्कूल में पढ़ती थीं।

उसे इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह अपने पड़ोसी अरुण गवली से शादी कर लेगी, जो रामा नाइक और बाबू रेशिम की अगुआई वाली बायकुला कंपनी का एक अहम सदस्य था। नई दुल्हन को आशा गवली और बाद में मम्मी के नाम से जाना जाने लगा, जब उसका पति डॉन बन गया और सदस्यों के लिए 'डैडी' बन गया।

मुर्गा (मुर्गा)

जब कोई पुलिसकर्मी या आम आदमी यह सुनेगा कि 'नागपाड़ा जाकर मुर्गा ले लेना' तो वह क्या समझेगा ? गैंगलैंड की भाषा में मुर्गा या मुर्गा का मतलब दोपहिया वाहन होता है।
दाऊद इब्राहिम के भरोसेमंद साथी मोहम्मद कंजरी को अपने आदमियों से बात करते समय इन शब्दों का इस्तेमाल करने के लिए जाना जाता था।

मुसाफिरखाना

दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर ने मुसाफिरखाना में स्थानीय स्तर पर निर्मित सिंथेटिक साड़ियों पर नकली विदेशी स्टाम्प लगाने से इसकी शुरुआत की थी।

उनके हुनर पर डॉन हाजी मस्तान या हाजीभाई की नज़र पड़ी जब दूसरे व्यापारियों ने उन्हें बताया कि दो किशोर और एक बुज़ुर्ग व्यक्ति मुसाफ़िर-खान के बाहर नकली साड़ियाँ बेच रहे हैं। यह 1970 के दशक की शुरुआत की बात है।

हाजीभाई के आदमियों ने एक गुप्त जांच शुरू की, जिसके बाद नकली साड़ी घोटाले का रहस्य दो किशोरों और डोंगरी के पठानवाड़ी के एक पूर्व नगरपालिका गार्ड तक पहुंच गया।

Machine Translated by Google

पठानवाड़ी की संकरी गलियों में कारों का एक काफिला घुस आया। हाजीभाई और उनके साथियों ने नगर निगम के गार्ड को पकड़ लिया, जो भाग्यशाली था कि वह बिना किसी नुकसान के बच निकला, जैसा कि उसे आज भी याद है।

तीनों ने कबूल किया कि उन्होंने गुजरात के सूरत से सस्ती दरों पर साड़ियाँ खरीदी थीं। उन्होंने उन्हें आयातित उत्पाद के रूप में बेचने से पहले नकली स्टाम्प का इस्तेमाल किया।

सरगना ने तीनों को समझाया कि उनके इस कृत्य से मुसाफिरखाना और उससे सटे मनीष मार्केट की बदनामी हो रही है, जिसे दक्षिण मुंबई में तस्करी की गतिविधियों का केंद्र माना जाता है। दोनों बच्चों को तस्करों के लिए कमीशन पर काम करने की पेशकश की गई।

यही वह समय था जब दाऊद इब्राहिम को आयातित कपड़ों से परिचित कराया गया। बोस्की (शर्टिंग फैब्रिक) का एक गज उसे करीब 55 रुपये में मिल जाता था। उसने जल्द ही अपनी बिक्री सूची में स्ट्रेचलॉन को भी शामिल कर लिया, जो पतलून के लिए लोकप्रिय था। एक पीस 90 रुपये में बिकता था। लेकिन दाऊद को असली जैकपॉट तब मिला जब उसके हाथ ओमेक्स घड़ियों की बड़ी खेप लगी, जिसे बिस्किट के नाम से भी जाना जाता है, जैसा कि कई मॉडल दिखते हैं। इन घड़ियों की कीमत उसे 350 रुपये प्रति घड़ी मिली।

मुसाफिरखाना और मनीष मार्केट के बड़ी संख्या में व्यापारी आज भी दाऊद इब्राहिम को एक बेहद चतुर व्यापारी के रूप में याद करते हैं।

मुत्तप्पा राय

29 मई 2002 को दुबई से प्रत्यर्पित किये जाने से पहले मुत्तप्पा राय कर्नाटक राज्य पुलिस द्वारा वांछित था। रिकार्ड से पता चलता है कि उसने श्रीधर मूर्ति नामक व्यक्ति को निशाना बनाने के लिए मुम्बई से एरिक डिसूजा नामक व्यक्ति को काम पर रखा था।

एम3 गैंग

श्यामकिशोर गरीगापट्टी एम-3 गिरोह का षड्यंत्रकारी बन गया, जिसमें मिलिंद शेजवाल, मिलिंद सोनावणे और मिलिंद शिंदे शामिल थे, जो सभी घाटकोपर पश्चिम के भीम नगर झुग्गी-झोपड़ियों से काम करते थे।

Machine Translated by Google

गरिगापट्टी की गिरफ्तारी के बाद गिरोह बिखर गया। सरगना सुभाष सिंह ठाकुर से हाथ मिलाकर और भी गंभीर अपराध करने लगा।

Machine Translated by Google

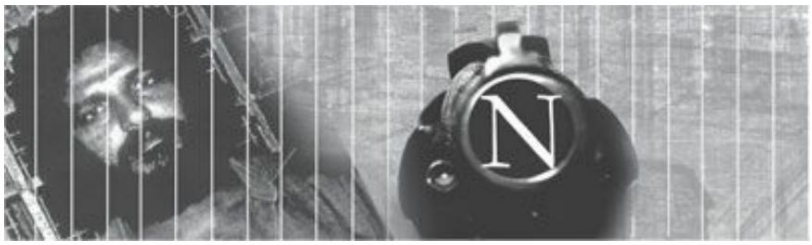

नाका बंदी

गोलीबारी के बाद शूटर आमतौर पर अपनी कार का उपयोग करने से बचते हैं, क्योंकि उन्हें पता होता है कि पुलिस के पास उनके नंबर हैं और वे जल्द ही नाकाबंदी में फंस जाएंगे।
अक्सर सहायता दल के साथ भागने के लिए कई वाहन होते हैं। लेकिन सबसे आसान तरीका है किसी प्रतीक्षारत टैक्सी या स्थानीय उपनगरीय ट्रेन में चढ़ जाना, जो कि अधिकांश शूटर पिछले कई सालों से करते आ रहे हैं।

नानकटाई

वरिष्ठ कांस्टेबल इब्राहिम कासकर उस समय बॉम्बे पुलिस की पठान शाखा में बहुत प्रभावशाली थे, जो अब कुलीन अपराध शाखा है। वह डोंगरी और आस-पास के इलाकों को अच्छी तरह से जानते थे।

डोंगरी के बुज़ुर्गों का कहना है कि अगर इब्राहिम कासकर को चाय के साथ नानकटाई (नमकीन कुकीज़) खाते हुए देखा जाता था, तो यह लगभग तय था कि अगले 24 घंटों में किसी की हत्या हो जाएगी। शक की सुई अक्सर दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों की ओर जाती थी।

शब्बीर और दाऊद हाथ की सफाई से असली सामान की जगह नकली सामान रखकर 'पलटी' के धंधे में माहिर थे। लेकिन उनके पास इतना पैसा भी था कि वे अपने इशारे पर हत्याएं करवाने के लिए कॉन्ट्रैक्ट किलर भी रख सकते थे।

नौ (नौ)

Machine Translated by Google

अंडरवर्ल्ड में नौ या नौ का इस्तेमाल अक्सर पुलिसवाले के लिए किया जाता है। कई अन्य नामों की तरह इस नाम की उत्पत्ति भी चाइना पेटी खेल के दौरान हुई थी।

निकल ले (गेट लॉस्ट)

"अच्छा, दिलीप भाई। बहुत दिन हो गए, जेब खर्च के लिए कुछ पैसे मिल जाएँगे?" मैनुअल डिसूजा उर्फ वकील ने पूछा। खूंखार गैंगस्टर दिलीप भुवा उर्फ दिलीप भाई ने अपनी ऊपरी जेब से 50 रुपए का नोट निकाला और वकील मैनुअल की हथेली में दबा दिया। उसने भुवा से फुसफुसाते हुए कहा , "निकल ले (दफा हो जाओ)।"

चुपचाप गायब होने के बजाय, वकील चिल्लाया, 'अशोक जोशी की जय।' मैनुअल को पता नहीं था कि भुवा अशोक जोशी गुट से अलग हो गया था, जो उत्तरी मुंबई के कंजूर मार्ग में सक्रिय एक गिरोह था और डोलास, भुवा और छह अन्य गिरोह का सफाया करने के लिए कंजूर गांव में घुस आए थे।

अगले ही पल, भुवा के सहयोगी माया डोलास द्वारा चलाई गई गोली वकील को नजदीक से लगी।

17 सितम्बर 1989 का दिन था। भुवा और डोलास द्वारा एक समय में शांत रहने वाले गांव में अंधाधुंध गोलीबारी में पांच निर्दोष लोगों की जान चली गई।

नीलेश कोकम

मुंबई में एक दर्जन से ज़्यादा हत्याओं में नामजद छोटा शकील के करीबी सहयोगी कोकम ने राजेश मोरे और बीजू बंगाली के साथ मिलकर एक ख़तरनाक गठबंधन बनाया। 20 मई 2000 को एक मुठभेड़ में वह मारा गया।

नीता नाइक

गैंगस्टर अश्विन नाइक, जिसकी पत्नी नीता बाद में नगर निगम पार्षद बनी, ने मुंबई का डॉन बनने का सपना नहीं देखा था। अश्विन विदेश में पढ़ाई करने के बाद इंजीनियर बनने की योजना बना रहा था। नीता चाहती थी कि वह मुंबई का डॉन बने।

Machine Translated by Google

सोफिया कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वह इंटीरियर डिजाइनर बन गई। लेकिन एक सामान्य जीवन के उनके सपने तब चकनाचूर हो गए जब अश्विन पर एक प्रतिद्वंद्वी गिरोह ने हमला कर दिया क्योंकि वह जाने-माने गैंगस्टर अमर नाइक का छोटा भाई था। अश्विन बच गया लेकिन उसे व्हीलचेयर पर रहना पड़ा।

लेकिन 1997 में अमर के पुलिस मुठभेड़ में मारे जाने के बाद अश्विन को गिरोह का नेतृत्व संभालने से नहीं रोका जा सका। नीता का सुखी घरेलू जीवन का सपना भी टूट गया।

अश्विन फरार था और तिहाड़ जेल में बंद होने के बाद, नीता को गिरोह की गतिविधियों का समन्वय करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस बीच, नीता शिवसेना के टिकट पर नगरपालिका पार्षद चुनी गईं। इसी दौरान उनका मुख्यमंत्री के पुलिस अंगरक्षक लक्ष्मण जीमन से प्रेम प्रसंग शुरू हुआ।

कुछ ही समय में नाइक तक उसकी पत्नी और जिमन के प्रेम-संबंध की खबर पहुंच गई।

कुछ सप्ताह बाद, 13 नवंबर 2000 को नीता की लोअर परेल स्थित उनके आवास की चौथी मंजिल के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई। विकलांग अश्विन अभी भी डॉन था।

निज़ाम कोंकणी

1980 के दशक के मध्य में निज़ामुद्दीन मोहम्मद कादरी उर्फ़ निज़ाम कोंकणी डोंगरी की तंग गलियों में कुख्यात था। लगभग उसी समय, उस समय के नौसिखिए अपराधी दाऊद इब्राहिम का नाम इलाके में कुछ छोटे-मोटे अपराधों में आया था।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, निज़ाम कोंकणी ने दो कांस्टेबलों और एक अधिकारी पर तब चाकू से हमला किया जब वे उसे उसके ठिकाने से गिरफ़्तार करने की कोशिश कर रहे थे। हवलदार मोरे की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक अन्य कांस्टेबल राणे भाग्यशाली था कि वह बच गया, लेकिन उसे चाकू के कई घाव लगे। अधिकारी घटनास्थल से भाग गया।

कुछ समय बाद निजाम भी देश छोड़कर चले गए, क्योंकि उन्हें डर था कि उन्हें फर्जी मुठभेड़ में मार दिया जाएगा।

Machine Translated by Google

निज़ाम दुबई में घुसने में कामयाब हो गया और जल्द ही दाऊद से नौकरी के लिए संपर्क किया। उसके एक समय के जूनियर ने उसे ड्राइवर की नौकरी की पेशकश की। 26 अगस्त 1998 को सहायक पुलिस आयुक्त प्रदीप सावंत के नेतृत्व वाली एक टीम ने डॉकयार्ड रोड के पास मुठभेड़ में उसे मार गिराया।

नुल्ला (नकली)

गैंगस्टर अबू सलेम एक ' नकली' है। दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों ने यह बात तब कही थी जब उसे 2005 में पुर्तगाल से निर्वासित करके बायकुला के आर्थर रोड जेल में बंद कर दिया गया था।

डी-कंपनी के शीर्ष सहयोगी तब थोड़े चिंतित हुए जब उन्होंने सलेम को जेल में रोते हुए पाया। पूछताछ के दौरान वह बार-बार टूट जाता था। डी-कंपनी को लगा कि सलेम को रोने के बजाय असली डॉन की तरह व्यवहार करना चाहिए था। गैंगस्टर से बोल्ड होने की उम्मीद की जाती थी।

अंडरवर्ल्ड हलकों में यह धारणा बन गई थी कि सलेम दबाव में आकर टूट सकता है और विभिन्न गिरोहों के बारे में जानकारी उजागर कर सकता है।

लेकिन गैंगस्टर ने बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्रियों और अभिनेताओं के साथ अपने संबंधों के बारे में रोचक जानकारियां देकर इस मुश्किल घड़ी से बच निकला। वह कुछ वकीलों के साथ घनिष्ठ हो गया, जिनमें एक महिला वकील भी शामिल थी।

सलेम का मामला कोई अकेला मामला नहीं है। फईम मचमच या छोटा शकील जैसे कई अन्य शीर्ष अपराधी भी हैं, जिनका कभी क्राइम ब्रांच के अधिकारियों की टीम से सामना नहीं हुआ।

नंबर चढ़ना (सिम गेम और मंचेकर)

संतोष नाइक उर्फ महाराज ने अपनी पत्नी अवंतिका से फुसफुसाते हुए कहा, "मैं दादा से मिला हूं। मैं कल घर लौटूंगा।"

सहायक पुलिस निरीक्षक रविन्द्र आंग्रे के ये शब्द सुनकर वे घबरा गए। पूर्व बैंक अधिकारी समानांतर लाइन पर नाइक की बातचीत सुन रहे थे।

महाराज को इस बात का अंदाजा नहीं था कि ये चंद शब्द उन्हें सबसे बड़ी सफलता की ओर ले जा सकते हैं।

Machine Translated by Google

हाल के वर्षों में सनसनीखेज तलाशी अभियान और मुठभेड़ें। लक्ष्य: खूंखार गैंगस्टर सुरेश मांचेकर।

2002 में आंग्रे को ठाणे के एंटी एक्सटॉर्शन सेल में नियुक्त किए जाने से पहले ही मांचेकर ने आतंक का राज कायम कर दिया था। परेल में बिल्डर महेंद्र खानविलकर और कल्याण में डॉ. दीपक शेट्टी की दिनदहाड़े हत्या ने जिले के व्यापारिक समुदाय में भय फैला दिया था।

सितंबर 2002 में ठाणे में एक मुठभेड़ में मांचेकर के सहयोगी प्रकेश उटेकर को मार गिराया गया था। लेकिन इस हत्या से गिरोह के कामकाज पर कोई असर नहीं पड़ा और न ही जिले में बिल्डरों और व्यापारियों के लिए खतरा कम हुआ।

रिश्तेदारों और सहयोगियों के टेलीफोन नंबरों को आपस में जोड़ने के बाद, पुलिस इस निष्कर्ष पर पहुंची कि दिलीप सोनावणे उन्हें मांचेकर तक पहुंचा सकता है। महाराज, जिसे भाऊ के नाम से भी जाना जाता है , 2002 के आखिर में पहले से ही लुकआउट लिस्ट में था और उसके नंबर पर भी नज़र रखी जा रही थी।

एक स्पष्ट पैटर्न सामने आया था। लगभग सभी फोन कॉल महाराज तक ही सीमित थे और उनके माध्यम से ही भुगतान किया गया था।

आंग्रे का काम तब और भी मुश्किल हो गया जब उनके मुखबिरों ने उन्हें बताया कि उन्होंने महाराज को कभी नहीं देखा। उस रहस्यमयी व्यक्ति का कोई आपराधिक इतिहास नहीं था।

मूक टेलीफोन लाइनों पर बातचीत और धमकियां रिकॉर्ड होती रहीं, लेकिन पुलिस को मांचेकर या उसके रहस्यमयी दाहिने हाथ महाराज तक पहुंचाने के लिए कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था।

आंग्रे कहते हैं, ''महाराज बीपीएल नंबर का इस्तेमाल कर रहे थे, जिसकी शुरुआत 09823 से होती थी। यह फिर से बुरी खबर है, क्योंकि बीपीएल का गोवा और महाराष्ट्र के लिए एक ही कोड था। जांच की धार धीमी पड़ गई।''

जांचकर्ताओं ने रिकॉर्ड की गई बातचीत के प्रिंटआउट का विस्तृत अध्ययन करने के बाद पाया कि सभी कॉल बहुत संक्षिप्त थे और गोवा में विभिन्न स्थानों से किए गए थे।

मनचेकर ने सुनिश्चित किया था कि कोई भी सिम कार्ड दो बार इस्तेमाल न हो। हर बार यह एक नया प्रीपेड नंबर होता था जिससे बातचीत रिकॉर्ड करना असंभव हो जाता था।

Machine Translated by Google

किसी भी नंबर को कम समय में निगरानी में रखना संभव है। हर हफ़्ते एक नया नंबर आता था और बार-बार उसका पता खो जाता था।

बाद में पहेली अपनी जगह पर आ गई। मांचेकर को टैपिंग सिस्टम के बारे में पता था और उन्होंने सावधानी बरती थी।

मांचेकर ने बेलगाम से कभी फोन नहीं किया, जहां वह छिपे हुए थे।
वह महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा पर स्थित इस शहर में अपने घर से सप्ताहांत में गोवा तक कार से जाते थे ताकि फोन कर सकें और अपने सहयोगियों से संपर्क कर सकें।

मास्टरमाइंड ने यह सुनिश्चित किया कि गोवा तक की 110 किलोमीटर की यात्रा के दौरान उसका मोबाइल फोन बंद रहे। उसे पता था कि यात्रा के दौरान फोन का इस्तेमाल करने से उसकी लोकेशन का पता चल सकता था और पुलिस को उसे पकड़ने में मदद मिल सकती थी।

15 अगस्त 2003 को कोल्हापुर में मांचेकर की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके बाद आंग्रे के आदमियों ने महाराज को गिरफ्तार कर लिया।

नंबर छोडना

गैंगस्टर छोटा राजन के खास गुर्गे नितिन सावंत ने 2004 में ठाणे के बिल्डरों के बीच आतंक फैला दिया था। उसने बिल्डरों से संरक्षण राशि के रूप में भारी रकम वसूली थी।

बेहद खूंखार सावंत राजन के करीबी लोगों में से एक था, जिसमें गुरु साटम, विनोद मटकर और रोहित वर्मा जैसे शूटर शामिल थे। 2000 में वर्मा की मौत के बाद वह गिरोह में ऊपर चढ़ता चला गया था।

एनकाउंटर स्पेशलिस्ट रविंद्र आंग्रे ने सावंत को जाल में फंसाने की योजना बनाई। खुद को बिल्डर बताकर उसने एक फर्जी शख्स के जरिए सावंत को अपना मोबाइल नंबर दे दिया।

चाल काम कर गई। अगले कुछ दिनों में उसे सावंत के फोन आने लगे। आंग्रे ने डरने का नाटक किया, लेकिन वादा किया कि जब उसकी प्रॉपर्टी बिक जाएगी तो वह पैसे चुका देगा।

आंग्रे ने पहली किस्त श्रीलंका भेजी, जहां सावंत छिपा हुआ था।
सावंत शेष रकम लेने के लिए मुंबई चले गए और 16 सितम्बर 2004 को उन्हें गोली मार दी गई।

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

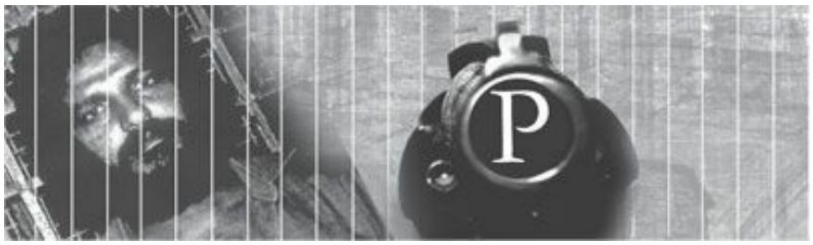

पांच (पांच)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में 'पांच' का मतलब होता है जहाज। यह शब्द 1970 के दशक की शुरुआत में गढ़ा गया था, जब तस्करी अंडरवर्ल्ड की मुख्य गतिविधियों में से एक थी।
बोस्की वस्त्र, सोना, घड़ियाँ जैसी वस्तुओं की तस्करी समुद्र के रास्ते की जाती थी।

पचीस (25)

चाइना पेटी का एक अन्य उत्पाद पचीस , पुलिस कांस्टेबल को दर्शाता है।

पायल

हत्या या डकैती के बाद आप क्या करते हैं? आप भागते हैं। (जिसका हिंदी में मतलब है चलना) का मतलब है 'घटना के बाद गायब हो जाना'। अंडरवर्ल्ड में ' चलपईदल हो जा ' एक अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला मुहावरा है।

पाकमोडिया स्ट्रीट (दाऊद का ठिकाना)

पाकमोडिया स्ट्रीट पर कमरा नंबर 33, लगभग एक दशक तक दाऊद इब्राहिम का ठिकाना रहा था, जब उसे 1975 में मस्जिद बंदर के पास मांडवी में एक बैंक लूटने के सिलसिले में पहली बार गिरफ्तार किया गया था।

अगले कुछ वर्षों तक दाऊद ने पहली मंजिल के गंदे कमरे का इस्तेमाल किया।

Machine Translated by Google

अपनी अंडरवर्ल्ड गतिविधियों को अंजाम देने के लिए वह एक ढहती हुई पुरानी इमारत में घुस गया। उसका दूसरा सबसे बड़ा सहयोगी छोटा शकील बगल के टेमकर स्ट्रीट में अपने कार्यालय 'शम्स' से काम करता था।

गिरोह की बैठक पाकमोडिया स्ट्रीट चौराहे पर होती थी। उन दिनों ज्यादातर गतिविधियां तस्करी से जुड़ी होती थीं।

सलीम यामाहा याद करते हुए कहते हैं कि गिरोह जावा, येजदी, एनफील्ड और यामाहा बाइकों पर इलाके में घूमता था। सलीम यामाहा को यह उपनाम इसलिए मिला क्योंकि उसने दाऊद को अपनी यामाहा 350 बाइक पर घुमाया था।

12 फरवरी, 1982 को दाऊद के बड़े भाई शब्बीर की प्रतिद्वंद्वी पठान अमीरजादा और उसके साथियों द्वारा गोली मारकर हत्या कर दिए जाने के बाद पाकमोडिया हाउस अंडरवर्ल्ड गतिविधियों का केंद्र बन गया। दाऊद गिरोह ने पठान को खत्म करने की कसम खाई और रणनीतियों पर चर्चा करने के लिए यहीं मिले।

पामग्रोव पार्टी

वरदराजन मुदलियार पुलिस की सख्ती की मार झेल रहे थे। रिश्वत और धमकी के तरीके नाकाम हो चुके थे।

हताश वरदाभाई ने अंडरवर्ल्ड-पुलिस गठजोड़ को उजागर करने के लिए वीडियो कैसेट जारी करने की योजना बनाई, जिसमें उन्हें करीब से दिखाया गया हो।

12 दिसंबर 1984 को जुहू स्थित होटल पामग्रोव में एक पार्टी आयोजित की गई थी।

समारोह के दौरान ली गई वीडियो रिकॉर्डिंग में एक पूर्व कोरोनर, सरकारी अस्पतालों से जुड़े डॉक्टर, दो सेवानिवृत्त मजिस्ट्रेट और पुलिसकर्मी जैसे प्रतिष्ठित नागरिक नई दिल्ली के एक अपराधी के साथ मेलजोल करते हुए दिखाई दिए।

अधिकांश आमंत्रित लोग अपने परिवारों के साथ आये थे, तथा उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि पार्टी का वीडियो बनाया जा रहा है।

चार महीने बाद, 15 अप्रैल 1985 को, अंडरवर्ल्ड ने गुमनाम रूप से पार्टी की वीडियो रिकॉर्डिंग भेजनी शुरू कर दी।

वरदाभाई वापसी के लिए तैयारी कर रहे थे।

Machine Translated by Google

पल्टी (महंगे सामान को नकली से बदलें)

दाऊद इब्राहिम की गरीबी से अमीरी की कहानी असली सामान को नकली सामान से बदलने के उसके हुनर से शुरू हुई, यह सब हाथ की सफाई या अंडरवर्ल्ड की भाषा में ''पल्टी'' के साथ होता था। 1970 के दशक में, इसे तस्कर का बुनियादी हुनर माना जाता था।

दाऊद मुसाफिरखाना के व्यस्त बाजार में ग्राहकों को ठगता था। पीड़ित को इस बात का अंदाजा भी नहीं होता कि चालाक युवक उन्हें बातों में उलझाकर महंगा सामान बदल देता था। फिर, खरीदार से कहा जाता था कि वह मॉल में पैकेज न खोले क्योंकि पुलिस वाले वहां मौजूद हैं।

लेकिन पल्टी का कारोबार दाऊद का ध्यान ज्यादा दिनों तक नहीं खींच सका और वह छोटे-मोटे तस्करों से चुराए गए विदेशी सामान को बेचने लगा।

पंच (प्रत्यक्षदर्शी)

दाऊद इब्राहिम का 'दूसरी दुनिया' से पहला संपर्क, जो बाद में उसका अपना बन गया, पुलिस के लिए एक किराये के 'पंच' या प्रत्यक्षदर्शी के रूप में हुआ था।

पंच के तौर पर वे शुरू में पुलिस के करीब हो गए और बाद में उन अपराधियों से मिलने के लिए दूसरी तरफ चले गए जिनके खिलाफ वे गवाही दे रहे थे। आखिरकार, 1970 के दशक के आखिर में उन्होंने बाद वाले की संगति को चुना।

पैंट पीस और धागा

'पैंट का टुकड़ा और धागा मिल गया क्या?' सुरेश मांचेकर के दूसरे नंबर के अधिकारी संतोष नाइक उर्फ महाराज ने शूटर किसन शिंदे उर्फ मैनेजर से पूछा।

'पैंट पीस' का मतलब हैंडगन और 'थ्रेड' का मतलब गोलियां था। मांचेकर गिरोह के सदस्य बिल्डर महेंद्र खानविलकर की हत्या की गुप्त रूप से साजिश रच रहे थे। खानविलकर की उनके पहली मंजिल के कार्यालय में गोली मारकर हत्या कर दी गई।

Machine Translated by Google

22 मार्च 2002 को परेल में दिन के उजाले में।

शुरू में अंडरवर्ल्ड की शब्दावली मज़ेदार लगी और अपराध शाखा के अधिकारियों को पहेली को समझने में थोड़ा समय लगा

कागज (भक्ति इंक से नकली नोट)।

भुज पुलिस को उस समय आश्चर्य नहीं हुआ जब पाकिस्तानी तस्कर मोहम्मद हुसैन ने कबूल किया कि वह मुंद्रा बंदरगाह से आफताब भटकी के पास आया था।

अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम का करीबी सहयोगी, भटकी जाली नोटों या 'कागज' के कारोबार में माहिर है, जो वर्षों से देश में आ रहे हैं।

भटकी भी डी कंपनी के मुख्य संचालकों में से एक है। वह जो नकली मुद्रा सप्लाई करता है, उसका ज़्यादातर हिस्सा मुंबई और गुजरात में अंडरवर्ल्ड के ऑपरेशनों को फंड करने में इस्तेमाल होता है।

उत्तरी कर्नाटक के भटकल के रहने के कारण उन्हें 'भटकी' कहा जाता है।

परेल गैंग की स्टीम (रेलवे के आधुनिकीकरण के समय साटम की स्टीम कैसे खत्म हो गई)।

परेल माफिया का विकास भाप से संचालित था, क्योंकि उनके लिए यह सब पास के रेलवे वर्कशॉप में मरम्मत के लिए रखे गए पुराने भाप इंजनों से चुराए गए तांबे और पीतल के छोटे टुकड़ों से शुरू हुआ था।

यह बुरा पैसा नहीं था। स्क्रैप पीतल आठ रुपये प्रति किलो और तांबा लगभग दस रुपये प्रति किलो बिकता था। 1970 के दशक की शुरुआत में लुटेरों के गिरोह लगभग 2000 रुपये प्रतिदिन कमा लेते थे।

1975 तक, कार्यशाला में तांबे और पीतल का उपयोग बहुत बढ़ गया। धातु का 'माल गिराना' या गिराना भी उसी अनुपात में बढ़ गया, जिससे गिरोह को हर दिन 30,000 रुपये से लेकर 1.5 लाख रुपये तक की कमाई होती थी। वे एक्सल बॉक्स से तांबे के बड़े-बड़े टुकड़े - जिनका वजन लगभग 112 किलोग्राम होता था - ढोते थे और उन्हें कार्यशाला से बाहर ले जाते थे। रेलवे पुलिस के गार्ड दूसरी तरफ देखना पसंद करते थे; उनके

Machine Translated by Google

लूट का हिस्सा सुनिश्चित किया गया।

कार्यशाला से सामान साइकिल और टैक्सियों द्वारा ले जाया जाता था। सामान के लिए कम से कम चार पक्के खरीदार थे। लेकिन जब सामान की मात्रा बढ़ गई, तो स्थानीय गुंडे पांड्या पावले और दाहिना हाथ गुरु साटम ने हिस्सा ले लिया।

जल्द ही, प्रतिद्वंद्वी पापा नायर और उनके छोटे भाई बुडग्या ने पाई के हिस्से के लिए पावले के साथ तलवारें भांजी। लड़ाई भयंकर हो गई - पावले और गुरु साटम ने नायर और बुडग्या को मार डाला। थोड़ी देर बाद, साटम ने 1988 में परेल में कोम्बडी गली के पास पावले को चाकू घोंपकर मार डाला।

साटम तांबे के कारोबार में सरगना बन सकते थे, लेकिन भाप इंजन बंद हो गए और उनकी किस्मत पलट गई। उन्होंने अपना ठिकाना पास के करदार गैरेज में बना लिया।

पार्टी से मीटिंग कर लो (उसे मार डालो)

छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी राजू नलावडे को गिरोह का 'हैंडलर' नियुक्त किया गया था, जो कि अंडरवर्ल्ड में समन्वयक के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है, क्योंकि 1992 के मध्य में भांडुप में शिवसेना पार्षद किम बहादुर थापा की हत्या के सिलसिले में उसे गिरफ्तार कर लिया गया था और हिरासत में लिया गया था।

नलवाडे ठाणे जिले के उल्हासनगर में एक नगर निगम पार्षद की हत्या करना चाहता था। यह काम हाई-प्रोफाइल हत्यारे बालू डोकरे और उसके साथियों को सौंपा गया था।
पुरुष.

डोकरे के नेतृत्व में एक हिट दस्ते को लक्ष्य की पहचान करने के लिए उल्हासनगर भेजा गया।

किसी भी गोलीबारी की सफलता दर्शकों द्वारा किए गए होमवर्क पर निर्भर करती है।

नलावडे ने डोकरे से कहा, "भाई पार्टी से मीटिंग कर लो", जिसका अंडरवर्ल्ड की भाषा में मतलब था, 'उसे मार दो।'

स्थानीय पार्षद गोपाल राजवानी की 26 जनवरी 1998 को एक स्थानीय अदालत के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। लेकिन हमलावरों को जल्द ही एहसास हो गया कि उन्होंने गलत आदमी को मार दिया है।

राजन क्रोधित हो गया। लेकिन डोकरे और नलावडे उसके सबसे भरोसेमंद लोगों में से थे।

Machine Translated by Google

लेफ्टिनेंट थे और वह उन्हें दंडित नहीं कर सकते थे।

बाद में डॉन को पता चला कि डोकरे और नलावडे को राजवानी की हत्या के लिए गुमराह किया गया था। इस मुखबिर के खिलाफ मौत का वारंट जारी किया गया।

इस बीच, राजन ने विशाल धाकन उर्फ विक्की को हत्या करने का आदेश दिया। लेकिन उसे और तीन अन्य को दो एके 47 राइफलों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया, जो लक्ष्य को खत्म करने के लिए दी गई थीं।

पौ टकला

दाऊद इब्राहिम के दूसरे सबसे बड़े शागिर्द शकील मोइनुद्दीन बाबू शेख को उसके प्रतिद्वंद्वियों के बीच 'पौ टकला' के नाम से भी जाना जाता है । यह नाम, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'चौथाई गंजा', उसके पतले होते बालों के कारण पड़ा।

पेमेंट कर देना (कॉन्ट्रैक्ट किलिंग)

25 नवंबर, 2002. रविवार की दोपहर थी और कैदी जेल की कोठरी में क्रिकेट मैच के बाद सफाई में व्यस्त थे. छोटा राजन का मुख्य साजिशकर्ता ओम प्रकाश सिंह भी नासिक जेल के शौचालय में था.

छह फीट से ज़्यादा लंबे सिंह को छह लोगों ने ज़मीन पर पटक दिया और फिर गला घोंटकर मार डाला। छोटा राजन गिरोह के तेरह सदस्यों ने, जिन्हें अचानक मुंबई की आर्थर रोड जेल से नासिक स्थानांतरित कर दिया गया था, उनकी हत्या कर दी थी।

गिरोह के सरगना ने अपने सहयोगी डीके राव को निर्देश दिया था कि ''पार्टी को पेमेंट कर दो।'' गिरोह के सदस्यों के बीच ओपी उर्फ विल्सन की लोकप्रियता ने राजन को असुरक्षित महसूस कराया क्योंकि इससे उसकी स्थिति को चुनौती मिल रही थी।

सिंह की पत्नी मीनाक्षी ने बाद में कहा, "यह छोटा राजन गिरोह के सदस्यों द्वारा की गई एक सुनियोजित हत्या है।"

Machine Translated by Google

पीला (स्वर्ण)

मुंबई के अंडरवर्ल्ड में मिली छोटी-छोटी सफलताओं से प्रेरित होकर दाऊद ने पीला (सोना) या 116 की तस्करी करना शुरू कर दिया, जो स्विस गोल्ड बिस्किट का कोड नाम है। उसने इस धंधे के गुर अपने पूर्व गुरु हाजीभाई और 1970 के दशक के अंत में दमन के तस्कर सुकुर नारायण भाकिया से सीखे थे।

1983 तक, दक्षिण मुंबई के पाकमोडिया स्ट्रीट का यह युवक दुबई से सोने की तस्करी या पीला या टुकड़ा व्यापार में एक स्थापित नाम बन चुका था।
सेंट्रल मुंबई के शुक्लाजी स्ट्रीट के आसपास के मारवाड़ी व्यापारी तस्करी के सामान के सबसे बड़े खरीदारों में से एक थे। बदले में, वे शहर भर के सर्वव्यापी ज्वैलर्स को पीली धातु की आपूर्ति करते थे।

पीले या टुकड़े से होने वाले मुनाफे ने दाऊद को नकली मुद्रा और बाद में रियल एस्टेट में आगे बढ़ने में मदद की।

पहलवान

यह गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम ही था जिसने पहली बार मुंबई के अंडरवर्ल्ड में 'पहलवान' संस्कृति की शुरुआत की थी।

यहां तक कि अंडरस्टडी के तौर पर भी दाऊद को हमेशा अंगरक्षकों के साथ देखा जाता था। खालिद पहलवान, अंजुम पहलवान, शेर सिंह, लंबू शकील-सभी 100 किलो वजनी और छह फीट से ज्यादा लंबे-अपने दुश्मनों को डराने के लिए हमेशा उसके साथ रहते थे।

शुरू में तो यह तरकीब काम कर गई। भारी भरकम सुरक्षाकर्मियों को देखकर उनके प्रतिद्वंद्वियों की रूह कांप उठी। जल्द ही प्रतिद्वंद्वियों ने भी सुरक्षाकर्मियों को काम पर रखना शुरू कर दिया।

इदरीस पहलवान, शिवाजी और अब्बू कालिया उर्फ बॉक्सर जैसे बॉडीबिल्डर प्रतिद्वंद्वी समूहों के साथ देखे गए।

जबकि कुछ अंगरक्षक स्थानीय व्यायामशालाओं से थे, उनमें से अधिकांश उत्तर भारत के अखाड़ों से थे और बेहतर संभावनाओं के लिए शहर में आकर बस गए थे।

Machine Translated by Google

गिरोह के सरगना इन अंगरक्षकों के रख-रखाव पर भारी रकम खर्च करते थे। उन्हें पिस्ता, बादाम और चरस (भांग) का आहार दिया जाता था , जिसे अक्सर जिम में लंबे वर्कआउट के दौरान खाया जाता था।

हालांकि यह चाल कुछ समय तक तो कारगर रही, लेकिन जल्द ही इन विशालकाय लोगों को 'शो पीस' का नाम दे दिया गया। समय के साथ यह देखा गया कि ये लोग शायद ही कभी किसी लड़ाई में हिस्सा लेते थे।

पेटी

अंडरवर्ल्ड की भाषा में पेटी का मतलब एक लाख होता है। यह नाम छोटे-मोटे व्यापारी अपनी नकदी जमा करने वाले छोटे-मोटे कैश बॉक्स से लिया गया है।

अहमद भाई कहते हैं, "भाई बोले तो बहुत बाहरी चीज़ थी। दिन में 'पेटी' कामनेका और रात तक खर्चे कर डालने का ना भाई'। (वह खूंखार था।
कभी-कभी वह एक दिन में लगभग 1 लाख रुपये कमा लेते थे और रात में उसे खर्च कर देते थे।

1970 के दशक में पेटी का बहुत महत्व था। लेकिन तब अंडरवर्ल्ड को एहसास हुआ कि वे दागी व्यापारियों के लिए काम करके पैसा कमा सकते हैं।

बटला और उसके गुंडों को छोटे-मोटे व्यापारियों, तस्करों या हवाला संचालकों ने अपनी बकाया रकम वसूलने के लिए काम पर रखा। उनमें से कई को बॉडीगार्ड के तौर पर इस्तेमाल किया गया और कुछ को स्थानीय गुंडे भी बना दिया गया।

महिलाओं के प्रति कमज़ोरी आम बात थी और अक्सर हत्याओं का कारण बनती थी। मुंबई के मुख्य रेड-लाइट इलाकों कमाठीपुरा और फलकलैंड में डांसिंग बार और कोठों में रातें घिसटती रहती थीं।

चाकूबाजी और सड़क पर लड़ाई-झगड़े आम बात थी। बटला अपनी चपलता और लड़ाई के कौशल के कारण बढ़त बनाए रखता था। 'आरे ये तो अपना धंधा है' , वह अक्सर अपने साथियों को याद दिलाता था।

फिलिप पंडारे

डॉन फिलिप दयानंद पंडारे, या अन्ना के रूप में उन्हें जाना जाता था, में विशेषज्ञता थी

Machine Translated by Google

1970 के दशक के अंत में औद्योगिक विवादों को निपटाने में उनकी अहम भूमिका थी और 1980 के दशक के मध्य तक उनकी काफी मांग थी। शहर भर के औद्योगिक क्षेत्रों में कई कंपनियों ने ट्रेड यूनियनों को चुप कराने के लिए उनका इस्तेमाल किया। दूसरी ओर, यूनियनों ने उनका इस्तेमाल उन लोगों के खिलाफ किया जिन्होंने प्रबंधन के साथ हाथ मिला लिया था।

पंडारे ने कुर्ला के पास एक ऑटोमोटिव मैन्युफैक्चरिंग यूनिट में मशीनिस्ट के तौर पर काम शुरू किया था। उनकी मुश्किलें तब शुरू हुईं जब उनका राजन नायर उर्फ बड़ा राजन से झगड़ा हुआ, जिसे उन्होंने 1970 के दशक के आखिर में ठाणे के पास एक लोकल ट्रेन में चाकू मार दिया।

पंडारे ने अपना ठिकाना विक्रोली और फिर कांजुर मार्ग में बनाया और फिर यशवंत जाधव से हाथ मिला लिया। साथ मिलकर वे घाटकोपर-चेंबूर इलाकों में एक ताकत बन गए।

इस बदमाश के साथ जल्द ही डोमनिक, बड़ा तांबी, अशोक कुंटे, कमलाकर अडांगले, संजीव भोसले और येडा बाला (उसका छोटा भाई) भी शामिल हो गए। 26 सितंबर, 1990 को एक पूर्व सहयोगी ने उसकी हत्या कर दी।

फ़ोन दादा

फ़ोन दादा एक सहयोगी होता है जो फ़ोन का इस्तेमाल करके लक्ष्य को धमकाता है। यह ज़्यादातर एक छोटा-मोटा धोखेबाज़ या गुंडा होता है जिसे अंडरवर्ल्ड ऑपरेशन में बहुत कम अनुभव के साथ बड़ी लीग में शामिल किया जाता है। दाऊद इब्राहिम के गिरोह के सदस्य फ़ईम मचमच को अक्सर फ़ोन दादा के रूप में जाना जाता है। स्थानीय विवाहों के दौरान एक कैमरा सहायक से, उसने अंडरवर्ल्ड में बड़ा मुकाम हासिल किया।

पोटला (अपहरण और हत्या)

दाऊद इब्राहिम के खास गुर्गे इरफान गोगा का गायब होना मुंबई के अंडरवर्ल्ड में सबसे बड़े रहस्यों में से एक है। लेकिन गैंगस्टरों के बीच 'पोटला' या बंडलिंग कोई असामान्य बात नहीं है।

गोगा, जिसे भगोड़े गैंगस्टर अबू सलेम का करीबी माना जाता है, 9 नवंबर 1998 को दुबई से रहस्यमय परिस्थितियों में गायब हो गया था।

Machine Translated by Google

वह दाऊद के भाई अनीस - जो एक अज्ञात पाकिस्तानी नागरिक है - के साथ घूमने गया और फिर कभी वापस नहीं लौटा।

जिस कार में गोगा और अनीस यात्रा कर रहे थे, वह दुबई के एक सुदूर समुद्र तट पर छोड़ी हुई पाई गई। हालाँकि, जाँचकर्ताओं को कोई सुराग नहीं मिला।

अंदरूनी सूत्रों ने खुलासा किया कि गोगा की हत्या कर दी गई थी और उसके शव को शोएबभाई के आलीशान बंगले के नीचे दफना दिया गया था। बाद में पाकिस्तान में जेल में सजा काटते समय उन्हें जहर दे दिया गया था।

दुबई पुलिस ने गोगा की पत्नी शैला की शिकायत के बाद 14 नवंबर 1998 को अनीस और 28 अन्य लोगों को हिरासत में लिया था। यह मामला आज तक बंद नहीं हो पाया है।

यह संदेह है कि काठमांडू में नेपाली सांसद मिर्जा दिलशाद बेग की हत्या में कथित संलिप्तता के लिए गोगा का अपहरण कर उनकी हत्या पाकिस्तानी इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) एजेंट के इशारे पर की गई थी।

37 वर्षीय गोगा ने जाहिर तौर पर दाऊद इब्राहिम को धोखा दिया था और छोटा राजन और बबलू श्रीवास्तव के प्रति अपनी वफादारी बदल ली थी। गोगा के पोटला से पहले, गैंगस्टर का नाम आजमगढ़ और मुंबई में एक दर्जन से अधिक मामलों में दर्ज था और वह एक दशक से भी अधिक समय तक पुलिस के जाल से बचता रहा।

पायलट

एक बेहतरीन ड्राइवर या सवार को अंडरवर्ल्ड में 'पायलट' के नाम से जाना जाता है। अच्छे ड्राइवर गोलीबारी के बाद कई साहसी भागने की कुंजी रखते हैं।

पोपट (शिकार)

पोपट या तोता शिकार को दर्शाता है। जब कोई गैंगस्टर पूछता है कि 'पोपट बाहर आया क्या', तो वह वास्तव में पूछ रहा होता है कि क्या शिकार कार्यालय या निवास से बाहर निकल गया है?

Machine Translated by Google

प्रिया राजपूत

चंद्रकला धनसिंह राजपूत के रूप में जन्मी प्रिया ने अपराधियों के एक गिरोह का नेतृत्व किया और 2002 में घाटकोपर स्थित मोनिका बार पर गोलीबारी की।

प्रिया ने छोटा राजन के मुख्य सहयोगी अजय महादिक उर्फ प्रिंस के करीब आने से पहले एक टेलीफोन ऑपरेटर के रूप में काम करना शुरू किया था। वह जल्द ही प्रकाश पांडे उर्फ बंटी पांडे, अनिल सावंत और एड्रू जैसे अन्य गैंगस्टरों के संपर्क में आ गई।

प्रिया ने बैंकॉक में बंटी पांडे के साथ समय बिताया। 2002 में जब वह मुंबई लौटी तो क्राइम ब्रांच के अधिकारियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया।

पुट्टा (मोनिका बेदी का मल्टीपल पासपोर्ट)

गैंगस्टर अबू सलेम की प्रेमिका मोनिका बेदी को 2005 में पुर्तगाल से निर्वासित किए जाने के तुरंत बाद रिहा किया जा सकता था। लेकिन यह 'पुट्टा' था जिसके लिए उस पर मुकदमा चलाया जा रहा था, हालांकि वह अब जमानत पर बाहर है।

मोनिका का पहला वास्तविक पासपोर्ट (B0195737) 10 अगस्त 1999 को मुंबई में जारी किया गया था। उनकी जन्मतिथि 18 जनवरी 1975, होशियारपुर बताई गई थी।

लेकिन मोनिका ने जल्द ही भगोड़े गैंगस्टर अबू सलेम के संपर्क में आने के बाद एक नए 'पुट्टा' के लिए आवेदन किया। उसके अगले पासपोर्ट में उसका नाम फौजिया उस्मान और जन्मतिथि 10 सितंबर, 1976 दर्ज थी। इस बार यह 29 जून, 2001 को भोपाल से जारी किया गया था।

बेदी ने अगली बार पहचान बदली और अपना नाम सना मलिक कमाल (बी5802508) रख लिया, जिसका पासपोर्ट 6 अगस्त 2001 को आंध्र प्रदेश के कुरनूल से जारी हुआ था।

इसके बाद, कुरनूल में उसे पुनः जारी किए गए पासपोर्ट में उसका नाम बदलकर नेहा आसिफ जाफरी कर दिया गया।

Machine Translated by Google

कुर्बानी (बलिदान)

कुर्बानी, डी कंपनी का पर्यायवाची शब्द है। इसका इस्तेमाल अक्सर शतरंज की चाल के लिए किया जाता है, जब बढ़त हासिल करने के लिए फ्रंटलाइन शूटर की बलि दी जाती है।
यह गिरोह युद्ध जीतने के लिए लड़ाई हारने को तैयार है।

रफीक डब्बावाला (टिफिन बॉय)

मोहम्मद शेख उर्फ हरीश ठाकुर उर्फ रफीक डब्बावाला ने घाटकोपर में संघानी एस्टेट के पास गंगावाड़ी से 'टिफिन बॉय' के रूप में शुरुआत की।

जोगेश्वरी का रहने वाला यह भूतपूर्व मोटर मैकेनिक जल्द ही जेल में बंद कैदियों और दोषियों को डब्बा या टिफिन मुहैया कराने वाला बन गया। रफीक की जबरन वसूली और हत्या की भूख कभी शांत नहीं होती थी और ऐसा लगता है कि उसने इन्हें किसी पारखी व्यक्ति के मेनू से चुना था। रफीक इन बड़ी-बड़ी पकड़ों का लुत्फ़ उठाता था।

इनमें बॉलीवुड निर्देशक राकेश रोशन का नाम भी शामिल है, जो 2001 की शुरुआत में जान से मारने की कोशिश में बच गए थे। मिल्टन प्लास्टिक के निदेशक चिरंजीव वघानी को उनकी रिहाई के लिए 5 करोड़ रुपये की फिरौती देने को कहा गया था। दूसरा मुख्य लक्ष्य बैंगलोर के व्यवसायी विनीत वंचानी थे, जिनकी रिहाई के लिए 7 करोड़ रुपये का टिकट रखा गया था। ट्रॉफी की तरह संतुलन बनाते हुए, रफीक के नाम पर 17 हत्याएं दर्ज थीं, जिनमें विक्रोली पार्कसाइट बिल्डर जैलुद्दीन शेख उर्फ जकाउल्लाह की हत्या भी शामिल थी।

इससे पहले रफीक ने घाटकोपर और आस-पास के इलाकों में छोटे-मोटे वसूली करने वाले के तौर पर काम शुरू किया था, लेकिन फिर उसकी मुलाकात शामकिशोर गरिगापति से हुई, जो सुभाष सिंह ठाकुर का करीबी सहयोगी है, जो अब मौत की सजा की सजा काट रहा है।

Machine Translated by Google

उसके तरीकों और दुस्साहस ने ठाकुर की जिज्ञासा को बढ़ा दिया और ज्यादा समय नहीं बीता कि वह हट्टा-कट्टा युवक गिरोह में शामिल हो गया।

फिर, सितंबर 1992 में, ठाकुर और गरीगपति दोनों को सनसनीखेज जेजे अस्पताल गोलीबारी के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया। रफीक को राज्य की विभिन्न जेलों में गरीगपति, ठाकुर और गिरोह के अन्य सदस्यों को घर का बना खाना उपलब्ध कराने का काम सौंपा गया था, जिससे उसे अपना सबसे स्वादिष्ट शीर्षक उर्फ 'डब्बावाला' मिला। लेकिन डब्बा व्यवसाय के अलावा, रफीक को जल्द ही अन्य "अजीब काम" दिए गए जैसे कि संरक्षण राशि एकत्र करना और यहां तक कि पीड़ितों को धमकाना।

1995 तक रफीक ने शूटर बनना सीख लिया था। "यह एक व्यक्ति का काम था। "उसने सारी योजना बनाई और सुनिश्चित किया कि काम योजना के अनुसार ही हो," एनकाउंटर स्पेशलिस्ट दया नायक, जो रफीक को मारने वाली टीम का सदस्य था, कांपता हुआ कहता है। "रफीक बहुत कम लोगों पर भरोसा करता था, जिससे उस पर नज़र रखना बहुत मुश्किल हो गया था," नायक कहते हैं।

रफीक ने अपना उपनाम 'हरीश ठाकुर' रख लिया और एक संभावित शिकार को बताया कि वह सुभाष सिंह ठाकुर का छोटा भाई है।

1999 तक रफीक की जबरन वसूली की मांग करोड़ों में पहुंच गई थी-लेकिन वह बहुत लालची हो चुका था। 5 जून 1999 को सांताक्रूज (पश्चिम) में आशा पारेख अस्पताल के पास उसकी हत्या कर दी गई।

Machine Translated by Google

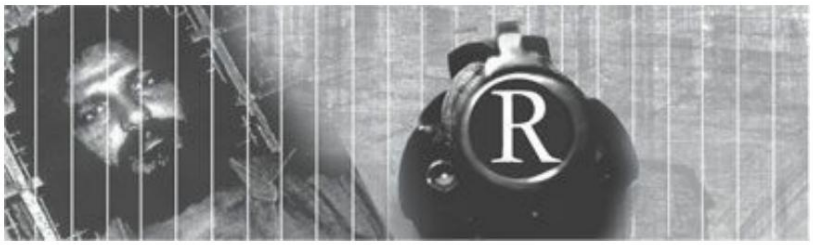

राजा (मित्र)

राजा , गैंगस्टर छोटा राजन का पसंदीदा शब्द है, जिसका प्रयोग वह अपने नए सैनिकों को खुश करने, उनकी वफादारी और विश्वास हासिल करने के लिए करता था।

संयोगवश, अधिकांश बयानबाजी कट्टर दुश्मन छोटा शकील के लिए है, जो राजन की नजर में देश के गद्दारों की सूची में दाऊद इब्राहिम के बाद दूसरे स्थान पर आता है।

"राजा, जो अपनी माँ का ना हो सका, तो वो और किसका कैसा हो सकता है" (यदि कोई व्यक्ति अपनी माँ (देश) के प्रति वफादार नहीं है तो आप उस पर कैसे भरोसा कर सकते हैं?)।

वास्तव में, 1993 के श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोटों के सात आरोपियों को राजन गिरोह के सदस्यों द्वारा मुंबई की सड़कों पर व्यवस्थित तरीके से मार डाला गया था।

छोटा राजन गिरोह में भर्ती होने वाले लोगों का ब्रेनवॉश करने की कुंजी है कथित देशभक्ति।

प्रतिद्वंद्वी दावा करते हैं कि राजन की बयानबाजी एक दिखावा है। वे कहते हैं, 'बेतागद्दार तो वो है ', उनका इशारा 1993 में डी कंपनी से राजन के भागने की ओर था।

राजन के बेटे नायर ओ.पी.

यह शनिवार की सुबह थी और नासिक जेल में असहज शांति थी।

Machine Translated by Google

कैदियों को पता था कि कुछ गैंगस्टर जेल के अंदर छोटा राजन के खास गुर्गे को खत्म करने की साजिश रच रहे हैं।

दरअसल, यह साजिश विचित्र थी। राजन के सहयोगी डीके राव और आठ अन्य को ओम प्रकाश सिंह उर्फ विल्सन की हत्या से एक दिन पहले 23 नवंबर 2002 को मुंबई की आर्थर रोड जेल से नासिक जेल ले जाया गया था।

सिंह, जिसे ओपी के नाम से भी जाना जाता है, की राव और उसके साथियों ने बाथरूम में गला घोंटकर हत्या कर दी। जेल अधिकारियों ने इसे हृदयाघात बताकर टालने की कोशिश की।

मुंबई जेल अधिकारियों ने एक खुफिया रिपोर्ट को नजरअंदाज कर दिया था जिसमें कहा गया था कि छोटा राजन के कुछ गुंडे जेल के अंदर सिंह की हत्या की साजिश रच रहे हैं।
यह चेतावनी एक महीने पहले आई थी।

हत्यारे दस्ते में शरद बारकर उर्फ बड़क्या, मंगेश परब उर्फ बाल, चंद्रकांत खोत, प्रमोद थोराट, फिरोज बशीर खान, चंदू पुजारी, निमेश शेटे और सरफिरा नेपाली शामिल थे। सभी छोटा राजन के गढ़ मुंबई के आर्थर रोड में विचाराधीन कैदी थे।

सिंह छोटा राजन गिरोह और देश में केंद्रीय खुफिया एजेंसियों के गुर्गों के बीच अहम कड़ी था। उसने मुंबई में कई अहम हत्याओं की साजिश रची थी।

छोटा राजन ने पूर्व लेफ्टिनेंट की हत्या की योजना इस डर से बनाई थी कि वह एक संभावित खतरा है जो जेल से रिहा होने के बाद उसकी स्थिति को चुनौती दे सकता है।
डॉन को यह विश्वास दिलाया गया कि उसके पूर्व सहयोगी का गिरोह में बड़ा प्रभाव है।

ओपी पहले ही एक अन्य अलगाववादी गैंगस्टर हेमंत पुजारी को अपना गिरोह बनाने में मदद करके राजन के गुस्से का शिकार हो चुका था। ऐसे संकेत थे कि वह भी अगले दो महीनों में अपनी रिहाई के बाद एक स्वतंत्र गिरोह का नेतृत्व करने की योजना बना रहा था।

इससे पहले राजन अपने आदेशों की अवहेलना करने के कारण हेमंत पुजारी को मार डालना चाहता था।
उन्होंने ओ.पी. से संपर्क कर उसे फांसी के लिए सौंपने की मांग की।

"गांडू (मूर्ख) अपनी सेना को मारता है"

Machine Translated by Google

(अपने ही आदमियों को मरवा देता है), ओपी ने एक बार अपने सहयोगी मनीष से कहा था।

इसके अलावा, राजन को इस बात की भी चिंता थी कि कहीं वह गुरु साटम, रवि पुजारी और एजाज लकड़वाला जैसे अन्य अलगाववादी गैंगस्टरों के साथ मिलकर गिरोह न बना ले।

सिंह, राजन को बबलू श्रीवास्तव के साथ संबंध स्थापित करने में मदद करने के लिए भी काफी हद तक जिम्मेदार था।

समस्या तब शुरू हुई जब बाबा बुग्गा रेड्डी उर्फ बाबा रेड्डी ने स्वयं को राजन के एक प्रमुख सहयोगी संतोष शेट्टी के साथ मादक पदार्थों के व्यापार में संलिप्त पाया।

संतोष शेट्टी दाऊद इब्राहिम की तर्ज पर काम करना चाहते थे। उनका मानना था कि गैंगस्टरों की डॉन तक आसान पहुंच नहीं होनी चाहिए और उन्हें पदानुक्रम की श्रृंखला का पालन करना चाहिए।

दूसरी ओर, ओपी ने अधिकांश लोगों को राजन से सीधे बात करने की अनुमति दी।
पैसा महत्वपूर्ण था और प्रतिबंध अधिकतर डॉन द्वारा ही लगाए जाते थे।

आर्थर रोड जेल में बंद राजन के हाई-प्रोफाइल गुर्गों ने 2000 में अपनी खर्च सीमा 70,000 रुपए प्रति माह से बढ़ाकर लगभग 1.7 लाख रुपए प्रति माह कर ली थी।

खर्चों को पूरा करने के लिए जबरन वसूली का ग्राफ बढ़ता गया। उपनगरों में बिल्डरों और होटल व्यवसायियों के साथ ओपी के संबंधों के माध्यम से भारी मात्रा में धन प्राप्त हुआ।

इस बीच शेट्टी गैंगलैंड में आगे बढ़ रहे थे और 2000 में रोहित वर्मा की मौत के बाद दूसरे नंबर के पद पर नजर गड़ाए हुए थे।

संतोष, जिसे राजेश मदन शर्मा के नाम से भी जाना जाता है, खूनी गोलीबारी के बाद बैंकॉक अस्पताल से राजन को भगाने में शामिल था।

खूंखार हिटमैन विनोद मटकर भी बाबा रेड्डी की तरह ओपी के करीबी माने जाते थे। बालू डोकरे भी ओपी के करिश्मे और बुद्धिमत्ता से आकर्षित थे।

इसके पीछे की वजहें भी बहुत दूर नहीं हैं। ओपी ने मुंबई में गिरोह के संचालन के लिए जरूरी रसद सहायता और पैसे मुहैया कराए। मास्टरमाइंड के पास बुद्धिमत्ता और योजना बनाने की क्षमता भी थी, जो एक नेता के लिए जरूरी गुण थे।

इन सब बातों से राजन असुरक्षित महसूस करने लगा। गुप्त रूप से बॉस को डर था कि ओपी उसका गिरोह चलाएगा और अन्य गिरोहों से गठबंधन करेगा।

Machine Translated by Google

दूसरी ओर ओ.पी. राजनीतिज्ञ बनने का सपना संजोए हुए थे। वह उनमें से कई लोगों को जानते थे और उन्हें उत्तर प्रदेश विधानसभा का टिकट मिलने का भरोसा था।

पूर्व लेफ्टिनेंट मनीष कहते हैं, ''ओपी की हत्या के साथ ही राजन का पतन शुरू हो गया। यह उसके जीवन की सबसे बड़ी भूलों में से एक थी।''

मुंबई के कई बीयर बार में ओपी का दबदबा था। संगीत और महिला डांसरों से गुलजार रहने वाले सौ से ज़्यादा बार में उनकी हिस्सेदारी थी।

सिंह एक हिंदी प्रोफेसर के बेटे थे और उन्होंने उत्तरी मुंबई के घाटकोपर में आरजे झुनझुनवाला कॉलेज से विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की थी। वह सरकारी स्वामित्व वाली जहाज निर्माता कंपनी मझगांव डॉक्स के गुणवत्ता नियंत्रण विभाग में काम करते थे।

उनके जीवन में महत्वपूर्ण मोड़ 1995 में आया, जब उनके बड़े भाई अरुण सिंह, जो प्रोफेसर थे, को अमर नाइक गिरोह के सदस्यों ने कॉलेज के बाहर इसलिए मार डाला, क्योंकि उन्होंने एक मामले में गैंगस्टरों के खिलाफ गवाही दी थी।

इस घटना ने उसकी जिंदगी बदल दी। उसने नौकरी छोड़ दी और ठाणे जिले के वसई में जमीन के कारोबार में लग गया। उसके खिलाफ जबरन वसूली के एक दर्जन से ज्यादा मामले दर्ज थे। वह जल्द ही गैंगलैंड में ऊपर चढ़ता गया और छोटा राजन गिरोह का अहम साजिशकर्ता बन गया।

राजनवाड़ी (राजन गिरोह का एक प्रभाग)

छोटा राजन के सहयोगी विक्की मल्होत्रा उर्फ विशाल विक्रांत और फ़रीद तनाशा - ये दो लोग हैं जिन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी दाऊद इब्राहिम की बेटी की शादी (2005) के दौरान उसे मारने की साज़िश रची थी और अब वे अपने ही गिरोह के दूसरे सदस्यों पर हमला करने के लिए एक साथ आए हैं। यूसुफ़ बचकाना, उनका लक्ष्य था जिसे अगस्त 2005 में आर्थर रोड जेल के अस्पताल में भर्ती कराया जाना था।

इससे पहले, दोनों ने गिरोह के एक अन्य सदस्य डीके राव पर विश्वासघात का आरोप लगाया था। जेल में राजन का मुख्य भर्तीकर्ता राव, प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर दाऊद के भाई इकबाल कासकर के साथ जेल में कंधे से कंधा मिलाता हुआ देखा गया था। राव बचकाना का गुरु भी है, यही वजह है कि उसने हस्तक्षेप किया।

Machine Translated by Google

प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर मोहम्मद इथेशम ने टिप्पणी की , 'आज कल जेल में राजनवाड़ी चल रहे हैं।' उसका मतलब था कि राजन गिरोह के भीतर विभाजन है।

मल्होत्रा के आक्रामक व्यवहार को मुम्बई अपराध शाखा द्वारा उनकी गिरफ्तारी के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है - जो एक असफल ऑपरेशन और विभिन्न कानून प्रवर्तन एजेंसियों के बीच कथित अंदरूनी कलह का परिणाम है।

मल्होत्रा और तानाशाह को 11 जुलाई 2006 को नई दिल्ली में उस समय पकड़ा गया था, जब वे पाकिस्तान या दुबई में दाऊद को घात लगाकर मारने के एक आत्मघाती मिशन पर काम कर रहे थे।

मल्होत्रा का गुस्सा पूरी तरह से बेवजह नहीं हो सकता। तानाशाह और वह दोनों नई दिल्ली, पश्चिम बंगाल और नेपाल में सक्रिय थे और उन्हें जो काम सौंपे गए थे, उनमें से कुछ केंद्रीय सरकार की खुफिया एजेंसी द्वारा सौंपे गए थे।

इस बात पर संदेह करने के कई कारण हैं कि दाऊद को मार गिराने की नाकाम साजिश भी भारतीय खुफिया एजेंसियों ने ही रची थी। मल्होत्रा और तानाशाह एक वरिष्ठ खुफिया अधिकारी के साथ थे, जब मुंबई से आए एक विशेष दस्ते ने उन्हें दिल्ली में अचानक हिरासत में ले लिया।

ऐसा लगता है कि केंद्रीय खुफिया एजेंसियों को दोनों शूटरों को गिरफ्तार करने की मुंबई अपराध शाखा की योजना के बारे में अंधेरे में रखा गया था, जो केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी की एक आम कहानी है।

राजू बटाटिया

गैंगस्टर अरुण गवली का प्रमुख सहयोगी राजू बटाटिया मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च तबके में दो चीजों के लिए जाना जाता था: दाऊद इब्राहिम के बहनोई इब्राहिम पारकर की हत्या और उसकी शरारतें।

रामा नाइक (द गॉडफादर हू ग्रूम्ड ए जेनरेशन ऑफ गैंगस्टर्स)।

अपने अंधकारमय अतीत में, मुंबई के सभी माफिया सरदारों की एक साझा विशेषता थी

Machine Translated by Google

मुंबई के मूल गॉडफादर: राम नाईक द्वारा झूला झूलाया गया।

अरुण गवली का मामला ही लें - नाइक न केवल बायकुला के बकरी अड्डा स्थित म्युनिसिपल स्कूल में उसका सीनियर था, बल्कि उसका गुरु भी था। छोटा राजन 1985 से 1988 के बीच तीन साल तक लाल वीटा चॉल में नाइक के संरक्षण में रहा था।

रामा नाइक के समय दाऊद इब्राहिम डोंगरी के पाकमोडिया स्ट्रीट का एक छोटा-मोटा गुंडा था। अमीरजादा और समद खान के नेतृत्व वाले पठान गिरोह से भिड़ने के बाद उसने नाइक की 'बाइकुला कंपनी' से मदद मांगी। रामा नाइक परिवार के एक सदस्य ने बताया कि 1981 में अमीरजादा ने सिद्धिविनायक मंदिर के पास दाऊद के भाई शब्बीर की गोली मारकर हत्या कर दी थी, जिसके बाद दाऊद चॉल में नियमित रूप से आता-जाता था।

नाइक की कहानी बायकुला की अंधेरी और धूल भरी गलियों से शुरू हुई। 1970 के दशक के आखिर से लेकर 1988 तक एक्स-लेन, चपरासी चाल, लाल वीटा चाल, पारसी चाल और दगड़ी चाल की संकरी गलियों में सबसे ज़्यादा कार्रवाई हुई। ठगी और ज़मीनी विवादों से शुरू होकर गिरोह हत्याओं तक पहुँच गए।

बायकुला के एक्स लेन के एक निवासी ने बताया, "किसी प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर के ठिकाने पर छापा मारना या उसे चाकू मारना, उस इलाके में मटका और शराब के अड्डों पर नियंत्रण करने के समान था। उन दिनों हत्याएं ज्यादा नहीं होती थीं और जोर प्रतिद्वंद्वी को डराकर उसे अधीन करने पर होता था।"

मुंबई के गैंगस्टरों में आग्नेयास्त्रों का प्रयोग आम बात हो गई थी, जब दाऊद ने समद खान की हत्या के बाद रामा नाइक, रेशम और छोटा राजन को चार रिवाल्वर सौंपे थे।

नाइक, जिसने 70 के दशक में मटका डेन ऑपरेटर के रूप में शुरुआत की थी, जल्द ही कॉन्ट्रैक्ट किलिंग का मास्टरमाइंड बन गया। हत्याओं का एक नया पैटर्न तब सामने आया जब रामा नाइक और उसके साथी अपने दुश्मनों पर घात लगाकर हमला करते और कारों में भाग जाते। 21 जुलाई, 1988 को चेंबूर में उसकी हत्या कर दी गई। दाऊद ने छोटा राजन के ज़रिए गॉडफादर की हत्या की साजिश रची थी, जिसने उसे अपना साम्राज्य खड़ा करने में मदद की थी।

राम्या बटलर

Machine Translated by Google

रमेश सुर्वे उर्फ राम्या बटलर को गोरेगांव में दिलावर अंतुले की हत्या के बाद जल्द ही शूटर के पद पर पदोन्नत कर दिया गया। मुंबई पुलिस ने उसे 1992 से 'मोस्ट वांटेड' सूची में रखा था, जब उसे आखिरी बार गिरफ्तार किया गया था। सुर्वे लगभग पांच साल तक भूमिगत रहा था जब पुलिस दस्ते ने उसे पकड़ लिया। वह और उसके गिरोह के दो अन्य सदस्य 3 मार्च, 2001 को सहायक पुलिस निरीक्षक अविनाश सावंत और भूषण बेलनेकर के नेतृत्व वाली एक टुकड़ी द्वारा मुठभेड़ में मारे गए।

रजाक कश्मीरी

छोटा राजन के प्रमुख सहयोगी रजाक कश्मीरी ने दो वर्ष से भी कम समय में अपने प्रतिद्वंद्वी छोटा शकील के सात सहयोगियों को खत्म करके दक्षिण मुंबई में उसके गढ़ पर लगभग कब्ज़ा कर लिया था।

उन्होंने डोंगरी, पायधोनी और जेजे अस्पताल में शकील का डटकर मुकाबला किया और शकील के सात साथियों को मार गिराकर अपने साथियों की हत्या का बदला लिया।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, बाद में कश्मीरी ने दक्षिण मुंबई में शकील के आदमियों पर हमले जारी रखने के लिए पाइधोनी स्थित गैंगस्टर हुसैन वस्त्रा के साथ हाथ मिला लिया।

कश्मीरी डोंगरी की गलियों में सॉफ्ट ड्रिंक बेचा करता था, तभी वह शकील के गुर्गे फिरोज कोंकणी के संपर्क में आया। बाद में दोनों को ताड़देव में एक बिल्डर को सुरक्षा देने के लिए काम पर रखा गया। बाद में उत्तरी मुंबई के विक्रोली पार्क साइट का एक और गैंगस्टर स्टेनली फर्नांडिस भी उसके साथ शामिल हो गया।

कश्मीरी 27 अक्टूबर 1998 को एक मुठभेड़ में मारा गया था।

रोटी

अपने काम में गोपनीयता और खतरे की वजह से खुफिया अधिकारी भी गुप्त कोड का इस्तेमाल करते हैं। 'रोटी' का इस्तेमाल कॉम्पैक्ट डिस्क को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिसे अक्सर कूरियर के ज़रिए भेजा जाता है। ऑपरेटिव आमतौर पर 'रोटियाँ रास्ते में हैं' जैसे संदेशों का आदान-प्रदान करते हैं। इसका वास्तव में मतलब होता है कि खेप रास्ते में है।

चूंकि सीडी चपटी और गोल होती है इसलिए इसे रोटी कहा जाता है।

Machine Translated by Google

राजजी मेहंदी

दाऊद इब्राहिम के सहयोगी माने जाने वाले रज्जी मेहंदी की 1991 में बांद्रा पूर्व में कला नगर जंक्शन पर बायकुला कंपनी के सदस्यों ने हत्या कर दी थी।

तान्या कोली, मोहन माली, गणेश भोसले, नामदेव पाटिल, विजय टंडेल और बाब्या आदिलकर ने लक्ष्य की कार को रोका और एके 47 राइफलों से गोलीबारी शुरू कर दी।
गोलीबारी में कोली घायल हो गया।

यह स्पष्ट रूप से बदला लेने के लिए की गई हत्या का मामला था।

रामपुरी (एक प्रकार का चाकू)

अंडरवर्ल्ड में रामपुरी से आग्नेयास्त्रों की ओर संक्रमण का पता 1990 के दशक के अंत में लगाया जा सकता है। पहले, इन चाकुओं का इस्तेमाल आम तौर पर दुश्मनों पर हमला करने के लिए किया जाता था।

हत्याएं कम होती थीं और पीड़ित अक्सर हमलों में बच जाते थे। धीरे-धीरे रामपुरी को खत्म कर दिया गया और उसकी जगह देशी रिवॉल्वर, कट्टा ने ले ली। कुछ साल बाद, शस्त्रागार में एके 47 असॉल्ट राइफलें भी शामिल की गईं।

रील टू रियल ('पुराना मंदिर' की कहानी में ट्विस्ट)

मोहम्मद इकबाल शेख उर्फ पुराना मंदिर। शेख ने चोरी करके अपना गुजारा किया, लेकिन एक बॉलीवुड निर्देशक ने अपनी एक फिल्म, रामसे हॉरर फिल्म, पुराना मंदिर में इस सात फुट आठ इंच के शैतानी व्यक्ति का इस्तेमाल किया, जिसे उसने अपना उपनाम भी बना लिया। 1980 के दशक में शेख ने बॉडीबिल्डर हेमंत बिरजे के साथ अभिनय किया था, जो एक हिट फिल्म थी। अंडरवर्ल्ड में शेख की ख्याति भी उतनी ही थी।

अफ़सोस, शेख़ बॉलीवुड की स्क्रिप्ट और हक़ीकत में फ़र्क नहीं कर पाया। कहानी यह है कि 4 अप्रैल, 2001 को चेंबूर में स्वास्तिक मिल के पास असिस्टेंट कमिश्नर ऑफ़ पुलिस रामकानत पडवल के नेतृत्व में पुलिस दस्ते के साथ खूनी मुठभेड़ में उसे गोली मार दी गई थी।

Machine Translated by Google

रिफ़ीज़ जानलेवा हो सकती है

पुलिस को दाऊद इब्राहिम के गुर्गे मोहम्मद अली कंजारा और उसके गुर्गों के बीच टैप की गई बातचीत को समझने में समय लगा, जिसमें कहा गया था 'रिफ़्री से बच के रहना'। उन्होंने समझा कि रिफ़्री का मतलब 'एनकाउंटर स्पेशलिस्ट' था।

लुटेरा गिरोह

लुटेरे गिरोहों पर शायद ही कभी भरोसा किया जाता है। मुंबई अंडरवर्ल्ड में 'लुटेरा' शब्द काफी अपमानजनक है।

लेकिन डाकू से शूटर बने अरुण महाजन के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के साहसी तरीकों ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एक चलन स्थापित कर दिया।

अरुण महाजन उर्फ इटलिया की मुलाकात जग्गू शेट्टी उर्फ फकीरा और रोहित वर्मा से हुई, जब वे तीनों 1995 के आसपास ठाणे जेल में सजा काट रहे थे। वर्मा-महाजन की जोड़ी जल्द ही कुछ सनसनीखेज हत्याओं में शामिल हो गई, जैसे कि ईस्ट वेस्ट एयरलाइंस के प्रबंध निदेशक ठक्कियुदीन वाहिद की हत्या, होटल व्यवसायी-बिल्डर डीएन घोष और मीरा रोड के पटेल बंधुओं की हत्या, जिनका नाम जेजे अस्पताल गोलीबारी मामले में आया था। गोलीबारी की इस श्रृंखला ने वास्तव में अंडरवर्ल्ड समीकरण को काफी समय तक राजन के पक्ष में मोड़ दिया।

महाजन के उदय से पहले राजन लुटेरों पर बहुत कम भरोसा करता था। वह ज़्यादातर डैनी, मत्या, दिवाकर चूरी और संजय रग्गड़ जैसे अपने शूटरों पर निर्भर रहता था। महाजन ने विनोद मटकर जैसे लुटेरों के लिए ट्रेंड सेट किया, जो बाद में शूटर बन गया और शहर में 20 से ज़्यादा हत्याओं के मामलों में उसका नाम आया। डीके राव, प्रशांत कुंदप्पा कोट्टा उर्फ प्रशांत कल्ली और नितेश कसारे जैसे लुटेरों की सूची लंबी है, जो अंडरवर्ल्ड के गैंगस्टरों में सबसे ऊपर हैं। महाजन का उदय तेज़ी से हुआ, जब वह उस टीम में शामिल हुआ, जिसने 1995 में बांद्रा पश्चिम में अपने दफ़्तर के पास वाहिद को मार डाला था। पुलिस सूत्रों के अनुसार, वह कम से कम 14 हत्याओं में शामिल था।

Machine Translated by Google

रोहित वर्मा (बाबू पांडे)

बब्बू पांडे के नाम से जन्मे वर्मा पहले वकोला में एक छोटा चोर था। गैंगस्टर मत्या द्वारा छोटा राजन के गिरोह में शामिल किए जाने के बाद वह बड़े गिरोह में शामिल हो गया। जल्द ही वह विनोद मटकर, जग्गू शेट्टी उर्फ फकीरा और डीके राव जैसे अन्य चोरों के साथ जुड़ गया। वर्मा ने मुंबई के अंडरवर्ल्ड के शीर्ष स्तर पर तब जगह बनाई जब उसे 1995 में बांद्रा में तक्कीउद्दीन वाहिद (ईस्ट-वेस्ट एयरलाइन के प्रमुख) की हत्या के मुख्य संदिग्धों में से एक के रूप में पहचाना गया।

वर्मा मुंबई से भागकर अपने गुरु छोटा राजन के पास चला गया, जब डॉन ने 1990 के दशक के मध्य में अपना ठिकाना दक्षिण पूर्व एशिया में बना लिया था। हालांकि, राजन और वर्मा तब हैरान रह गए जब मुन्ना जिंगाडा के नेतृत्व में छह सदस्यीय हत्यारा दस्ता 26 सितंबर, 2000 को बैंकॉक में उनके पहली मंजिल के अपार्टमेंट में घुस आया और अपार्टमेंट पर गोलियों की बौछार कर दी। वर्मा ने कुछ ही देर बाद दम तोड़ दिया। और हमले के समय वह सोया नहीं था।

रोटी के टुकड़े (रोटी के टुकड़े)

'रोटी के टुकड़े' शब्द का प्रयोग तब किया जाता है जब कोई गैंगस्टर अपनी लूट का माल बांटना चाहता है।
जब वह कहते हैं ' चार टुकड़े', तो इसका मतलब वास्तव में यह होता है कि धन को चार हिस्सों में बांटा जाना चाहिए।

Machine Translated by Google

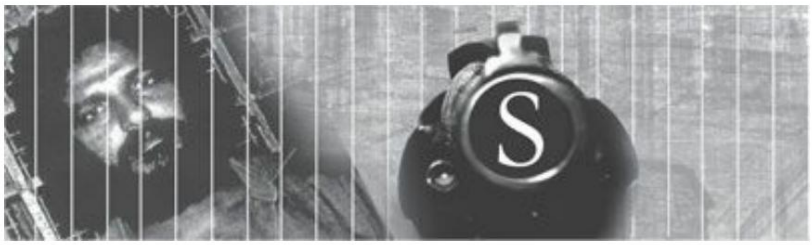

सबर (धैर्य)

दाऊद इब्राहिम के सहयोगी फईम मचमच को अपने लक्ष्य को चेतावनी देते हुए सुना गया, ''हम को सबार करने की बहुत आदत है। बहुत सबार कर सकते हैं (हम हत्या से पहले धैर्यपूर्वक इंतजार करने के लिए जाने जाते हैं)।''

"तेरे बर्बाद हैं हमने रूपम वाले को कैसे मारा (क्या आपको याद है कि हमने रूपम स्टोर्स के मालिक को कैसे मारा) - मालिक भरत शाह की 1998 में क्रॉफर्ड मार्केट के पास हत्या कर दी गई थी।

"उसे लगा कि वह सुरक्षित है क्योंकि उसकी दुकान पुलिस मुख्यालय के नजदीक है।
उन्हें लगा कि पुलिस सुरक्षा मिलने के कारण वह सुरक्षित हैं।''

"छह महीने बीत गए और हमारे आदमी को लगा कि हम उसके बारे में सब कुछ भूल गए हैं। उसने पुलिस एस्कॉर्ट को वापस जाने दिया। हमारे बंदूकधारियों ने उस मूर्ख को गोली मार दी।"

मेरे आदमी तुम पर नज़र रख रहे हैं। लेकिन हम तुम्हें नहीं मारेंगे। हम तुम्हारे दोस्त को मार देंगे। तुम पैसे देने वाले हो। हम तुम्हें कैसे मार सकते हैं?

"दरवे का घंटी बजाऊं क्या?" (क्या मेरे आदमी अब आपके दरवाजे की घंटी बजाएंगे?)
मचमच ने पूछा.

समद खान (करीम लाला का भतीजा)

पठान डॉन समद खान और उसके साथी बाबा खान, मल्लाद खान, जंगरेज, करीम और शेरू एक अन्य घातक टीम का हिस्सा थे।

Machine Translated by Google

1 जनवरी, 1993.

सलीम हद्दी

सलीम हड्डी का नाम उसकी बड़ी हड्डी के कारण 'हड्डी ' रखा गया था।
वह अबू सलेम का करीबी था और चेंबूर में बिल्डर मोहन कुकरेजा की हत्या में उसका नाम था। उस समय सलेम दाऊद इब्राहिम के लिए काम कर रहा था। सलीम हद्दी 27 नवंबर 1995 को जोगेश्वरी में मिल्लत नगर के पास एक मुठभेड़ में मारा गया था। उसके साथ उसका साथी और पूर्व पुलिसकर्मी राजेश इग्वे भी था।

सलीम कुट्टानेल्लूर (सलीम कुट्टा)

सलीम कुट्टानेल्लुर को उसके दांतों की वजह से 'कुत्ता ' उपनाम दिया गया था, जो कुत्ते के दांतों से मिलते जुलते थे। 1993 के सीरियल बम धमाकों के साबित होने से पहले कोंकण तट पर हथियार और विस्फोटक पहुंचाने में उसकी भूमिका के बाद वह सुर्खियों में आया था।

उसे तस्कर मोहम्मद दोसा के साथ-साथ टाइगर मेमन और दाऊद इब्राहिम का भी करीबी माना जाता है।

सलीम पासपोर्ट

कल्पना कीजिए कि आप अपने ट्रैवल एजेंट को 'पासपोर्ट' कहकर बुलाते हैं। खान ने दाऊद इब्राहिम को उसके ट्रैवल डॉक्यूमेंट्स दिलवाने में मदद की और यह नाम बस यूं ही पड़ गया। मोहम्मद सलीम कासिम अली उर्फ पासपोर्ट को 1993 के सीरियल बम धमाकों में आरोपी बनाया गया था और बाद में 11 मई 1998 को जेजे अस्पताल के पास भिंडी बाजार में हुई गोलीबारी में उसकी मौत हो गई थी।

सलीम तलवार

1985 में डोंगरी में एक मतदान केंद्र पर कब्जा करने वाले व्यक्ति ने मतदान अधिकारियों और मतदाताओं को डराने के लिए तलवार का इस्तेमाल किया था। बाद में उन्हें जेल भेज दिया गया।

Machine Translated by Google

दाऊद का करीबी माना जाता है।

सलीम कुर्ला

सलीम को यह नाम उसके घर के नाम से मिला क्योंकि वह उत्तरी उपनगर कुर्ला में रहता था। बिस्मिल्ला खान उर्फ कुर्ला ने दाऊद के छोटे भाई नूरा से हाथ मिलाने से पहले नागपाड़ा में एक छोटे से कर्मचारी के रूप में शुरुआत की थी।

उन्होंने जल्द ही शबनम आर्ट्स इंटरनेशनल के बैनर तले एक फिल्म कंपनी खोली। कुर्ला पर कुछ लोगों को सैन्य प्रशिक्षण के लिए पाकिस्तान भेजने का आरोप था और उन पर 1993 के बम विस्फोट मामले में आरोप लगाया गया था। 21 अप्रैल, 1998 को ओशिवारा में छोटा राजन गिरोह ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी थी।

साजा के देना (एक थाली में परोसें)

खूबसूरत अशरफबी का पति महमूद कालिया पठान गिरोह का सदस्य था, जो 1981 में प्रभादेवी के पास दाऊद इब्राहिम के बड़े भाई शब्बीर की हत्या में शामिल था।

लंबा, काला और हट्टा-कट्टा कालिया जल्द ही गिरोह का वास्तविक नेता बन गया, जब शहर में अलग-अलग मुठभेड़ों में समद खान और अमीरजादा जैसे सदस्य मारे गए।

एक अन्य प्रमुख सदस्य आलमजेब भी गुजरात के अहमदाबाद में निर्वासन के दौरान मारा गया। दाऊद के गुर्गों ने गिरोह को लगभग खत्म कर दिया।

दाऊद ने कालिया से संपर्क कर कहा कि वह उनके बीच के कटुतापूर्ण संबंधों को खत्म करने के लिए तैयार है और उसने उसे दुबई के लिए मुफ्त टिकट की पेशकश की, जो उसे अपनी वफादारी बदलने के लिए मनाने की एक चाल प्रतीत हुई।

कालिया की वापसी की टिकट नई दिल्ली के रास्ते बुक की गई थी। दाऊद ने इस तगड़े शूटर का भरोसा जीत लिया था, उसे यह भरोसा दिलाकर कि मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कड़ी निगरानी है और उसके लिए वहां उतरना सुरक्षित नहीं है।

Machine Translated by Google

कालिया को दुबई में अपने कार्यकाल के दौरान मुफ्त शॉपिंग का मौका दिया गया। वे नई दिल्ली से घरेलू उड़ान से मुंबई पहुंचे।

उनके आगमन पर सांताक्रूज़ स्थित घरेलू हवाई अड्डे के बाहर ई. अमोलिक के नेतृत्व में अपराध शाखा के अधिकारियों की एक टीम ने उनकी हत्या कर दी।

कालिया की पत्नी अशरफीबी को पूरा यकीन था कि दाऊद ने ही उसके पति की हत्या की साजिश रची है। वह उसकी मौत का बदला लेना चाहती थी।

सुंदर दिखने वाली इस महिला ने मदद के लिए कई प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टरों से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन वह अपने शुरुआती प्रयास में असफल रही।

आखिरकार उसकी मुलाकात अरुण गवली के छोटे भाई किशोर गुलाब गवली उर्फ पापा से हुई। उसकी खूबसूरती से प्रभावित होकर, वह आवेगशील युवक दाऊद को चुनौती देने लगा। 22 फरवरी, 1990 को माहिम में उसकी हत्या कर दी गई।

पापा की हत्या के बाद हत्याओं का एक और दौर शुरू हो गया और गवली तथा दाऊद इब्राहिम के बीच बड़ी दरार पैदा हो गई।

सत्रा (17)

''अंडरवर्ल्ड की भाषा में सातरा एक मारवाड़ी व्यवसायी है। 1950 के दशक की शुरुआत से ही डोंगरी, शुक्लाजी स्ट्रीट और ग्रांट रोड के आसपास के इलाकों में बड़ी संख्या में मारवाड़ी सेठ या डीलर सोने के कारोबार में लगे हुए थे। वे इलाके में कई गिरोहों के उत्थान और पतन के गवाह रहे हैं। कुछ के बारे में तो यह भी कहा जाता है कि वे अंडरवर्ल्ड से जुड़े हुए थे।

सौदा फ़ोक (कोई भुगतान नहीं)

मुंबई का अंडरवर्ल्ड अप्रत्यक्ष रूप से सट्टेबाजों से जुड़ा हुआ है और कई लोग क्रिकेट मैचों के दौरान उनसे सुरक्षा लेते हैं।

कुछ गैंगस्टर्स को सट्टेबाज़ी के धंधे में भारी नुकसान उठाना पड़ता है, जिस पर वे खुद का नियंत्रण रखते हैं। सबसे आसान तरीका है सौदा फ़ोक मंगवाना, जिसके मामले में भुगतान नहीं किया जाता।

Machine Translated by Google

गोलीबारी में फंसे सट्टेबाज अक्सर पैसा वसूलने में मदद के लिए प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टरों से संपर्क करते हैं।

गुप्त बंकर (दगड़ी चॉल के)

दगडी चॉल परिसर की दीवारों के भीतर खोदे गए गुप्त बंकरों के लिए जाना जाता था। कुछ गुफ़ाएँ तो रसोई में टाइलों के नीचे भी स्थित थीं।

दगड़ी चॉल में पुलिस की छापेमारी के दौरान ज्यादातर गैंगस्टर इन्हीं बंकरों में छिप जाते थे। इनमें से कुछ छिपे हुए ठिकानों का पता लगाने में पुलिस को काफी समय लगा।

अरुण गवली को 19 जुलाई 1990 को मुंबई क्राइम ब्रांच के एक छापे के दौरान गिरफ्तार किया गया था। वह अपने बिस्तर की खोह में छिपा हुआ पाया गया था।

छापेमारी के दौरान पुलिस ने एक स्वचालित कार्बाइन बरामद की। तलाशी अभियान के दौरान सहयोगी दिलीप कुलकर्णी, नीलम वालावलकर, सोनू वालावलकर, राजा जाधव, शकर तेली और तान्या कोली को गिरफ्तार किया गया।

ए.ए. खान के नेतृत्व में आतंकवाद निरोधक दस्ते की एक अन्य छापेमारी में पुलिस को एक अन्य बंकर में बंद्या आदिलकर, नामदेव पाटिल, केशव उत्विल उर्फ अन्ना और गणेश भोसले उर्फ वकील मिले। अधिकारियों ने आसपास के एक अन्य बंकर से दो स्वचालित हथियार, चार रिवॉल्वर और 12 हथगोले जब्त किए।

शाहरुख

अंडरवर्ल्ड में एक बेहतरीन शूटर को कलाकार कहा जाता है। अगर शूटर सुंदर हो तो कभी-कभी उसे 'शाहरुख' भी कहा जाता है। इन नामों का इस्तेमाल जासूसी करने वाले पुलिसकर्मियों को गुमराह करने के लिए किया जाता है।

शम्बो! शम्बो!

Machine Translated by Google

अरुण गवली गिरोह के सदस्य एक दूसरे का अभिवादन 'शंबो, शंबो' कहकर करते थे। शंबो शब्द का इस्तेमाल अक्सर भगवान शिव के नाम के लिए किया जाता है। यह गिरोह के सदस्यों के बीच 'पासवर्ड' भी है।

गवली भगवान शिव का परम भक्त है।

इन शब्दों का प्रयोग तब भी किया गया जब गवली की राजनीतिक शाखा अखिल भारतीय सेना के सदस्य दगड़ी चॉल में वित्तीय सहायता मांगने के लिए एकत्र हुए थे।

शंभो का शाब्दिक अर्थ है शांति का निवास। कई बार यह अर्थ उन लोगों को आश्चर्यचकित कर देता है जो भगवान शिव को केवल मृत्यु और विनाश से जोड़ते हैं।

वर्तमान संदर्भ में, शम्बो का अर्थ सर्वोच्चता और यहां तक कि मृत्यु भी है।

यह शब्द अविनाश सावंत और हेमंत देसाई जैसे मुठभेड़ विशेषज्ञों के बीच लोकप्रिय हो गया, जो लंबे समय से गवली गिरोह के सदस्यों पर नज़र रख रहे थे।

शशिकांत सागवेकर (चिनका बाबू)

शशिकांत सागवेकर अश्विन नाइक गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। उसके ज़्यादातर निशाने पर दक्षिण मुंबई के पाइधोनी के व्यापारी और होटल व्यवसायी थे।

कालबादेवी में सक्रिय मायेकर गिरोह के सदस्य भरत आंग्रे की हत्या के बाद चिंका बाबू अंडरवर्ल्ड का एक प्रमुख चेहरा बन गया। बाद में उसने स्थानीय गुंडे दशरथ रहाणे के साथ हाथापाई की, जिसकी 19 अक्टूबर 1990 को हत्या कर दी गई।

पुलिस रिकॉर्ड से पता चलता है कि सागवेकर का नाम 1991 से 1994 के बीच कम से कम 15 हत्याओं में था। वह 1999 में पुलिस मुठभेड़ में मारा गया था।

शशि रसम (किंग कोबरा)

Machine Translated by Google

एक पुलिस कांस्टेबल का बेटा, शशि अंबाजी रसम मध्य मुंबई के सबसे खूंखार गैंगस्टरों में से एक बन गया।

शशि पुलिस अधिकारी बनने की तैयारी कर रहा था, जब एक युवा लड़के के रूप में उसने एक लॉन्ड्री मालिक पर हमला किया। शशि को अपने स्कूल के एक समारोह के लिए देर हो रही थी और जब उसने देखा कि उसकी वर्दी इस्त्री नहीं की गई थी, तो वह क्रोधित हो गया।

इस आवेगशील युवक पर अपराध के लिए मामला दर्ज किया गया। यह उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ भी था और वह पुलिसवालों से नफरत करने लगा।

शशि ने पोद्दार मिल्स में क्लर्क की नौकरी छोड़ दी और मुंबई सेंट्रल के एक स्थानीय गुंडे बबन अमरुते के लिए काम करना शुरू कर दिया। इसके तुरंत बाद सड़क पर झगड़े हुए और 1968 में प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर महादेव माने की हत्या कर दी गई।

1971 में मध्य मुंबई के अगस्त क्रांति मैदान के पास पतंग उड़ाने को लेकर शशि का बॉलीवुड अभिनेता विनोद खन्ना से झगड़ा हो गया था। लेकिन जल्द ही वे दोस्त बन गए।

बेहद खूबसूरत दिखने वाले शशि इतने आक्रामक हो गए कि उन्होंने कुकरी (एक धारदार हथियार) से पुलिस इंस्पेक्टर पदवल पाटिल पर हमला कर दिया। अधिकारियों ने बिना समय गंवाए उन पर मीसा के तहत मामला दर्ज कर लिया।

1972 में जेल से रिहा होने के बाद शशि ने मुंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन के पास मालम मार्केट में शराब का धंधा शुरू कर दिया। प्रतिदिन लगभग 2,000 रुपये की आय से वह एक जीप और अन्य वाहन चला पाता था।

शशि ने एक बार नेपियन सी रोड पर तस्करी से लदे एक ट्रक को रोका और पुलिस को इसकी सूचना दी। यहीं से हाजी मस्तान, करीम लाला और वरदराजन मुदलियार के नेतृत्व वाले तस्करी गिरोहों के साथ उनकी जंग की शुरुआत हुई।

ज्यादा समय नहीं बीता था कि पुलिस ने उन पर कोबरा गैंग बनाने का आरोप लगा दिया।
ऐसा इसलिए था क्योंकि उसके दोस्त और साथियों ने अपने हाथों पर एक फन वाले सांप का टैटू गुदवाया हुआ था। "वह एक आदमी की सेना थी।
उसने सुनिश्चित किया कि उसका दोस्त उसके झगड़ों में शामिल न हो। वह एक स्वदेशी डॉन था : कभी तस्करी या जबरन वसूली में शामिल नहीं हुआ," उसके एक दोस्त आर सावंत याद करते हैं।

गैंगस्टर कुंदन दुबे के साथ शशि की दोस्ती उसके पतन का कारण बनी।

Machine Translated by Google

रामा नाइक की बायकुला कंपनी के साथ टकराव हुआ।

25 अगस्त 1978 को शशि की मुंबई सेंट्रल ब्रिज पर रामा नाइक के गुर्गों अवध रेगो और कालिया धनराज ने चाकू घोंपकर हत्या कर दी थी।

शिवाजी गावडे (शिवा)

गावड़े को पास के दागड़ी चॉल के विक्रेताओं से सुरक्षा राशि वसूलने के लिए नियुक्त किया गया था। जल्द ही वह एक कुशल ड्राइवर के रूप में भी काम करने लगा और मुंबई सेंट्रल इलाके में अवैध शराब की आपूर्ति करने लगा। बाद में, वह मुंबई में छोटा शकील के दाहिने हाथ के रूप में काम करने लगा - जहूर मकंदा डोंगरी से काम करता था। मकंदा मुंबई में डी-कंपनी के नेटवर्क की देखरेख कर रहा था।

बाद में गावड़े ने नासिक के पास चांदगढ़ में बंदीवेडेकर की हत्या कर दी। आर्थर रोड जेल में छोटा राजन के लेफ्टिनेंट बालू डोकरे से हाथ मिला लिया।

शॉपिंग कर ले बेटा (जो चाहो खरीद लो बेटा)

'पॉकेट मनी' का इस्तेमाल गिरोह में नए लोगों को शामिल करने के लिए किया जाता है। यह कोई सहकर्मी भी हो सकता है और यह रकम 5,000 रुपये जितनी कम हो सकती है।

यह भुगतान चूहे के जाल की तरह काम करता है। एक बार अंदर जाने के बाद, भर्ती के लिए पीछे मुड़कर देखने की कोई ज़रूरत नहीं होती। उसे जल्द ही छोटे-मोटे काम सौंपे जाते हैं जैसे निगरानी करना या हथियार पास करना।

थोड़े अनुभव के बाद भर्ती को शूटर के पद पर पदोन्नत कर दिया जाता है। एक सफल असाइनमेंट के बाद, शूटर धीरे-धीरे गैंगलैंड की सीढ़ी पर चढ़ता जाता है।

बेटा (बेटा) भावी पैदल सैनिकों के लिए स्नेह का एक सामान्य शब्द है। भावी गैंगस्टर हार मान लेता है और सम्मानित महसूस करता है।

सर (समी सर)

श्रीनिवास स्वामीनाथन जिन्हें सैमी सर के नाम से भी जाना जाता है, वह व्यक्ति थे जिन्होंने छोटा राजन गिरोह के सदस्यों को शिष्टाचार और अंग्रेजी सिखाई थी।

Machine Translated by Google

कल्पना कीजिए कि छोटा राजन धाराप्रवाह अंग्रेजी बोल रहा है। चेंबूर के तिलक नगर में नगरपालिका स्कूल से पांचवीं कक्षा तक पढ़ाई छोड़ चुके इस छात्र को पढ़ाना कितना मुश्किल रहा होगा।

चेंबूर के घाटला गांव का इलेक्ट्रिकल इंजीनियर स्वामीनाथन उर्फ सैमी दो दशक से अधिक समय से छोटा राजन से जुड़ा हुआ था।

राजन के प्रमुख सहयोगी और स्कूल के साथी फ़रीद तनाशाह भी अपनी अंग्रेजी बोलने की कला का श्रेय सैमी सर को देते हैं।

बालू डोकरे और भारत नेपाली जैसे गैंगस्टरों ने भी दक्षिण पूर्व एशिया में छिपते समय सैमी सर से अंग्रेजी और पश्चिमी संस्कृति की शिक्षा ली थी। यूरोप में उनके प्रवास के दौरान ये शिक्षा उनके लिए उपयोगी साबित हुई।

स्वामीनाथन खुद एक आलीशान जीवनशैली का आनंद लेते थे, नियमित रूप से सिंगापुर, हांगकांग और मुंबई के बीच यात्रा करते थे। उन्होंने दक्षिण पूर्व एशिया में होटलों की एक श्रृंखला चलाई।

स्वामीनाथन की 2004 में ठाणे में वागले एस्टेट के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। ऐसा संदेह है कि उसने राजन को धोखा दिया था।

मलिन बस्तियों

1970 के दशक के अंत तक, अंडरवर्ल्ड ने झुग्गी-झोपड़ियों के विकास का लाभ उठाना शुरू कर दिया था, तथा इसका उपयोग नए लोगों को खोजने और शहर की राजनीति में पैठ बनाने के लिए किया जाने लगा था।

झुग्गियों की विस्फोटक वृद्धि उपनगरों में संगठित अपराध में खतरनाक वृद्धि के साथ हुई। बिल्डर इमारतों के निर्माण के लिए बस्तियों को खाली करने के लिए विविध गिरोहों का उपयोग कर रहे थे।

कंजुर मार्ग गांव में झुग्गी-झोपड़ियों की आबादी सिर्फ़ दो साल में 30,000 बढ़ गई। झुग्गी-झोपड़ियों के मालिक नानजी शाह का स्थानीय गुंडे अशोक जोशी से झगड़ा हुआ। उनकी दुश्मनी ने तीन साल से भी कम समय में 20 लोगों की जान ले ली, जिनमें शाह की जान भी शामिल है।

अशोक जोशी को जल्द ही कई राष्ट्रीय राजनीतिक नेताओं के साथ देखा जाने लगा। शिवसेना

Machine Translated by Google

नगर पार्षद खिम बहादुर थापा और उनके विरोधी अवधूत बोंडे और विलास माने का भांडुप पश्चिम की बड़ी झुग्गी बस्तियों पर प्रभाव था।

झोपड़ियाँ बनाई गईं और 5,000 से 20,000 रुपये के बीच में बेची गईं। यह पैसा झुग्गी मालिकों की रक्षा करने वाले गिरोहों के पास गया।

तमिल डॉन वर्धराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई ने धारावी और कोलीवाड़ा इलाकों में कलेक्टर की जमीन हड़पने के लिए गुंडों को प्रोत्साहित किया। अपनी जागीर में, उसने छोटे-मोटे शराब तस्करों को संरक्षण दिया और उनके विपणन और वितरण की देखभाल इस तरह की जैसे वे कॉर्पोरेट हों।

अब्दुल मजीद अब्दुल्ला पटेल, जिन्हें यूसुफ पटेल के नाम से जाना जाता है, ने शहरी भूमि सीलिंग अधिनियम को दरकिनार करने के तरीके खोजे। आपातकाल के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया और 32 महीने जेल में बिताने पड़े।

स्क्वायर-फ़ीट भाई (स्थानीय गुंडा)

स्थानीय गुंडे को 'स्क्वायर फीट भाई' के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऐसे सरगना को संदर्भित करता है जो शायद ही कभी अपने इलाके से बाहर निकलता है और ज्यादातर इलाके के छोटे-मोटे व्यापारियों से मामूली सुरक्षा राशि पर पलता है।

वह अक्सर स्थानीय गुंडा होता है, उसका किसी बड़े गिरोह से कोई संबंध नहीं होता।

एक वर्ग फुट भाई स्थानीय मटका संचालकों, जुआ अड्डों और इलाके में अवैध निर्माण से अपना पैसा कमाता है। वह एक गंभीर मामले में मुखबिर और कभी-कभी गवाह के रूप में भी काम करता है।

वह माफिया की आय का बड़ा हिस्सा पाने की चाहत रखने वाले बड़े गिरोहों से टकराव से बचता है। उसे जो मिलता है, उससे वह संतुष्ट रहता है।

सीधा (चाकू)

जब कोई गैंगस्टर कहता है 'स्ट्रेटगुमा दिया' तो उसका मतलब होता है कि उसने किसी को चाकू मार दिया है।

Machine Translated by Google

कोबरा गिरोह के सरगना की हत्या ने बायकुला कंपनी को मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च स्तर पर पहुंचा दिया।

आधी रात के करीब का समय था जब तेजतर्रार शशि रसम बॉम्बे सेंट्रल रेलवे स्टेशन के पास एक टैक्सी से उतरीं।

वह मूंगफली खरीद रहा था, तभी उसे अचानक अपने पेट में किसी 'सीधी चीज' की धार महसूस हुई। इससे पहले कि वह ऊपर देख पाता, उसके धड़ पर कई बार चाकू से वार किया गया। नागपाड़ा पुलिस ने बाद में हत्या के सिलसिले में रामा नाइक, विलास चौगुले, विलास सावंत और छोटा बाबू को गिरफ्तार किया।

रसम ने यह नहीं देखा था कि रामा नाइक और उसके साथी टैक्सी में उसका पीछा कर रहे थे, जब वह बाइकुला स्टेशन से कुछ ही दूरी पर एक्स लेन में पुष्पा नामक महिला से अलग हुआ था।
उन्होंने प्रतीक्षा करना तथा पुष्पा की मां के रसम को विदा करने आने के बाद उसका पीछा करना उचित समझा।

हमले के बाद रसम बड़ी मुश्किल से किसी तरह पास के रेलवे अस्पताल पहुंचा। कुछ घंटों बाद उसकी मौत हो गई।

संघर्षशील

"शॉट दिखा दूंगा। मैं अब इंडिपेंडेंट हूं। मुझे पैसे चाहिए" (मैं अपने गुंडों को गोलियां चलाने के लिए कहूंगा। मैं अब आइडेंटिफाइड हूं और मुझे पैसे चाहिए), ब्रेकवे गैंगस्टर रवि पुजारी ने मुंबई के छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर एक क्लियरिंग एजेंट से कहा।

और पुजारी अकेले नहीं हैं। अश्विन नाइक गिरोह का कुमार पिल्लई, छोटा राजन से अलग हुआ एक और आदमी एजाज लकड़वाला मुंबई के अंडरवर्ल्ड से बड़ा हिस्सा हासिल करने की होड़ में है।

राजन गिरोह से अलग हुआ एक और व्यक्ति हेमंत पुजारी भी मुंबई में कई लोगों को जबरन वसूली के लिए कॉल कर रहा है। अलग हुए गैंगस्टर स्पष्ट रूप से फिर से सक्रिय हो रहे हैं। लेकिन उनके स्रोत पुराने हो चुके हैं और उनके पास अनुभवी 'हैंडलर' की कमी है, जो फ्रंटलाइन शूटरों का मार्गदर्शन कर सकें। महानगर में अपनी उपस्थिति महसूस कराने के लिए उन्हें अभी तक कोई बड़ा प्रभाव नहीं डालना है।

Machine Translated by Google

सुभाष सिंह ठाकुर

सुभाष सिंह आज भी मुंबई के अंडरवर्ल्ड में एक रहस्य बने हुए हैं। जेल की कोठरी में दिन में दो बार उनका वर्कआउट किसी उभरते हुए बॉक्सर को भी शर्मिंदा कर सकता है।

1982 में, वह फतेह सिंह गायकवाड़ (जो अब महाराष्ट्र में सहायक पुलिस आयुक्त हैं) के नेतृत्व वाली पुलिस टुकड़ी की छह गोलियों से बच गये।

छह फुट से अधिक लंबे इस गैंगस्टर का वजन 100 किलोग्राम से अधिक है और वह एक साधु की तरह चुप रहता है।

लंबी दाढ़ी रखने वाले इस व्यक्ति को सुभाषभाई के नाम से भी जाना जाता है और वह उन कुछ गैंगस्टरों में से एक है जो जेल का भत्ता लेते हैं , जो कि कुछ करोड़ रुपये तक की आय वाले व्यक्ति के लिए मामूली जीवनशैली है।

उल्हासनगर के कुछ वरिष्ठ नेता और मंत्री उनके शुभचिंतक माने जाते हैं। उनके पास कोई समर्थक नहीं है, लेकिन प्रतिद्वंद्वी डॉन हमेशा उनसे हाथ मिलाने को तैयार रहते हैं, भले ही वह आजीवन कारावास की सजा काट रहे हों।

वाक्य।

सुभाष सिंह ने एंथनी वीरास्वामी उर्फ कालिया एंथनी के संरक्षण में काम करना शुरू किया। गिरोह की शुरुआत मुंबई के खार इलाके में महंगी कारों के ऑडियो सिस्टम चुराने से हुई थी।

1989 में सत्यवान पांचाल, अब्बास, जॉन, अयूब, रमेश भोगले और तस्कर बख्शी की हत्या में उसका नाम आया था।

सुभाष सिंह ने 1992 में जेजे अस्पताल गोलीबारी में सुनील सावंत के साथ मिलकर काम किया था। उसने अगले वर्ष नेपाल में छोटा राजन के पांच गुंडों की हत्या को भी अंजाम दिया था।

सुनील सावंत (सौत्या)

सौत्या दाऊद इब्राहिम के गिरोह का एक प्रमुख सदस्य था। वह मुंबई में एक दर्जन से अधिक हत्याओं में शामिल था, जिनमें से प्रमुख 3 दिसंबर, 1988 को पनवेल में अशोक जोशी और चार अन्य की हत्या थी।

Machine Translated by Google

जेजे अस्पताल गोलीबारी में मुख्य शूटर।

यह विशालकाय गैंगस्टर 1984 के आसपास गिरगांव के पास भूतची वाडी में रहता था।
गिरगांव में एक गुंडे से झगड़ा होने के बाद उन्होंने रामा नाइक और अरुण गवली की मदद मांगी।

सौत्या की नेपाल में छोटा राजन के पांच गुर्गों की हत्या में संलिप्तता के प्रतिशोध में 1995 में दुबई के एक होटल के बाहर उत्तम धोइपोड़े, विलास जाधव और अब्दुल कादिर के साथ हत्या कर दी गई थी।

सुपारी (अनुबंध हत्या)

सुपारी या कॉन्ट्रैक्ट किलिंग अभी भी चर्चा का विषय बना हुआ है, दशकों बाद जब यह माफिया की भाषा में आया। यह आमतौर पर किसी विरोधी को मारने या चाकू घोंपने का प्रस्ताव या अनुबंध होता है। इसे स्वीकार या अस्वीकार किया जा सकता है। सुपारी स्वीकार करने के बाद बड़ी रकम का आदान-प्रदान होता है।

रामा नाइक, गॉडफादर, जिसने भायखला के पास अपने लाल विटे के चॉल से गैंगस्टरों की एक पीढ़ी को तैयार किया, ने तिलक नगर के गैंगस्टरों के साथ गठबंधन किया, जिसका नेतृत्व राजन महादेव नायर उर्फ बड़ा राजन करता था। छोटा राजन तब महज एक सहायक था।

दाऊद इब्राहिम रामा के ग्राउंड फ्लोर स्थित घर में अक्सर आता-जाता था। उसने नाइक से अपने भाई शब्बीर की मौत का बदला लेने में मदद की गुहार लगाई थी।

नायर ने आखिरकार सुपारी स्वीकार कर ली। लेकिन काम कौन करेगा? कोई नया व्यक्ति होना चाहिए था जो पठान अमीरजादा की ताकत से अनभिज्ञ हो।

उन्होंने एक बेरोजगार युवक डेविड परदेसी पर ध्यान केंद्रित किया, जिसने कुछ सप्ताह पहले ही ऑटोरिक्शा चालक अमर खोडगांवकर के माध्यम से काम के लिए बड़ा राजन से संपर्क किया था।

" बेटा एक बहुत बड़ा काम है।" राजन ने परदेसी से पूछा.

"हां भाई" (हां), परदेसी ने उत्तर दिया।

Machine Translated by Google

परदेसी को 5 लाख रुपए की पेशकश की गई तथा काम पूरा होने के बाद और अधिक धनराशि देने का वादा किया गया।

अंडरवर्ल्ड डॉन वर्धराजन मुदलियार उर्फ वर्धाभाई को दुश्मन को खत्म करने के लिए पैसे लेने का विचार बिल्कुल भी पसंद नहीं था। वर्धाभाई ने बड़ा राजन को चेतावनी देते हुए कहा, "तू मेरा बेटा जैसा है। ये काम मत ले दाऊद तुझे मरवा देगा।" (तू मेरे बेटे जैसा है। पैसे मत लेना। दाऊद तुझे मरवा देगा)।

राजन के पूर्व सहयोगी तिलक नगर निवासी के. सिंह ने 1983 में सत्र न्यायालय में की गई हत्या का जिक्र करते हुए कहा, "राजन के सहयोगियों ने इस योजना पर कुछ दिन काम किया।"

सादिक कालिया

रहस्यमय सादिक इस्माइल जालवार उर्फ सादिक कालिया उर्फ बाबा राजू उर्फ बूथ उर्फ नरसिंह का अपराध की दुनिया में उदय रहस्यमय था, जब उसने 1995 में अपने पूर्व गुरु अरुण गवली से नाता तोड़ लिया था।

उसका अगला कदम अपने प्रतिद्वंद्वी गिरोह के सरगना छोटा शकील से हाथ मिलाना था। लेकिन शकील उस आदमी पर कैसे भरोसा करता, जो उसके प्रतिद्वंद्वी अरुण गवली का करीबी था?
कालिया को अगले 30 दिनों में डोंगरी में अपने बहनोई को ख़त्म करने के लिए कहा गया।
कालिया द्वारा कार्य पूर्ण करने के बाद उनकी निष्ठा स्थापित हो गई और इसके बाद मुम्बई सेंट्रल के निकट अग्रीपाड़ा के झूला मैदान के युवाओं ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

सादिक और उसका भाई आरिफ कौशल राज जैन और पूर्व कस्टम इंस्पेक्टर फारूक बटाटावाला की हत्या में भी शामिल थे। उसने छह महीने से भी कम समय में छह साथियों की हत्या करके छोटा राजन गिरोह के सदस्यों में दहशत फैला दी थी।

पुलिस इंस्पेक्टर प्रदीप शर्मा, अरुण बोरुडे और पीएसआई दया नायक की एक टुकड़ी ने 12 दिसंबर 1999 को उनकी हत्या कर दी।

समन (बंदूक)

Machine Translated by Google

कुख्यात गैंगस्टर मेहदी इमरान ने भागने की योजना बनानी शुरू कर दी थी और पुलिस को डराने के लिए उसे एक 'सामन' की जरूरत थी।

अली बुदेश के शीर्ष सहयोगी को जल्द ही शब्बीर हुसैन शेख उर्फ मतिम, मोहम्मद उमर पटकी उर्फ जावेद और यूसुफ हसन उर्फ यूसुफ टकला जैसे कैदियों में विश्वसनीय सहयोगी मिल गए।

मेहदी के जेल से भागने की साजिश रची गई। जमानत पर रिहा होने के बाद भी शब्बीर, जावेद और यूसुफ मेहदी से मिलने जाते रहे और जेल के अधिकारियों को जल्द ही यह आदत हो गई कि ये तीनों मेहदी के लिए कई तरह के फल लाते रहते हैं।

उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि मेहदी पर बरसाया गया प्यार और देखभाल वास्तव में, उसके भागने की एक बहुत बड़ी, भयावह साजिश का हिस्सा थी। गिरोह ने 27 मार्च 2000 को दक्षिण मुंबई के डोंगरी इलाके से एक यामाहा मोटरसाइकिल चुराकर भागने का अभियान शुरू किया। अगले दिन, नल बाजार के पास एक फल विक्रेता से एक बड़ा तरबूज खरीदा गया। एक प्लास्टिक सर्जन की सटीकता के साथ, यूसुफ टकला ने तरबूज में एक गहरा चीरा लगाया और उसमें एक समान (बंदूक) छिपा दिया, जिसे काले पॉलीथीन बैग में लपेटा गया था। फल का जो टुकड़ा काटा गया था, वह एक पहेली के हिस्से की तरह बदल दिया गया था, वरिष्ठ निरीक्षक जयंत सरमोकदम ने बताया। अगले दिन, तीनों लोग तरबूज के साथ आर्थर रोड जेल के प्रवेश द्वार पर थे

जैसे ही गैंगस्टर पुलिस वैन से उतरा, उसे तरबूज़ पेश किया गया, ठीक एस्कॉर्टिंग पुलिसवालों की चौकस निगाहों के सामने। मेहदी जल्द ही बिना किसी संदेह के अपने सेल में चला गया।

31 मार्च 2000 को मेहदी उर्फ दिलावर को मझगांव कोर्ट ले जाया जाना था। इस मौके का फायदा उठाते हुए हट्टे-कट्टे शूटर ने एस्कॉर्ट पार्टी से अनुरोध किया कि वे उसे दोपहर करीब 2.30 बजे कोर्ट की कैंटीन में ले जाएं।

मिसल पाव और चाय खाने के बाद मेहदी ने बिल चुकाया, जबकि एक कांस्टेबल हिम्मत अधव ने उसका दाहिना हाथ पकड़ रखा था। पुलिसकर्मी तब हैरान रह गए जब विचाराधीन कैदी ने अपनी कलाई खींची और अपनी शर्ट के नीचे छिपी रिवॉल्वर निकाल ली।

Machine Translated by Google

मेहदी ने गेट की ओर भागने से पहले पुलिसवालों को डराने के लिए हवा में एक राउंड फायर किया। कुछ ही सेकंड में मेहदी शब्बीर के पीछे यामाहा मोटरसाइकिल पर चढ़ गया, एक और राउंड फायर किया और डॉकयार्ड रोड की दिशा में भाग गया। बाद में वाहन वडाला रोड रेलवे स्टेशन के पास लावारिस हालत में मिला।

सईद बटला

सरगना हाजी मस्तान के कार्यालय का दरवाजा खुला और एथलेटिक सैयद बटला अंदर आया।
छोटे कद के गैंगस्टर ने अपनी टांगें मेज पर टिका दीं और बूढ़े डॉन की आंखों में देखने लगा।

डोंगरी से आए उस साहसी व्यक्ति ने कार्यालय से बाहर निकलते समय कहा, "बटला किसे का गुलाम नहीं है कि उसके गले में पट्टा डाल दो। "

1970 के दशक के मध्य में हाजी मस्तान ने बटला के दुस्साहस के बारे में सुना था और वह चाहता था कि बटला उसके लिए काम करे। डॉन के साथ काम करने का मतलब था इलाके में अपने व्यापारिक हितों की रक्षा करना और बॉस को दुश्मन के हमलों से बचाना।

मस्तान की आशंकाएं निराधार नहीं थीं। बटला ने डोंगरी और आस-पास के इलाकों में आतंक मचा दिया था और दाऊद इब्राहिम और उसके बड़े भाई शब्बीर में डर पैदा कर दिया था।

मस्तान ने दाऊद-शब्बीर की जोड़ी को इलाके के व्यापारियों से पैसे वसूलने और यह सुनिश्चित करने के लिए काम पर रखा था कि उसका माल उसके ग्राहकों तक सुरक्षित तरीके से पहुंचाया जाए। बटला के सामने ये दोनों भाई कोई मुकाबला नहीं कर सकते थे।

श्रीकांत (मामा/मूर्ख)

श्रीकांत देसाई को 'मामा' उपनाम मिला। 1985 में, जुहू स्थित मायावी प्रतिद्वंद्वी जॉन छोटा नायर की हिट लिस्ट में था, साथ ही राजन के गुरु राजन नायर उर्फ बड़ा राजन की भी हिट लिस्ट में था।

Machine Translated by Google

बड़ा राजन, छोटा राजन, अनिल परब, डैनी और श्रीकांत देसाई सहित गैंगस्टरों के एक समूह ने जॉन की हत्या की साजिश उसके घर के पास ही रची थी।

अगले कुछ मिनटों में जॉन खून से लथपथ पड़ा था और उस पर चाकू से कई वार किए गए थे। जैसे ही जॉन के समर्थक मौके पर पहुंचे, हत्यारे जल्दबाजी में भाग निकले। छह फीट लंबे देसाई को जुहू बीच की ओर जाते देखा गया, जो आत्मघाती हो सकता था। बड़ा राजन चिल्लाया, "अरे मामा, कहां भागता है?" (मूर्ख तुम कहां जा रहे हो?) नाम चिपक गया। बाद में, गुजराती राजन के सबसे भरोसेमंद गुर्गों में से एक बन गया, जो सहार हवाई अड्डे के आसपास के कार्गो क्षेत्रों को नियंत्रित करता था।

3 फरवरी 1993 को वरिष्ठ निरीक्षक प्रदीप शर्मा और उनके पूर्व मित्र विजय सालस्कर ने मलाड के डिंडोशी में एक मुठभेड़ में अपने आदमी को मार गिराया।

रवि पुजारी ने मामा के कामकाज की बागडोर संभाल ली।

सिख जोड़ी

अंधेरी पूर्व के एक सिख कुलविंदर सिंह बेनल ने छोटे-मोटे कॉलेज डॉन गुरचरण सिंह उर्फ मिक्की से हाथ मिला लिया।

दोनों स्थानीय कॉलेज के छात्र थे। कुछ ही समय बाद वे अंधेरी में छोटा राजन गिरोह के एक प्रमुख सदस्य कनिया के संपर्क में आए।

खूंखार सिखों ने मीरा रोड के एक अपार्टमेंट में अनवर की हत्या कर दी और उसके शव को एक टेलीफोन बूथ में फेंक दिया। उसके बाद, दोनों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जेल में कुछ समय बिताने के बाद मिक्की और बेनल राजन के साथ टूट गए और उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी छोटा शकील से हाथ मिला लिया।

कॉलेज छोड़ने वाला यह युवक जल्द ही दक्षिण पूर्व एशिया में शकील का खास बन गया और उसे पिछले वर्ष 25 मई 2003 को बैंकाक में एजाज लकड़वाला को खत्म करने का काम सौंपा गया।

पुलिस को संदेह है कि मिक्की-बेनल की जोड़ी पंजाब और दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के बीच आवागमन कर सकती है।

Machine Translated by Google

छः मार्च डे

जब किसी गैंगस्टर से कहा जाता है कि 'चार मर देना' तो उसे पीड़ित को डराने के लिए कहा जाता है ताकि वह पैसे दे दे। जब दाऊद के लेफ्टिनेंट मोहम्मद कंजरी ने अपने आदमियों को 'छह मर दे' का निर्देश दिया तो इसका मतलब था कि लक्ष्य की हत्या कर दी गई है।

सुभाष मकड़वाला

सुभाष मकड़वाला उर्फ सुभाष कुंचिकुरवे, दाऊद इब्राहिम के सबसे खूंखार शूटरों में से एक था, जिसका नाम मुंबई के उत्तरी उपनगरों में 30 से ज़्यादा हत्याओं में था। सुभाष कुंचिकुरवे का जन्म शोलापुर के पास बंदरों की मकड़वाला जनजाति से हुआ था।

सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन स्थानीय गुंडे प्रभाकर जाधव ने विनोद मोहिते की बहन के साथ एक घिनौनी हरकत कर दी। मोहिते मकड़वाला के बचपन के दोस्त थे।
मामला तब चरम पर पहुंच गया जब मोहिते की बहन ने इस मुद्दे को लेकर खुद को आग लगा ली।
दोस्तों के समूह ने जाधव को सबक सिखाने की कसम खाई और कंजूर मार्ग पर अनिल परब से संपर्क किया, जो अशोक जोशी गिरोह से अलग हो गया था।

परब ने समूह के साथ अपने अनुभव साझा किए, जिसके परिणामस्वरूप जाधव की 72 बार चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई।

इस घटना के बाद 1988-89 के आसपास एक नया गिरोह बना और मकड़वाला उसका सरगना बन गया। उपनगरों में कुख्यात बदमाशों कृष्णा पिल्लई, लाल सिंह चौहान और अशोक जोशी की हत्या में नाम आने के बाद मकड़वाला अंडरवर्ल्ड में चर्चित हो गया।

पुलिस ने दावा किया कि मकड़वाला हमेशा एके 56 राइफल और .38 कैलिबर रिवॉल्वर से लैस रहता था।

मकड़वाला 6 मई 1993 को उत्तर मुंबई के घाटकोपर में अमृत नगर के पास मुठभेड़ में मारा गया था।

Machine Translated by Google

सुनील असोलकर

गैंगस्टर सुरेश मांचेकर का करीबी सहयोगी 32 वर्षीय सुनील असोलकर अपने गुरु की टाडा के तहत गिरफ्तारी के बाद ठाणे और कल्याण के बीच के क्षेत्र में गतिविधियों को संभाल रहा था।

चिंतामन जौकर उर्फ चिन्त्या और कल्याणमणि ने 1988 के आसपास असोलकर को अपराध की दुनिया में प्रवृत्त किया। स्कूली छात्र के रूप में, मुम्बई के ईस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से सटे घाटकोपर के निम्न-मध्यम वर्गीय इलाके नायडू कॉलोनी और उसके आसपास के इलाकों में जौकर की ताकत ने उसे प्रभावित किया।

असोलकर ने अपराध की प्रारंभिक शिक्षा तब सीखी जब सुरेश मांचेकर और गुरु साटम भूमिगत हो गए थे और पास के पंत नगर में जौकर के ठिकाने पर रह रहे थे।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, न्हावा शेवा में लक्ष्मण भाई, वाडा में सुरेश किनी, ठाणे के मनपाड़ा में केशु और प्रफुल केनी की हत्या में असोलकर का नाम शामिल था। कल्याण में सुनील जाधव की हत्या उसके लक्ष्यों में से एक थी। 3 अक्टूबर 1998 को एक मुठभेड़ में असोलकर मारा गया।

सुनील घाटे (गवली के प्रथम नागरिक उम्मीदवार)

अरुण गवली के प्रमुख सहयोगी सुनील घाटे - वार्ड नंबर 28 से अखिल भारतीय सेना के उम्मीदवार, पार्टी के पहले नगर पार्षद बने।

संयोग से, घाटे मजिस्ट्रेट के सामने सरेंडर करने वाला पहला गैंगस्टर भी है, क्योंकि उसे डर था कि उसे एनकाउंटर में मार दिया जाएगा। 26 सितंबर, 1997 को अपने प्रमुख सहयोगी सदा पावले उर्फ मामा की हत्या के एक दिन बाद उसने खुद को अदालत के सामने पेश किया।

घाटे, अपने गुरु गवली की तरह, कानून के गलत पक्ष में आने से पहले मिल-मजदूर थे। 1977 में उनकी नौकरी चली गई और दोनों वैकल्पिक नौकरियों की तलाश में थे।

घाटे और गवली को 1990 में टाडा के प्रावधानों के तहत गिरफ्तार किया गया था।

Machine Translated by Google

घाटे को तीन वर्ष के भीतर रिहा कर दिया गया, तथा उन्हें 1997 तक हिरासत में रखा गया।

रामा नाइक की मृत्यु के बाद गवली ने बायकुला कंपनी की कमान संभाली और घाटे एक विश्वसनीय पड़ोसी और गिरोह का अग्रिम पंक्ति का लेफ्टिनेंट बने रहने में संतुष्ट था।

सनी डांसर

लंबे, काले और सुंदर, वीरेंद्र सिंह जनकसिंह वर्मा आसानी से भारतीय सशस्त्र बलों के एक गौरवशाली सैनिक बन सकते थे, लेकिन उनके पैरों की चमक के कारण ऐसा नहीं हो सका। नृत्य के प्रति उनके जुनून ने उन्हें 'सनी डांसर' का खिताब दिलाया और मुंबई में अपराधियों की सबसे वांछित सूची में उनका नाम शामिल हो गया।

"यह संयोग ही था कि हमने 1996 में मुलुंड चेकनाका पर सनी को रोक लिया।
सहायक पुलिस निरीक्षक राजन वनमाने, जो सनी को पकड़ने वाली टीम का हिस्सा थे, याद करते हैं कि उन्होंने 55 से अधिक डकैतियों की बात कबूल की है। वह देखने में अच्छा और सुशील था तथा धाराप्रवाह अंग्रेजी भी बोल सकता था।

"वास्तव में पूछताछ के दौरान सनी ने अभिनेता अजय देवगन के घर में डकैती की बात कबूल की थी।" वनमाने का कहना है कि सनी से बरामद सामान में देवगन की रिवॉल्वर भी मिली थी। सनी ने जाहिर तौर पर सांताक्रूज में स्टार के घर में सेंध लगाई थी और 2.5 लाख रुपए भी चुराए थे, जबकि अभिनेता शूटिंग असाइनमेंट के लिए शहर से बाहर गए हुए थे।

Machine Translated by Google

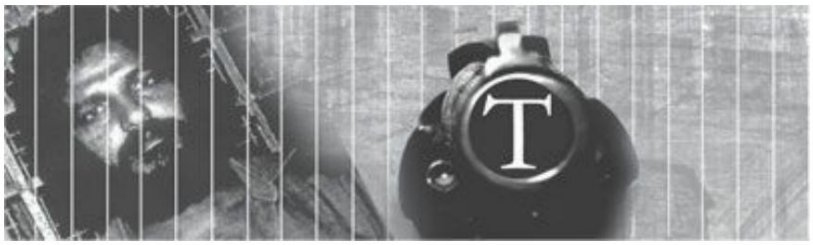

तान्या कोली

9 सितंबर, 1993. नागपुर जाने वाली एक लंबी दूरी की ट्रेन कल्याण रेलवे स्टेशन पर रुकी. अरुण गवली की भरोसेमंद साथी तान्या कोली को लेकर तीन हथियारबंद पुलिसकर्मी डिब्बे से बाहर निकल गए, जिससे गैंगस्टर अकेला रह गया. अगले कुछ सेकंड में अमर नाइक और उसके साथी डिब्बे में घुस गए, कोली पर गोलियां चलाईं और भाग निकले. पुलिसकर्मी वापस लौटे और कोली को खून से लथपथ पाया.

अपराध शाखा के अधिकारियों के अनुसार, यह हत्या अमर नाइक के छोटे भाई अश्विन के ससुर हरकिशन जेठवा की हत्या का नतीजा थी।
कोली की हत्या अरुण गवली गिरोह के लिए एक बड़ा झटका थी।

कोली ने मध्य मुम्बई के कुंभारवाड़ा में एक छोटे-मोटे गुंडे के रूप में अपना जीवन शुरू किया था, उसके बाद 1980 के दशक के अंत में उसे गिरफ्तार कर आर्थर रोड जेल में बंद कर दिया गया।
जल्द ही, जेल में विचाराधीन कैदियों से संरक्षण राशि वसूलने को लेकर उनकी गैंगस्टर अमर नाइक और उसके भाई अश्विन से कहासुनी हो गई।

कोली 1991 में बांद्रा के कला नगर के पास दाऊद इब्राहिम के सहयोगी रज्जी मेहंदी की हत्या के प्रमुख शूटरों में से एक था। संयोग से, कंपनी से अलग होने से पहले कोली मेहंदी का निजी अंगरक्षक था।

टपका दीया

6 सितंबर 1983 को 11.30 बजे थे। पुलिस सब-इंस्पेक्टर इसहाक बागवान खूंखार गैंगस्टर अमीरजादा नवाब खान को सेशन कोर्ट ले जा रहे थे।

Machine Translated by Google

दाऊद इब्राहिम के बड़े भाई शब्बीर की हत्या के सिलसिले में।

वकील मामले में कार्यवाही शुरू करने के लिए सत्र न्यायाधीश एसवी जोशी का इंतजार कर रहे थे। हलचल शांत हो ही रही थी कि एक 20 वर्षीय लगभग अज्ञात युवक पुलिस की घेराबंदी को तोड़कर अदालत में घुस गया।

अचानक, युवक 180 डिग्री घूम गया और कैदी के बाड़े की ओर वापस चला गया। उसकी तेज चाल ने अमीरज़ादा को आश्चर्यचकित कर दिया।

युवक ने अपनी शर्ट के नीचे रखी .38 कैलिबर की रिवॉल्वर निकाली और पाँच फीट से भी कम दूरी से गोली चला दी। कुछ ही सेकंड में, अमीरज़ादा खून से लथपथ होकर मर गया और उसकी छाती, गर्दन के ऊपरी हिस्से और पेट में तीन गोलियाँ लगीं।

अदालत कक्ष में अफरा-तफरी मच गई और लोग बचने के लिए इधर-उधर भागने लगे। सह-आरोपी जाफर जमाल सिद्दीकी ने अपना चेहरा अपनी हथेली में छिपा लिया।

"रुको! भागो मत। रुको," अपराध शाखा के उपनिरीक्षक इशाक बागवान ने चिल्लाकर कहा।

बागवान तेजी से आगे बढ़े और अपने .38 कैलिबर टाइटन टाइगर सर्विस रिवॉल्वर से गोली चला दी, ताकि शूटर को भागने से रोका जा सके।
घायल हत्यारे को काबू कर लिया गया और उसके निहत्थे हथियार निकाल दिए गए। उसने अपना नाम डेविड परदेसी बताया, जो चेंबूर के तिलक नगर का रहने वाला एक बेरोजगार युवक है।

इसी बीच भागने वाली गाड़ी के ड्राइवर मनोहर उर्फ मंग्या ने बॉस को सूचना दी, 'टपका दिया'।

यह ऑपरेशन एक किंवदंती बन गया था और इसने मुंबई में अंडरवर्ल्ड के समीकरण को तुरंत बदल दिया था। दाऊद अंडरवर्ल्ड का एक जीनियस बन गया।

किशोर

अंडरवर्ल्ड की भाषा में टीन या थ्री का मतलब मौत होता है। यह किसी गैंगस्टर की मौत या परिवार के किसी सदस्य की मौत हो सकती है।

Machine Translated by Google

तेल (तेल)

1980 के दशक के मध्य में, दाऊद दुबई में अपने साथियों को फोन करता था और उनसे पूछता था कि क्या वे अपने माल के साथ कुछ तेल की तस्करी करना चाहेंगे - तस्करी किए गए सोने के लिए एक व्यंजना। सोने और तेल का रंग लगभग एक जैसा होता है। बेखबर लोग सहमत हो जाते थे। दाऊद दुबई में उनके द्वारा दिए गए सोने में से अधिकांश को बेच देता था और माल का एक अंश भेज देता था। वह कस्टम में अपने संपर्कों से सोना जब्त करवाता और 20 प्रतिशत इनाम मांगता। वह अपने साथियों से कहता कि वे बदकिस्मत हैं। चूँकि उन्हें जब्ती के बारे में पता चल जाता था, इसलिए उनके पास दाऊद पर भरोसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

से अधिक (1,000 रु.)

अंडरवर्ल्ड में ' थान' का मतलब 1,000 रुपये भी होता है। डोंगरी और आस-पास के इलाकों के बुजुर्ग लोग आज भी इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

चीता

इब्राहिम मुश्ताक मेमन दक्षिण मुंबई में कड़िया बिल्डिंग के आस-पास की संकरी गलियों में पले-बढ़े। पांच भाइयों के परिवार में जन्मे उनके पिता मुश्ताक चाहते थे कि वे क्रिकेट खेलें और टाइगर पटौदी के नाम पर उनका नाम टाइगर रखना चाहते थे।

नौवीं कक्षा की पढ़ाई छोड़ने के बाद वह इतना आक्रामक हो गया कि उसके पिता ने उसका नाम टाइगर रख दिया। टाइगर तस्कर मोहम्मद दोसा और मुस्तफा दोसा उर्फ मजनून के संपर्क में आ गया, जो 1984 के आसपास इस इलाके में अक्सर आते-जाते थे।

उसकी हिम्मत से प्रभावित होकर टाइगर को उनके ड्राइवर सह-बॉडीगार्ड के रूप में काम पर रखा गया। एक बार दुबई में रहने वाला तस्कर याकूब भट्टी मुंबई में एक व्यापारिक यात्रा पर था और किसी तरह पुलिस को उसकी मौजूदगी की सूचना मिल गई और वे उसके पीछे लग गए। मेमन ने भट्टी का दिल जीत लिया और पुलिस के जाल से बचते हुए उसे कम से कम समय में एयरपोर्ट पहुंचा दिया। तस्कर इतना प्रभावित हुआ कि उसने मेमन को दुबई आमंत्रित किया और उसे पांच प्रतिशत ब्याज भी दिया।

Machine Translated by Google

मेमन ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

मेमन ने आरडीएक्स की लैंडिंग की साजिश रची थी, जिसका बाद में 1993 के सीरियल बम धमाकों में इस्तेमाल किया गया। ऐसा माना जाता है कि उसने दुबई से पाकिस्तानी आईएसआई के गुर्गों के कहने पर 25 युवाओं को प्रशिक्षण देने की व्यवस्था भी की थी। आज मेमन कराची में एक सफल व्यवसायी है।

तिलक नगर

उत्तर मुंबई में अंडरवर्ल्ड गतिविधियों का केंद्र।

निम्न आय वर्ग का यह इलाका उत्तरी मुंबई में धुआँ उगलने वाले उद्योगों के बीच स्थित था। यहाँ के ज़्यादातर निवासी ठाणे-बेलापुर औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारी थे।

तिलक नगर के कुछ गैंगस्टर निकटवर्ती कंपनियों में कुशल श्रमिक थे, इससे पहले कि वे अंधकारमय क्षेत्र में चले गए।

फिलिप्स पंधारे पास की एक ऑटोमोबाइल फैक्ट्री में टर्नर थे। उनके दुश्मन राजन नायर भी वहां मशीनिस्ट के तौर पर काम करते थे।

छोटा राजन के पिता सदाशिव निखलजे मुलुंड में एक दवा कंपनी में काम करते थे। 1970 के दशक के अंत में हत्याएं शुरू होने से पहले लगभग सभी गैंगस्टरों का औद्योगिक इतिहास रहा है।

राजन नायर उर्फ बड़ा राजन को तिलक नगर गैंग का गॉडफादर माना जाता है। उसके शागिर्द छोटा राजन ने 1983 में इसकी कमान संभाली थी। मोहन कोटियन, प्रदीप मडगांवकर उर्फ बंद्या मामा, रमेश शर्मा उर्फ गूंगा, गणेशसिंह बिष्ट उर्फ डैनी और फरीद तानाशाह जैसे अन्य लोग भी इस गिरोह के सदस्य थे।

तिलक नगर दाऊद इब्राहिम गिरोह के सदस्यों के लिए मुख्य ठिकाना बन गया था, जब छोटा राजन उसका दूसरा सबसे बड़ा सहयोगी था। 1993 में दाऊद से अलग होने के बाद भी राजन ने कॉलोनी से नए सदस्यों को भर्ती करना जारी रखा।

Machine Translated by Google

तेरे मरने से मैं जिउ तो तू मर जा

अगर मैं तुम्हारी मौत के बाद भी जिंदा रह सकता हूं: तो बेहतर है कि तुम मर जाओ- यह अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले सबसे आम मुहावरों में से एक है। शायद ये आखिरी शब्द हैं जो एक गद्दार को फांसी दिए जाने से पहले सुनने को मिलते हैं। इन शब्दों का इस्तेमाल तब किया जाता है जब कोई साथी या तो उसका दुश्मन बन जाता है या उसके लिए गंभीर समस्या बन जाता है।

थापा की हत्या (दाऊद-राजन अलगाव)

नगर निगम पार्षद खिम बहादुर थापा की हत्या के बाद छोटा राजन और उसके आका दाऊद इब्राहिम के बीच मतभेद पैदा हो गया।

छोटा राजन अपने प्रमुख सहयोगी नरेश अवतु उर्फ जुक्कर की 1 फरवरी 1992 को मुठभेड़ में मारे जाने के बाद परेशान था।

अवतु ने अपने बड़े भाई अमर, दिवाकर चूरी और संजय रुग्गड़ के साथ मिलकर राजन का कोर ग्रुप बनाया।

यह ज्ञात था कि जिस क्षेत्र में अवतु की हत्या हुई थी, वह क्षेत्र थापा के नियंत्रण में था, जो स्वयं भी शिवसेना पार्षद थे।

राजन, जो उस समय दाऊद का दूसरे नंबर का अधिकारी था, को बताया गया कि थापा ने पुलिस को अवतु के ठिकाने के बारे में सूचना दी थी।

राजन मुंबई के उत्तरी उपनगरों में थापा की तीव्र वृद्धि से चिंतित थे, जो पहले उनके नियंत्रण में था।

थापा राजनीतिक रूप से मजबूत थे। इसके अलावा, भांडुप के आसपास के उपनगरों में उनके बहुत बड़े समर्थक थे।

चौकीदार से राजनेता बने राजन को कंजुरमार्ग से अपने मुख्य प्रतिद्वंद्वी अशोक जोशी की मौत के बाद लगभग कोई चुनौती नहीं मिली। दाऊद इब्राहिम के मुख्य सहयोगी सतीश राजे की हत्या के बाद सत्ता का समीकरण बदल गया था, अरुण गवली गिरोह के अशोक जोशी ने थापा की हत्या की साजिश रची थी। राजन ने जल्द ही अवधूत बोंडे और विलास माने के साथ गठबंधन कर लिया - स्थानीय गुंडे जिन्होंने थापा के साथ तलवारें भांजी थीं।

Machine Translated by Google

थापा की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखी जा रही थी। राजन के साथियों ने उसे भांडुप में मंगतराम पेट्रोल पंप के पास घेर लिया और 23 अप्रैल 2001 को उसकी हत्या कर दी।

इस हत्या ने दाऊद को चौंका दिया था। राजन ने थापा की हत्या करने से पहले दाऊद की मंजूरी नहीं ली थी। अंडरवर्ल्ड के लोगों में यह धारणा घर कर गई थी कि राजन अपनी औकात से बाहर हो चुका है और वह बहुत असुरक्षित भी है।

तीसरा गियर

थर्ड गियर का मतलब है किसी को चकमा देना या तेजी से गाड़ी चलाना। यह शब्द ऑटोमोबाइल में तीसरे गियर से लिया गया है जिसका इस्तेमाल गति प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

तूफानी (सीबीआई फाइलें अभी भी खुली हैं)

मोहम्मद शफी शेख उर्फ शफी तूफानी कई खुफिया एजेंसियों के करीब था और उसने कई अहम जानकारियां दी थीं, जिससे बड़ी मात्रा में ड्रग्स जब्त किए गए और खास तौर पर एक विदेशी ड्रग माफिया के ठिकाने के बारे में पता चला। हैरानी की बात यह है कि उसे उसके ठिकाने से बाहर निकाला गया और दक्षिण मुंबई के नल बाजार के पास दिनदहाड़े मुठभेड़ में मार गिराया गया। हालांकि अपुष्ट रिपोर्टें हैं कि एक खुफिया अधिकारी ने तूफानी के ठिकाने के बारे में जानकारी दी, लेकिन अन्य लोग इसके लिए शेख मोहम्मद हुसैन उर्फ हुसैन उस्तारा को दोषी मानते हैं। बाद वाले को भी खुफिया एजेंसियों का करीबी माना जाता था और हो सकता है कि उसने पुलिस को अपने प्रतिद्वंद्वी के ठिकाने के बारे में जानकारी दी हो।

लेकिन ड्रग थ्योरी सबसे ज़्यादा विश्वसनीय लगती है। तूफ़ानी ने पुलिस को मुंबई में ड्रग तस्करी के नेटवर्क के बारे में कुछ अहम जानकारी दी।
तूफानी को इस बात का अहसास नहीं था कि ड्रग माफिया के पास नारकोटिक कंट्रोल ब्यूरो और इंटेलिजेंस ब्यूरो जैसी केंद्रीय खुफिया एजेंसियों के मुखबिर हैं। मुखबिर को चुप कराकर उन्हें चौंकाने वाला बदला लेने में ज़्यादा समय नहीं लगा। वह एक भाड़े का सिपाही था जो महमूद कालिया और फजलू जैसे छोटे-मोटे गिरोह के सरगनाओं के लिए काम करता था। तूफानी मोहम्मद शकील शेख बाबू शेख उर्फ छोटा शकील का भी बहुत करीबी था, जब वह टेमकर पर शाम की ट्रैवल एजेंसी चलाता था।

Machine Translated by Google

स्ट्रीट, डोंगरी में एक घर में रखा गया था। यह रिश्ता लंबे समय तक नहीं चला, क्योंकि शकील 1988 में देश छोड़कर भाग गया।

1995 में तूफानी मुठभेड़ की जांच के लिए केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को आदेश दिया गया था। जांच के निष्कर्ष अभी भी रहस्य हैं।

टोपी (असाधारण चालबाज)

सईद टोपी, दाऊद इब्राहिम के भाई नूरा इब्राहिम कासकर का एक प्रमुख सहयोगी। टोपी ने एक बिल्डर को अंधेरी के एक रेस्तराँ में बुलाया, ताकि प्रोटेक्शन मनी के भुगतान का "निपटान" किया जा सके। बातचीत के कुछ मिनट बाद, टोपी के मोबाइल फोन पर एक कॉल आती है और वह अपनी सीट से उछल पड़ता है। "भाई, जी, भाई, जी" वह बार-बार दोहराता रहता है। माउथपीस पर हाथ रखते हुए, वह बिल्डर से फुसफुसाता है। "दूसरी तरफ दाऊद है।" वह बातचीत जारी रखता है, "भाई, ग़ैजेसे आदमी हैं"। वह मेरा आदमी है। बस उसे कुछ घंटे दे दो," वह विनती करने का नाटक करता है। टोपी फोन काट देता है और कहता है, "उसे समझाना बहुत मुश्किल है। वह तुम्हें मारना चाहता है, लेकिन मैंने कुछ और समय मांगा है, जल्दी करो।" भयभीत बिल्डर, अपनी ओर से, इस बात से अनजान है कि "भाई" टोपी के सहयोगियों में से एक है, जो सड़क के उस पार एक टेलीफोन बूथ से कॉल कर रहा है। वह धमकी के आगे झुक जाता है और कुछ लाख रुपए लेकर भाग जाता है। अंडरवर्ल्ड की भाषा में धोखेबाज को टोपी भी कहा जाता है। सईद के मामले में यह उपनाम उसके लिए बिल्कुल सही था क्योंकि वह एक बेहतरीन धोखेबाज था।

Machine Translated by Google

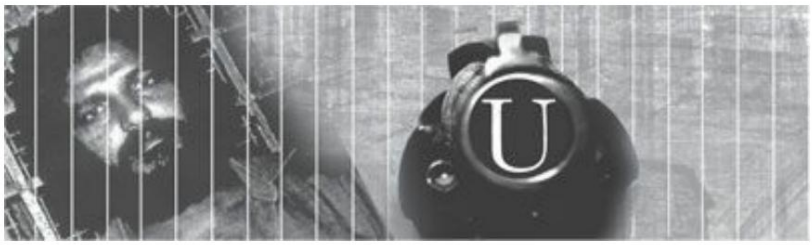

अंदिर (टैक्सी)

'काम होने के बाद नीचे से निकल जद' (टैक्सी में अपराध स्थल से भागना)।

इस शब्द का इस्तेमाल सुरेश मांचेकर के दूसरे नंबर के सिपाही संतोष नाइक उर्फ महाराज ने फ्रंटलाइन शूटर किसन शिंदे उर्फ मैनेजर के साथ साजिश रचते समय किया था। उंदिर (मराठी में चूहा) का मतलब असल में टैक्सी होता है।

साजिश के विवरण को घड़ी की सुई की तरह सटीकता से देखा गया। 22 मार्च, 2002 को परेल में बिल्डर महेंद्र खानविलकर को उनके प्रथम तल स्थित कार्यालय में गोली मारने के बाद शूटर टैक्सी में भाग गए।

ऊपर से फ़ोन आया था

इसका मतलब यह है कि दाऊद इब्राहिम की तरफ से फोन आया था। यह वाक्य, ऊपर से फोन, आमतौर पर दाऊद के सहयोगी दक्षिण मुंबई के डोंगरी और बोरी मोहल्ला में अपने गढ़ों में इस्तेमाल करते हैं।

यू टर्न

एक गैंगस्टर तब यू-टर्न ले लेता है जब वह अपने स्थान पर वापस लौटता है या एक ब्रेक के बाद पुनः गिरोह में शामिल हो जाता है।

साइमन थॉमस मैनुअल उर्फ सिकंदर उर्फ शानू सांप नहीं बना-

Machine Translated by Google

रातों-रात एक क्रूर अपराधी बन गया। एक छोटे-मोटे डाकू से छोटा शकील गिरोह का शूटर बनने में उसे लगभग 15 साल लग गए।

माफिया डॉन राजन से अपने गिरोह में शामिल होने के लिए संकेत मिलने से पहले साइमन पर डकैती, जबरन वसूली और लूट के 34 से अधिक मामलों में नाम दर्ज था।

हालांकि, यह व्यवस्था काम नहीं आई और साइमन ने जल्द ही प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम के प्रति निष्ठा बदल ली। साइमन को 1994 में गिरफ्तार कर ठाणे जेल में रखा गया। जेल में रहने के बाद, साइमन छोटा शकील के पास वापस चला गया। छोटा शकील के प्रमुख सहयोगी इस्माइल मालबारी के 1997 में विक्रोली में एक अदालत के बाहर गोलीबारी में मारे जाने के बाद वह दूसरे नंबर का कमांडर बन गया। उसने जल्द ही एक नए उपनाम सिकंदर के तहत काम करना शुरू कर दिया और कम से कम 15 हत्याओं में शामिल रहा। उत्तर पश्चिम क्षेत्र से जुड़े एक विशेष दस्ते ने 1998 में उसके पास से 13 हैंडगन बरामद कीं।

कर्नाटक के मैंगलोर के पास करकला गांव के इस गैंगस्टर ने छोटा शकील के साथ फिर से तलवारें भांजी, जब वह 25 लाख रुपये और हथियारों का एक बड़ा जखीरा लेकर गायब हो गया। वह फिर से सामने आया और प्रतिद्वंद्वी गैंगस्टर छोटा राजन से मुकाबला करने के लिए शकील से हाथ मिला लिया। उसने पश्चिमी उपनगरों में गोरेगांव और बोरिवली के बीच आतंक फैलाया।

अपराध शाखा द्वारा उसकी तलाश के दौरान 22 अप्रैल 2000 को सहायक पुलिस निरीक्षक प्रदीप शर्मा, अरुण बोरुडे और दया नायक की टीम ने बोरिवली में एक मुठभेड़ में साइमन को मार गिराया।

उसकी जिंदगी कुछ लंबी हो गई

विस्तार)

एनकाउंटर स्पेशलिस्ट विजय सालस्कर उन अग्रदूतों में से एक थे, जिन्होंने दगड़ी चॉल से जुड़े लैंडलाइन और मोबाइल फोन पर नजर रखी थी, और गैंगस्टरों और उनके सहयोगियों के बीच बातचीत सुन रहे थे।

उसका विशाल हैंडसेट हर कुछ मिनट पर बजता रहता था, लेकिन उसके चेहरे पर कोई भावना नहीं थी।

सालस्कर के आदमियों ने दगडी चॉलों में तलाशी ली - यह शिकारियों द्वारा अपने शिकार का पता लगाने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीति थी, जिसमें अक्सर शिकारी कुत्तों की मदद ली जाती थी।

Machine Translated by Google

सालस्कर, सादे कपड़ों में, बिना समय बर्बाद किए, पुलिस उपायुक्त परमबीर सिंह के कार्यालय में पहुंचे और कहा, "सर, हमने सदा पावले उर्फ मामा को दगड़ी चाल के अंदर देखा। वह भागने में सफल रहा।"

सिंह: "उसकी जिंदगी कुछ लंबी हो गई है । कम से कम, हम उसे उसकी मांद से बाहर निकालने में कामयाब रहे। मुझे नहीं लगता कि उसे पकड़ने में ज्यादा समय लगेगा।"

इस बीच, सालस्कर का मोबाइल फोन लगातार बजता रहता है। जिन लाइनों पर ध्यान दिया जा रहा है, उनमें से एक लाइन पावले के छोटे भाई आनंद की है, जो सेंट्रल रेलवे में टिकट कलेक्टर है। वह विद्याविहार रेलवे स्टेशन के पास सरकारी क्वार्टर में रहता था।

सालस्कर हरकत में आ गया। "यह पावले है। वे कल शिरडी जाने की योजना बना रहे हैं। चलो तैयार हो जाओ।"

डिप्टी अविनाश सावंत, हेमंत देसाई, सतीश मायेकर, सचिन कदम और कुछ कांस्टेबल एक टैक्सी और एक नीली मारुति वैन में सवार होकर घाटकोपर में विद्याविहार को मुख्य एमजी रोड से जोड़ने वाले एक किलोमीटर के मार्ग पर आगे बढ़े।

26 सितंबर 1997 को दोपहर करीब 1.30 बजे पावले, उनके शीर्ष सहयोगी विजय टंडेल और चार अन्य लोग एक पुरानी फिएट कार में सवार हुए। जैसे ही कार रेलवे कॉलोनी से बाहर निकली, मुखबिर ने अलार्म बजा दिया।

सालस्कर अपनी मारुति 1000 से नीचे उतरे। उन्होंने चिल्लाते हुए कहा, "उसके हथियार निकाले और उसे कार से बाहर खींच लिया।"

लेकिन पावले और टंडेल को आसानी से मार गिराया गया। कुछ ही सेकंड बाद दोनों की मौत हो गई।

उस्तारा (रेजर)

1970 के दशक में उस्तारा अंडरवर्ल्ड के पसंदीदा हथियारों में से एक था। हालांकि इसे अपने पास रखने पर गंभीर सज़ा नहीं मिलती, लेकिन कुशल हाथों में यह जानलेवा भी हो सकता है।

Machine Translated by Google

मोहम्मद हुसैन जाफ़र शेख़ ने अपने एक प्रतिद्वंद्वी को गर्दन से लेकर कूल्हों तक उस्तरा से घायल कर दिया था, जिसके बाद उसे उस्तारा नाम दिया गया था। सरकारी अस्पताल के डॉक्टर को आश्चर्य हुआ कि उसका मरीज़ सड़क पर हुई लड़ाई में घायल हो गया। उन्होंने कथित तौर पर मरीज़ से कहा कि केवल एक सर्जन ही इतनी सटीकता से चीरा लगा सकता है। हुसैन उस्तारा ने जल्द ही मुंबई के अंडरवर्ल्ड के उच्च वर्ग के बीच पहचान बना ली।

उस्तारा मुंबई के उन चंद गैंगस्टरों में से एक था जिसने दाऊद इब्राहिम को दक्षिण मुंबई में उसके ही इलाके में चुनौती देने की हिम्मत की थी। संयुक्त पुलिस आयुक्त राकेश मारिया कहते हैं कि उसने शफी तूफानी और फारूक बटाटावाला के साथ मिलकर एक खतरनाक गठबंधन बनाया था।

यहां तक कि छोटा राजन और बबलू श्रीवास्तव जैसे गैंगस्टर भी दाऊद इब्राहिम से अपना हिसाब बराबर करने के लिए उसके साथ जुड़ गए। वह पाइधोनी में अपने किलेबंद आवास से काम करते हुए कुछ केंद्रीय खुफिया एजेंसियों का भी पसंदीदा बन गया।

उस्तारा को 11 सितम्बर 1998 को दाऊद इब्राहिम के गुर्गे मोहम्मद कंजरी ने अग्रीपाड़ा के निकट गोली मार दी थी।

Machine Translated by Google

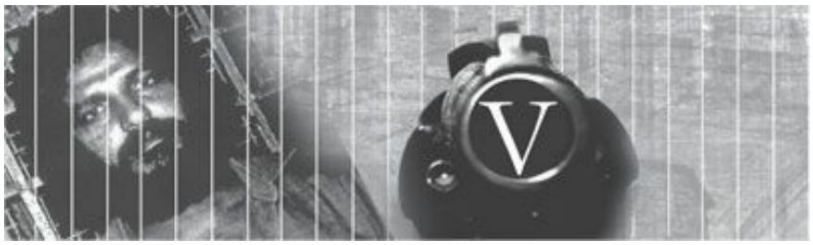

वामन सलगांवकर

वामन सलगांवकर, जो मुंबई के मध्य उपनगरों में एक डॉन के रूप में काम करता था, ने अपना करियर एक डाकू के रूप में शुरू किया था। सलगांवकर, अपने समकालीन सुहास भटकर उर्फ पोट्या की तरह, बाद में एक गिरोह का नेता बन गया, लेकिन जल्द ही उसने प्रभादेवी में खेड़ गुल्ली के रहने वाले गुंडे और उसके पड़ोसी बाबा घुडे के साथ हाथापाई कर ली।

जहां सालगांवकर और घुडे ने खेद गुल्ली साझा की, वहीं पोट्या यादव पाटिल वाडी पर हावी था।

ये गिरोह मुख्यतः डकैती और मटका अड्डों को लूटने में संलिप्त थे।
1980 के दशक के प्रारंभ में क्लबों और अवैध शराब भट्टियों से प्राप्त संरक्षण राशि आय के अन्य स्रोत थे।

उस समय के आसपास, अमर नाइक, मान्या सुर्वे, तुकाराम टंडेल और दिलीप प्रभु के नेतृत्व वाले गिरोह दादर और प्रभादेवी में हफ़्ता बांटने को लेकर भिड़ गए थे। गिरोहों की संख्या बढ़ रही थी और इलाके सिकुड़ रहे थे।

जैसा कि अपेक्षित था, वहां अक्सर झड़पें होती रहीं।

वेंकटेश कामथ

पुलिस इंस्पेक्टर प्रफुल्ल जोशी याद करते हैं कि जेल में रहने के दौरान वेंकटेश कामथ अमर नाइक गिरोह के सदस्यों के साथ घनिष्ठ संबंध में आ गया था।
यहीं पर उनका संपर्क अंडरवर्ल्ड से हुआ।

Machine Translated by Google

1986 में रिहा होने के बाद उसने अपना पक्ष बदल लिया और सुरेश मंचेकर गिरोह से हाथ मिला लिया। 2003 की शुरुआत में पुणे पुलिस द्वारा मुठभेड़ में मारे जाने से पहले वह ठाणे-कल्याण-लोनावला क्षेत्र में बहुत सक्रिय था।

इससे पहले, कामथ को अपनी भाभी की हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, क्योंकि उसने उसे जेब खर्च के तौर पर 200 रुपये देने से मना कर दिया था।

वरदराजन मुदलियार

गॉडफादर वर्धाभाई के पास गैंगस्टरों और पुलिस से निपटने का अनोखा हुनर था। वह शायद अंडरवर्ल्ड के उन पहले लोगों में से एक थे जिन्होंने महसूस किया कि पुलिस और सरकार के समर्थन के बिना कोई साम्राज्य जीवित नहीं रह सकता।

वर्धाभाई की पहचान तब हुई जब उन्होंने डॉक में प्रवेश किया और कस्टम अधिकारियों, बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट कर्मियों, पुलिसकर्मियों और बीमा एजेंटों के साथ मिलकर तस्करी का गिरोह बनाया। शुरुआती जांच से पता चला कि 1982 में तस्करी से उनकी सालाना आय करीब 40 करोड़ रुपये थी।

पुलिस बल के कम से कम 20 प्रतिशत लोग कभी न कभी वर्धाभाई के साथ घुलमिल चुके थे। 1980 के दशक की शुरुआत में मुंबई के 50 से ज़्यादा खूंखार गैंगस्टर उनके समर्थक थे।

बबिया खोपड़े, राजन नायर उर्फ बड़ा राजन, रामा नाइक और बाबू रेशिम उसके दरबार में नियमित रूप से आते थे । वह शहर के लगभग सभी खूंखार अपराधियों को कानूनी और वित्तीय मदद मुहैया कराता था। उसने धारावी और सायन-कोलीवाड़ा के आसपास के झुग्गी-झोपड़ियों के मालिकों से दो करोड़ रुपये से ज़्यादा की वसूली की। उसके पास बार, वेश्यावृत्ति के रैकेट और होटल जैसे दूसरे धंधे भी थे।

समस्या तब शुरू हुई जब तत्कालीन पुलिस आयुक्त जेएफ रेबेरो ने पुलिस उपायुक्त वाईसी पवार को उच्च तनाव वाले धारावी क्षेत्र में तैनात किया।

अधिकारियों को डॉन के नेटवर्क को तोड़ने और 1983 के आसपास सायन-कोलीवाड़ा में उसके मजबूत ठिकानों पर छापा मारने में लगभग दो साल लग गए।

Machine Translated by Google

पुलिस ने 1986 में एक डकैती के मामले में वर्धाभाई को मुख्य आरोपी बनाया था।
वह अपने पैतृक शहर भाग गया और 5 जनवरी 1987 को वापस आकर अधिकारियों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।

वर्धाभाई को जमानत पर रिहा कर दिया गया और उन्होंने जल्द ही अपने नेटवर्क पर मजबूत पकड़ बना ली। उन्होंने मुंबई में तमिल प्रवासियों के कल्याण के लिए एक सामाजिक संगठन बॉम्बे तमिलर पेरावई की भी स्थापना की।

पुलिस के साथ अगला टकराव माटुंगा रेलवे स्टेशन के निकट उनके भव्य गणपति उत्सव समारोह के कारण हुआ।

वर्धाभाई के पूर्व सहयोगियों को संदेह है कि पठान गिरोहों ने उनके पतन की साजिश रची होगी। उन्होंने डॉक में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया था, जो कभी उनका गढ़ हुआ करता था।

2 जनवरी 1990 को चेन्नई में वर्धाभाई की मृत्यु हो गई। धारावी और माटुंगा में अंडरवर्ल्ड की गतिविधियाँ धीरे-धीरे निचले स्तर पर आ गईं।

विनोद मटकर

मतकर गैंगस्टर छोटा राजन के घातक हत्यारों में से एक था। मुंबई और नेपाल में 20 से ज़्यादा हत्याओं में उसका नाम शामिल था, जिसमें नेपाली सांसद मिर्ज़ा दिलशाद बेग की हत्या भी शामिल थी।

उसने माटुंगा में एक छोटे-मोटे डाकू के रूप में शुरुआत की और धीरे-धीरे गिरोह के शीर्ष पर पहुंचता गया और राजन का सबसे भरोसेमंद गुर्गा बन गया। मुंबई में बम धमाकों के आरोपियों को निशाना बनाते हुए मटकर ने बालू डोकरे और रोहित वर्मा के साथ मिलकर एक खतरनाक गिरोह बनाया।

विस्फोट के आरोपी, दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी मोहम्मद सलीम कासिम अली उर्फ सलीम पासपोर्ट की हत्या के बाद उसका नाम मुंबई के दस सर्वाधिक वांछित बदमाशों में शामिल किया गया था।

मटकर मध्य मुंबई के एमडी कॉलेज का पूर्व छात्र था, जो परेल में है, जहाँ वह रहता था। 27 जनवरी, 1999 को खार में सब-इंस्पेक्टर दया नायक और इंस्पेक्टर प्रदीप शर्मा ने उसे गोली मार दी थी। पूरी ट्रैकिंग तत्कालीन पुलिस उपायुक्त केएल प्रसाद ने की थी।

Machine Translated by Google

विरार भूमि (रामा नाइक की हत्या का कारण)

विरार में संपत्ति को लेकर हुए विवाद में रामा नाइक की मौत हो गई, यह वही गैंगस्टर था जिसने दाऊद इब्राहिम को उसके प्रतिद्वंद्वी पठान गिरोह को खत्म करने में मदद की थी।

स्थानीय गैंगस्टर जयेंद्र ठाकुर उर्फ भाई ठाकुर द्वारा विरार में उनकी जमीन पर कब्जा करने की धमकी दिए जाने के बाद एक बिल्डर ने रामा नाइक से संपर्क किया। रामा ने ठाकुर से विवादित जमीन खाली करने को कहा।

ठाकुर ने विवाद को सुलझाने के लिए दाऊद इब्राहिम के प्रमुख सहयोगी शरद शेट्टी से संपर्क किया। शेट्टी ने रामा से मामले में हस्तक्षेप न करने को कहा।

रामा ने शेट्टी की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह खुद को वरिष्ठ मानता था।
लेकिन जब दाऊद ने रामा को विरार ज़मीन सौदे से दूर रहने के लिए कहा तो वह थोड़ा परेशान हो गया। बाद में वह दाऊद को मनाने के लिए दुबई गया ताकि वह मामला उसके पक्ष में सुलझा ले, लेकिन उसे ज़्यादा सफलता नहीं मिली।

दाऊद इस बात पर अड़ा था कि विरार की ज़मीन भाई ठाकुर को मिलनी चाहिए। मुंबई लौटने से पहले रामा ने अपने पूर्व शिष्य के साथ दुर्व्यवहार किया। कुछ हफ़्ते बाद चेंबूर में दाऊद के गुर्गों ने उसकी हत्या कर दी।

विठला विठला

(महाराष्ट्र के लोकप्रिय भगवान विट्ठल से उनके स्वर्गीय निवास को भेजा गया, जिनका नाम किसी के निधन पर लिया जाता है)।

छोटा राजन के प्रमुख निशानेबाज बालू डोकरे और बाबा बुग्गा रेड्डी, मुम्बई के अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास सहार गांव में एक मंजिला इमारत के प्रवेश द्वार पर बेफिक्र होकर इंतजार कर रहे थे।

8 मई 1998 की दोपहर उमस भरी थी। निम्न-मध्यम वर्ग के इलाके में रहने वाले लोगों को शायद ही पता था कि दो अन्य शूटर सीढ़ियों से ऊपर चढ़े हैं और अपने लक्ष्य के करीब पहुंच रहे हैं। अपनी निजी सुरक्षा के बारे में लापरवाह, क्लियरिंग एजेंट राजू पिल्लई अपनी फाइलों को देखने में व्यस्त थे।

Machine Translated by Google

राजन के शूटरों ने उसका पीछा किया था और कुछ ही सेकंड पहले बंटी पांडे ने अपनी शर्ट के नीचे रखी .38 कैलिबर की स्मिथ एंड वेसन राइफल निकाली और नजदीक से गोलियां चलानी शुरू कर दीं।

छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की ओर जाने वाली सड़क पर व्यस्त यातायात के कारण गोलियों की आवाज़ दब गई। पड़ोसियों को सचेत होने में कुछ समय लगा।

कुछ ही मिनटों बाद पांडे और विनोद मटकर सीढ़ियों से नीचे उतरे और डोकरे और रेड्डी के साथ आ गए। चारों खतरनाक लोग तेजी से एक मारुति 800 कार की ओर बढ़े जो व्यस्त सड़क पर फिसल गई।

'विठला. विठला' (मिशन पूरा होने के लिए एक कोड शब्द) डोकरे ने अपने गुरु राजन से फुसफुसाते हुए कहा।

यह एक सटीक हमला था। सटीक सूचना के बाद घंटों तक जांच-पड़ताल की गई और फिर मौत के दस्ते ने हमला कर दिया, जो मुंबई के अंडरवर्ल्ड की पहचान है।

Machine Translated by Google

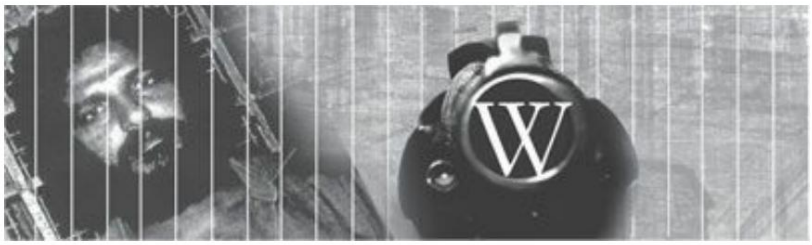

डब्ल्यू (हथियार)

'डब्लू मत रख अपने पास ' यह संदेश गोलीबारी या हत्या के तुरंत बाद दिया जाता है।

वाल्कोट गैंग

वाल्कोट गिरोह 1965 से 1968 के बीच वर्ली की मलिन बस्तियों से संचालित होता था।
इसके सदस्य ज़मीन पर सामान उतारने में विशेषज्ञ थे और कभी-कभी अपने प्रतिद्वंद्वियों का सामान भी लूट लेते थे।

इस गिरोह का नेतृत्व जग्या-राग्या की जोड़ी कर रही थी। पूर्व पुलिस कांस्टेबल केशव भोसले की भी इस गिरोह में अहम भूमिका थी।

वज़न (वजन)

अंडरवर्ल्ड की भाषा में वज़ान का मतलब हथियार भी होता है। एक हैंडगन का वजन आम तौर पर पाँच किलोग्राम के आसपास होता है और इसे भारी माना जाता है। शब्द वज़ान भारीपन को दर्शाता है।

सफ़ेद

अंडरवर्ल्ड में हेरोइन को 'व्हाइट' कहा जाता है। मुंबई में इसे सुरक्षित माना जाता है

Machine Translated by Google

पाकिस्तान और अफगानिस्तान से आने वाले माल के लिए पारगमन बिंदु।

सफ़ेद-और-सफ़ेद

दो दशक से ज़्यादा समय तक सफ़ेद और सफ़ेद रंग 'दादा' का ड्रेस कोड था, जब तक कि 1980 के मध्य में भाई संस्कृति ने अपना दबदबा नहीं बना लिया। लगभग हर दादा या गैंगस्टर सफ़ेद शर्ट और सफ़ेद पतलून पहनता था। यहाँ तक कि चप्पल या महंगे जूते भी ड्रेस से मेल खाते थे।

उस समय बाज़ार में ब्रांड्स का आगमन नहीं हुआ था और कपड़े प्रतिष्ठित दर्जियों द्वारा सिले जाते थे।

दादा के युग के साथ यह फैशन फीका पड़ गया , खासकर तब जब दाऊद इब्राहिम और छोटा राजन के नेतृत्व में नए किस्म के अपराधी शहर के अपराध परिदृश्य पर हावी हो गए।

Machine Translated by Google

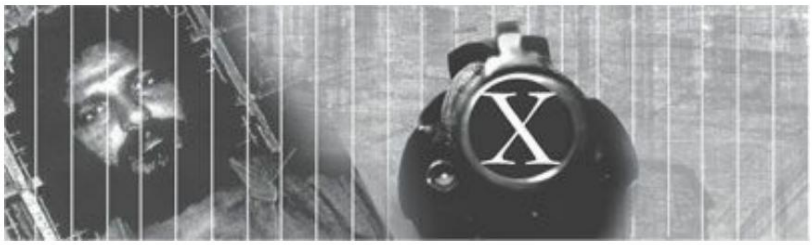

एक्स्ट्रा

एक्स्ट्रा वे लोग होते हैं जो हत्या में मुख्य शूटर की सहायता करते हैं। वे निगरानी रखने से लेकर गोलीबारी में इस्तेमाल किए गए हथियार के साथ भागने तक के कई काम करते हैं। एक एक्स्ट्रा भागने वाली कार के ड्राइवर के रूप में भी काम कर सकता है।

येडा (मद गोपाल)

येडा गोपाल संभवतः मुंबई के अंडरवर्ल्ड के सबसे खूंखार गैंगस्टरों में से एक था।

गोपाल को उसके सनकी व्यवहार के कारण 'येदा' (पागल) उपनाम मिला था । उसने पैसे इकट्ठा करने के अलावा कभी कोई सही काम नहीं किया। मैंगलोर के पास अपने गृहनगर से पलायन करने के बाद, गोपाल ने ग्रांट रोड में अलंकार सिनेमा के पास पूर्णिमा रेस्तरां में वेटर के रूप में काम करना शुरू कर दिया, इससे पहले कि वह व्यापारी से फाइनेंसर बने महेश ढोलकिया के साथ हाथ मिलाता। दाऊद इब्राहिम और उसका बड़ा भाई शब्बीर बांद्रा के पास लिंकिंग रोड पर सीज़र पैलेस में नियमित रूप से आते थे, जिसका मालिक ढोलकिया था।

होटल व्यवसायी लॉबी ने गोपाल की गैंगस्टर के रूप में क्षमता का उपयोग करने में समय बर्बाद नहीं किया।
उन्होंने अपने देनदारों से पैसा वसूलने के लिए उसे ठेके देने की पेशकश शुरू कर दी।

इससे पहले कि वह पैसे का इस्तेमाल कर पाता, इंस्पेक्टर प्रदीप सूर्यवंशी के नेतृत्व में एक विशेष दस्ते ने 18 अगस्त 1991 को बोरीवली पूर्व में उसे गोली मार दी।

Machine Translated by Google

ये अच्छा नहीं हुआ

दाऊद-राजन युद्ध की शुरुआत.

1983 के आसपास, जब मुंबई पुलिस ने अंडरवर्ल्ड पर शिकंजा कसा, तो पुलिसकर्मी इब्राहिम कासकर के बेटे को मुंबई से भागने पर मजबूर होना पड़ा। शहर में कई गंभीर अपराधों में नाम आने के बाद छोटा राजन को दाऊद का पीछा करना पड़ा।

दाऊद ने उदारतापूर्वक राजन को दुबई में खुली छूट दे दी और उसे मुंबई के अंडरवर्ल्ड ऑपरेशन की देखरेख का जिम्मा सौंप दिया। यह एक ऐसा कदम था जो डी-कंपनी के अन्य सदस्यों को पसंद नहीं आया।

राजन के गिरोह में लगातार ऊपर उठने से उसके सहयोगियों जैसे सुनील सावंत, शरद शेट्टी, छोटा शकील और दाऊद के कुछ पारिवारिक सदस्यों की ईर्ष्या और क्रोध को बढ़ावा मिला।

मामला तब चरम पर पहुंच गया जब राजन की कोर टीम ने 23 अप्रैल, 1992 को भादुप में शिवसेना पार्षद खिम बहादुर थापा की गोली मारकर हत्या कर दी। दाऊद के भाई नूरा और अनीस ने राजन के खिलाफ वोट दिया। डॉन खुद अपने लेफ्टिनेंट के इस अजीबोगरीब कदम से हैरान था। खून के रिश्तों की जीत हुई क्योंकि डॉन ने अपने भाई-बहनों को गिरोह के दिन-प्रतिदिन के कामों में दखल देने की अनुमति दी।

गिरोह के कुछ सदस्यों ने राजन को दाऊद के बारे में बुरा-भला कहने के लिए उकसाने की भी कोशिश की। हालांकि, लेफ्टिनेंट या तो बहुत चालाक था या फिर वफ़ादार, इसलिए उसने पलटकर जवाब दिया, 'दाऊद मेरा भाई है!' जब यह चाल विफल हो गई, तो उसे मार डालने और उसके शव को समुद्र में फेंकने की एक और साजिश रची गई।

दबाव में आकर राजन अपने गुरु को बताए बिना दुबई भाग गया।

एक पूर्व सहयोगी याद करते हैं, "तीन दिनों तक दाऊद को पता ही नहीं चला कि उसका खास सहयोगी देश छोड़कर भाग गया है। संदेह पैदा न हो, इसलिए उसके अपार्टमेंट की लाइटें और एयर कंडीशनर चालू रखे गए थे।"

इस चाल ने दाऊद को कुछ समय के लिए धोखा दिया होगा, लेकिन इसके दीर्घकालिक परिणाम गंभीर थे। कहा जाता है कि उसने अशुभ स्वर में कहा था, "यह अच्छा नहीं हुआ।"

Machine Translated by Google

संयोगवश, राजन की फरारी मुंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के समय ही हुई, जिससे उसे डी-कंपनी से अलग होने की घोषणा करने का अच्छा कारण मिल गया।

जल्द ही गैंगवार अपने घातक आयाम पर पहुंच गया और दोनों गिरोह मुंबई की सड़कों पर एक-दूसरे का खून पीने लगे।

यंग कंपनी ('डी कंपनी बन गई)

पठानों और दाऊद और उसकी 'यंग कंपनी' (जिसे आज डी कंपनी के नाम से जाना जाता है) के बीच अंतर-गैंग प्रतिद्वंद्विता भयंकर थी। यंग कंपनी डोंगरी और आस-पास के इलाकों में सामाजिक अन्याय से लड़ने के इच्छुक स्थानीय युवाओं का एक संगठन था।

12 फरवरी 1982 को दाऊद का बड़ा भाई शब्बीर इसी दुश्मनी का शिकार हुआ। इसके बाद दाऊद ने स्थानीय दबंग बाउजी साहब और रामा नाइक के साथ गठबंधन बनाया। नाइक और उसके गिरोह के सदस्यों का इस्तेमाल करके उसने शहर में पठानों को खत्म करने का काम शुरू किया। व्यवस्थित तरीके से एक के बाद एक पठानों का सफाया किया गया।

यूसुफ पटेल

अब्दुल मजीद अब्दुल्ला पटेल के नाम से जन्मे मेमन मुस्लिम पहली बार 1963 के आसपास अपने साथी हाजी मस्तान के साथ कपड़ा और चांदी की तस्करी में शामिल हुए थे। वित्तीय विवाद के बाद उनके बीच मतभेद होने तक सब कुछ ठीक चल रहा था।

1977 में जनता सरकार ने तस्करों को माफ़ी देने की पेशकश की। पटेल के भी इस मुहिम में शामिल होने में ज़्यादा समय नहीं लगा। जबकि कई लोग उनके संदिग्ध अतीत को भूल चुके थे, पटेल ने चुपचाप अपनी खुद की निर्माण कंपनी शुरू की और पाइधोनी में एक पुरानी इमारत से काम कर रहे थे, अतिरिक्त एफएसआई हासिल कर रहे थे जिससे उन्हें जल्द ही कई करोड़ की ज़मीन के सौदे मिल गए। नगर निगम को यह पता लगाने में लगभग 16 साल लग गए कि पटेल ने ज़मीन के रिकॉर्ड के साथ छेड़छाड़ की थी और दक्षिण मुंबई की कुछ इमारतों में अवैध रूप से एफएसआई का इस्तेमाल किया था।

अगले तीन वर्षों में पटेल को भूमि अभिलेखों में भारी हेराफेरी से संबंधित लगभग 50 अन्य मामलों में शामिल पाया गया, जिनमें से अधिकांश में मिलीभगत थी।

Machine Translated by Google

बीएमसी अधिकारियों के साथ बैठक हुई।

योगेश पराडकर (परद्या)

परद्या ने अपराध की दुनिया में कदम इसलिए रखा था ताकि वह उत्तरी मुंबई के उपनगर कंजूर मार्ग की झुग्गी-झोपड़ी मालिक नाजनी शाह पर कड़ी नजर रख सके।

पारद्या ने अपने सहयोगी दिलीप भुवा के साथ मिलकर अपने गुरु अशोक जोशी के कहने पर बाजार में शाह की हत्या कर दी।

नानजी शाह के छोटे भाई हंसराज ने भी इसी तरह की हरकत की। इसके बाद परद्या ने पांडुरंग माडवी के साथ मिलकर काम किया और उन्हें अक्सर परद्या-पांड्या के नाम से जाना जाता था। बाद में दोनों ने 1994 में अंधेरी में शिवसेना विधायक रमेश मोरे की गोली मारकर हत्या कर दी।

परद्या बाद में छोटा राजन गिरोह में शामिल हो गया। 2 मार्च 2000 को पुलिस इंस्पेक्टर प्रकाश जॉर्ज ने उसे मुठभेड़ में मार गिराया।

यूसुफ़ बचकाना

यूसुफ़ बचकाना उर्फ़ यूसुफ़ सुलेमान कादरी, छोटा राजन गिरोह का सदस्य है। उसने अपने पूर्व गुरु राजू बचकाना के संरक्षण में फ़ॉकलैंड रोड के रेड-लाइट एरिया के आसपास चेन स्नैचिंग करना शुरू किया, जहाँ वह 1980 के दशक के मध्य में रहता था।

अपने गुरु से ही उन्हें 'बचकाना' उपनाम मिला था। वे अपने करीबी लोगों के बीच नरेंद्र कुमार शर्मा के नाम से भी जाने जाते थे।

जेल में रहने के दौरान उसकी मुलाकात हाजी मुख्तार से हुई। मुख्तार ने यूसुफ को परवेज सिद्दीकी से मिलवाया, जिसने उसे छोटा राजन के अहम सहयोगी रोहित वर्मा से मिलवाया।

उसके बाद से यूसुफ़ के लिए यह एक बड़ा अपराध बन गया, जिसकी शुरुआत कांदिवली में मेहदी बार के मालिक लाला पर गोली चलाने से हुई। इसके बाद दाऊद के मोहन कोटियन और मनीष लाला सहित कई हत्याएँ हुईं।

Machine Translated by Google

वित्तदाता.

शून्य/शून्य डायल

जीरो डायल का मतलब अक्सर दाऊद इब्राहिम के गढ़ डोंगरी, दक्षिण मुंबई और आस-पास के इलाकों में मुखबिर से होता है। इसका असल मतलब है दूर रहो वरना मुखबिर या 'खबरी' पुलिस को खबर दे देगा।

जियाउद्दीन भुकरी हत्या

अंडरवर्ल्ड के गलियारों में यह धारणा घर कर गई थी कि विधान सभा सदस्य जियाउद्दीन भुकरी दाऊद इब्राहिम के करीबी थे। 1993 में बायकुला कंपनी के सदस्य विजय नरसाले ने उनकी गोली मारकर हत्या कर दी थी।

झिंगाडा (लिटिल मास्टर)

बैंकॉक में छोटा राजन पर हमला करने वाले छह लोगों के मौत के दस्ते का नेतृत्व सैयद मुद्दसिर हुसैन ने किया था। राजन हमले में बच गया, लेकिन उसका खास साथी रोहित वर्मा मारा गया। छोटे कद के हुसैन उर्फ मुन्ना झिंगाडा (अंडरवर्ल्ड में झिंगाडा का मतलब झींगा होता है) का अपराध जगत में प्रवेश 1990 में हुआ, जब उसने जोगेश्वरी (ई) के बाहर इस्माइल यूसुफ कॉलेज के बाहर एक छेड़छाड़ की घटना पर एक साथी छात्र की चाकू घोंपकर हत्या कर दी।

हुसैन के क्रूर स्वभाव ने जल्द ही माफिया सरगना छोटा शकील के करीबी सहयोगी इस्माइल मालबारी की नज़र में आ गया। कॉलेज में भी हुसैन भाई बनना चाहता था और अक्सर उसे हेलिकॉप्टर के साथ देखा जाता था। जोगेश्वरी पूर्व का निवासी झिंगाडा आखिरकार शूटर के पद पर पहुंच गया, जब उसे बांद्रा के पास शकील के कहने पर प्रकाश नाइक उर्फ गोट्या की हत्या का काम सौंपा गया।

मालबारी की सूझबूझ सही थी। एक साल से भी कम समय में 'लिटिल मास्टर' ने सात हत्याएं करके अपनी योग्यता साबित कर दी थी। अंडरवर्ल्ड के सूत्रों का कहना है, "उसका कद उसकी ताकत को झुठला रहा था।"

Machine Translated by Google

झिंगाडा की पहली बड़ी सफलता 4 अक्टूबर 1997 को मिली, जब उसने गैंगस्टर अरुण गवली की अखिल भारतीय सेना के महासचिव जितेंद्र धबोलकर की गोली मारकर हत्या कर दी। उसी साल छह अन्य लोगों ने भी हत्याएं कीं। झिंगाडा की हत्याओं का सिलसिला आखिरकार तब रुका जब उसे 1997 में सांताक्रूज में एक छोटे से हथियार के साथ पकड़ा गया। 16 सितंबर 2000 को झिंगाडा और उसके गुर्गों ने थाईलैंड के बैंकॉक में छोटा राजन और रोहित वर्मा पर उनके अपार्टमेंट में हमला किया।

झिंगाडा अभी भी डी-कंपनी के प्रमुख अनुबंध हत्यारों में से एक बना हुआ है।

Machine Translated by Google

To quote an old cliché, Mumbai spawns a dream a minute. On the surface and off it. In the twisted lanes and mohallas of Pydhonie and Dongri, those dreams have a language and character of their own. Dark, ruthless and wildly exciting.

As a journalist on the crime beat, the author has spent long hours talking to those in uniform, those in the underworld and those in the grey zone – people who work as police informers.

Much of what he has seen, heard and observed in over a decade of covering crime has found its way into print. But there's a lot that's spoken of in hushed tones, or buried in underworld lore.

The underworld speaks its own language, and words are invented on the spur of the moment. A shooter is referred to as an "artist", an informer is simply "zero dial", Dubai is "Delhi", while arrest is "get admitted". Most of these are aimed at sending the police or adversaries on a wild goose chase. It's a world that thrives on the spirit of enterprise, actively courts power and danger, and has conquered fear. The rules are straight and the ethics sacrosanct.

The principles of 'dhanda' apply equally here – risk, profit and competition are at the very core. An informer will think nothing of selling precious information on a rival if it can earn him extra bucks or goodwill from the police.

In these pages, the author shares some of the stories that take you through this universe – vibrant, dynamic and, yes, dangerous.

About the Author

J. Dey is a Mumbai-based journalist with over a decade's experience in crime reporting and investigation. He has worked with *The Indian Express, Channel 7, Hindustan Times* and is currently Editor–Investigations with *MiD-DAY*.

Elevate Your Life. Transform Your World.

JAICO BOOKS

www.jaicobooks.com Reference/Current Affairs

ISBN-13: 978-81-7992-850-9

₹ 275